प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ मे बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एव विशेषत राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिए की गयी थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एव भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य सस्था को प्रारभ से ही मिलता रहा है।

सस्था द्वारा विगत १६ वर्षो से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलायी जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख है—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सबध मे सस्था विभिन्न स्रोतो से दो लाख से अधिक शब्दो का सकलन कर चुकी है। इसका सपादन आधुनिक कोशो के ढग पर प्रारभ किया जा चुका है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सपादित हो चुके हैं। कोश में शब्दो के अर्थ के अतिरिक्त व्याकरण, व्युत्पत्ति और उदाहरण आदि महत्त्वपूर्ण सामग्री दी गयी है। यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिए प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य निकट भविष्य मे उपलब्ध हो जायगा और इसका प्रकाशन प्रारभ किया जा सकेगा।

२ विशाल राजस्थानी-मुहावरा-कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है। अनुमानत पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग

मे लाये जाते हैं। लगभग दस हजार मुहावरो का अर्थ और प्रयोग के उदाहरण सहित, सपादन हो चुका है और ग्रथ को शीघ्र ही प्रकाशित करने का प्रबध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम साध्य कार्य है। यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह सस्था के लिए ही नही किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३ आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का प्रकाशन

इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है—

१ **कळायण**, ऋतु-काव्य (लेखक श्री नानूराम सस्कर्ता)

२ **आभै पटकी**, राजस्थानी भाषा का प्रथम सामाजिक उपन्यास (ले० श्री श्रीलाल जोशी)

३. **वरसगाठ**, मौलिक कहानी-सग्रह (ले० श्री मुरलीधर व्यास)।

सस्था की मुखपत्रिका 'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे राजस्थानी कविताएँ कहानियाँ और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

यह सस्था की त्रैमासिक मुखपत्रिका है जो विगत १४ वर्षो से प्रकाशित हो रही है। पत्रिका की विद्वानो ने मुक्तकठ से प्रशसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव तथा प्रेस की एव अन्य कठिनाइयो के कारण, इसका त्रैमासिक रूप से नियमित प्रकाशन सभव नही हो सका है। इसके भाग ५ का अक ३–४ **'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषाक'** बहुत ही महत्त्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका के छै भाग प्रकाशित हो चुके है, सातवे भाग के प्रथम दो अक राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठौड विषयक सचित्र और बृहत् विशेषाक के रूप मे प्रकाशित हो रहे है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्त्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है और इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिए 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यतः सग्रहणीय शोधपत्रिका है। इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्त्व, इतिहास, कला आदि विषयक लेखों के अतिरिक्त सस्था के सदस्य विद्वानो द्वारा लिखित लेखो की बृहत् सूचियाँ भी प्रकाशित की जाती है। अब तक तीन विशिष्ट सदस्यों डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा के लेखो की बृहत् सूचियाँ प्रकाशित हो चुकी है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो का अनुसधान, सपादन एव प्रकाशन

राजस्थान की साहित्य-निधि की प्राचीन, महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिए उन्हे सुसपादित एव शुद्ध रूप मे मुद्रित करवाकर उचित मूल्य मे वितरित करने की सस्था की योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्त्वपूर्ण ग्रथो का अनुसधान और प्रकाशन सस्था के सदस्यो की ओर से निरतर होता रहा है जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

(१) पृथ्वीराजरासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम सस्करण का सपादन करवाकर उसका कुछ अश 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करणो और उसके ऐतिहासिक महत्त्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए है।

(२) राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखाँ) की ७५ रचनाओ की खोज की गयी जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अक मे प्रकाशित हुई। कवि का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

(३) राजस्थान के जैन मस्कृत-साहित्य का परिचय नामक निबध राजस्थान-भारती मे प्रकाशित किया गया है।

(४) मारवाड-क्षत्र के लगभग ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्रो के सैकडो लोकगीत घूमर के लोकगीत, बाल-लोकगीत लोरियाँ और लगभग ७०० लोक-कथाएँ सगृहीत की गयी हैं। राजस्थानी कहावतो के भी दो भाग प्रकाशित किये जा चुके है। जीणमाता के गीत पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक-काव्य सर्वप्रथम राजस्थान-भारती मे प्रकाशित किये गये।

(५) बीकानेर और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर-जैन लेख-सग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

(६) जसवत-उद्योत, मुहता नैणसीरी ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रथो का सपादन एव प्रकाशन हो चुका है और हो रहा है।

(७) जोधपुर के महाराजा मानसिहजी के सचिव कविवर उदयचद भडारी की ४० रचनाओ का अनुसधान किया गया है और महाराजा मानसिहजी की काव्य-साधना के सबध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाश डाला गया है।

(८) जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि-वश-प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

(९) बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रथो का अनुसधान किया गया और 'ज्ञानसार ग्रथावली' के नाम से उनमे से कुछ का प्रकाशन किया गया है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का सग्रह प्रकाशित

९. जयन्तियां और साप्ताहिक गोष्ठियाँ

संस्था की ओर से समय-समय पर ख्यातनामा विद्वानों और साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और उनकी जयन्तियाँ मनायी जाती हैं। इस प्रकार के उत्सवों में डाक्टर तैस्सितोरी, लोकमान्य तिलक, पृथ्वीराज राठौड, मुनि समयसुंदर आदि के स्मृति-उत्सव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इन उत्सवों के साथ ही साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है इनमें महत्त्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक-विध नवीन साहित्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योग मिला है। विचार-विमर्श के लिए अन्यान्य गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता है।

(१०) बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन् डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय-ख्याति-प्राप्त विद्वानों के भाषण इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हो चुके हैं।

दो वर्ष पूर्व महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गयी थी। राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ, और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूडलोद, के भाषण इस आसन से इन वर्षों में हुए।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिए यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्य-क्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती फिर भी यदा-कदा, लडखडाते गिरते-पडते, उसने 'राजस्थान-भारती' का सपादन एवं प्रकाशन जारी

रखा और यह प्रयास किया कि बाधाओं के बावजूद भी साहित्य-सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा संदर्भ-पुस्तकालय है और न कार्य को सुचारु-रूप से संपादित करने के लिए आवश्यक कर्मचारी ही हैं परन्तु फिर भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर निश्चय ही संस्था के गौरव को बढ़ानेवाली होगी।

राजस्थानी का साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक उसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। संस्था अपनी इस लक्ष्य-पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रही है।

अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोधन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिए १५,०००) रु० की रकम राजस्थान सरकार को इस मद में प्रदान की, तथा राजस्थान सरकार ने भी उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३०,०००) रु० की सहायता राजस्थानी साहित्य के संपादन-प्रकाशन हेतु इस संस्था को वर्तमान वित्तीय वर्ष में प्रदान की है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है—

१ राजस्थानी व्याकरण— श्री नरोत्तमदास स्वामी

२ राजस्थानी गद्य का विकास (शोध-प्रबंध)— डा० शिवस्वरूप शर्मा 'अचल'

३. अचलदास खीची-री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी तथा दीनानाथ खत्री
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी-चरित्र चौपई—	,,
६. दळपत-विलास	श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल-गीत—	,,
८. पवार-वंश-दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रथावळी—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावळी—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव-पार्वतीरी वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम-चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि सग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि-कृति-कुसुमाजलि—	श्री भवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द-कृति-कुसुमाजलि—	,,
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रथावळी—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९ राजस्थानरा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर-रसरा दूहा—	,,
२१. राजस्थान के नीति-दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२ राजस्थान व्रत-कथाएं—	,,
२३. राजस्थानी प्रेम-कथाएं—	,,
२४. चदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भड्डली—	श्री अगरचन्द नाहटा तथा मुनि विनयसागर
२६ जिनहर्ष-ग्रथावळी	श्री अगरचन्द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रथो का विवरण	,,
२८ दम्पति-विनोद	,,
२९ हीयाळी, राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	
३० समयसुन्दर-रास-पचक	श्री भवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढा ग्रथावळी	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन-सग्रह (सपादक डा दशरथ शर्मा), ईसरदास-ग्रथावळी (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (सपा० गोवर्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० अगरचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा-कोश (सपा० मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है। हम आशा करते है कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता सस्था को प्राप्त हो सकेगी जिससे उपर्युक्त सपादित तथा अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिए हम भारत सरकार के शिक्षा-विकास-सचिवालय के आभारी है, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन एड की रकम मजूर की।

राजस्थान के मुख्य मत्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया का, जो सौभाग्य से शिक्षा-मत्री भी है और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिए निरतर सचेष्ट हैं, इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योग रहा है। उनके प्रति भी हम अपनी सादर कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष श्री जगन्नाथसिंह जी मेहता के भी हम आभारी है, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सपन्न करने मे समर्थ हो सके। सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोडे समय मे इतने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो का सपादन करके सस्था के प्रकाशन-कार्य मे जितने सराहनीय सहयोग दिया है उन सपादको एव लेखको के भी हम अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप-सस्कृत-लाइब्रेरी बीकानेर, अभय-जैन-ग्रन्थालय बीकानेर, पूर्णचन्द्र-नाहर-सग्रहालय कलकत्ता, जैन-भवन-सग्रह कलकत्ता, महावीर-तीर्थक्षेत्र-अनुसधान समिति जयपुर, ओरियटल-इन्स्टीट्यूट बडोदा, भाडारकर रिसर्च-इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ-वृहद्-ज्ञान-भडार बीकानेर, मोतीचद-खजाची-ग्रथालय बीकानेर, खरतर-आचार्य-ज्ञानभण्डार बीकानेर, एशियाटिक-सोसाइटी बबई, आत्माराम-जैन-ज्ञानभडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिकविजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, प० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि सस्थाओ और व्यक्तियो से आवश्यक हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त होने से ही उपर्युक्त ग्रन्थो का सपादन सभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति भी अपना आभार प्रकट करते है।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सपादन श्रमसाध्य है एव पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। सस्था ने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिए त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है।

गच्छत स्खलन क्वापि भवत्येव प्रमादत ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधव ॥

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमे लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल समझकर मा भारती के चरण-

कमलो मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुन उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक

बीकानेर, लालचन्द कोठारी

मार्गशीर्ष शुक्ला १५, स० २०१७ प्रधान मन्त्री

३ दिसम्बर, १९६० सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

प्रस्तावना

राजस्थानी भापारा अेक व्याकरणरी आवश्यकता घणा दिनासू अनुभव हुती ही। राजस्थानी भापारा नवीन लेखका कनैंसू वारवार राजस्थानी व्याकरणरी माग आवती। इणी मागरी पूर्तिरै खातर ओ व्याकरण वणायो है।

ओ व्याकरण राजस्थानी भापारो सक्षिप्त व्याकरण है। अैतिहासिक और तुलनात्मक विवेचन सहित विस्तृत व्याकरणरो काम चालै है। आशा है विस्तृत व्याकरण भी थोडा दिनामे प्रकाश पा सकैला।

राजस्थानी व्याकरण-लेखनरो ओ प्रथम प्रयास है आ समझणरी भूल नही हुणी जोयीजै। आजसू कोई पचास वरस पैला राजस्थानीरा प्रसिद्ध विद्वान प० रामकरणजी आसोपा मारवाडी भापारो अेक वडो व्याकरण वणायो हो। रामकरणजी व्याकरण-विज्ञानरा धुरधर विद्वान हा। वैज्ञानिक पद्धति पर लिखियोडो अैडो शास्त्रीय व्याकरण उण दिनामे भारतरी घणकरी भाषावामे नही लिखीजियो हो। दुजरी वात है कै राजस्थानिया इण महान विभूतिरी कदर नही करी जिणसू आज वडा-वडा विद्वाना तकनै आ वात मालम नही है कै राजस्थानीमे आजसू पचास वरस पैला लिखियोडो सर्वांगपूर्ण व्याकरण मौजूद है।

राजस्थानीरी उपभापावामे मारवाडी सर्व-प्रधान है। उणरो विस्तार सबसू अधिक है। उणरा वोलववाळारी सख्या सवसू वत्ती है और उणरो साहित्य घणो पुराणो और घणो विस्तृत है। वा सगळी वोलियारै वीचूवीच है और सबसू मीठी है। डिंगलरी आधारभापा भी मारवाडी ही है। इण वास्तै इण व्याकरणरो आधार मारवाडी माथैहीज राखियो है। इण विपयमे राजस्थानी-साहित्य-सम्मेलनरा प्रथम सभापति डा० रामसिंहजीरा शब्द अठै उद्धृत करणा चावू हू—

'राजस्थानीरी सगळी बोलियामें मारवाड़ी ही राजस्थानीरा नवीन साहित्यरी साहित्यिक भाषा हुणी जोयीजै—जिया आज तक रैती आयी है। आपानै व्याकरणरो ढाचो अर्थात क्रिया और सर्वनाम मारवाड़ीरा लेणा हुसी, बाकी शब्द तो जैपुरी, हाड़ोती माळवी, मेवाती बीकानेरी, जेसळमेरी, शेखावाटी, मेवाड़ी सगळारा वापरणा पड़सी।

इण व्याकरणरी रचनामें विभिन्न भाषावाग घणा व्याकरणासू लाभ उठायो है जिण वास्तै उणारा लेखकारा आभार स्वीकार करू हू।

बीकानेर
आखातीज, स० २००० वि०

नरोत्तमदास स्वामी

पुनश्च

ओ व्याकरण आज १७ बरसा पर प्रकाशित हुवै है। इण बीचमें श्री सीतारामजी लालसरो बणायोड़ो राजस्थानी-व्याकरण प्रकाशित हो चुको है।

न. दा स्वा

समर्पण

राजस्थानी भाषारा

प्रथम व्याकरणकार

श्रीरामकरणजी आसोपा-री

स्मृति-में

सादर समर्पित

सूचनिका

संक्षिप्त

राजस्थानी-व्याकरण

संक्षिप्त

राजस्थानी-व्याकरण

अध्याय १

प्रस्तावना

पाठ १

(१) व्याकरण भापारी बणावटरो वर्णन करै।

(२) भाषा वाक्यासू वणै, वाक्य शब्दासू वणै और शब्द वर्णासू वणै। इण प्रकार व्याकरणमे तीन विभाग हुवै—

(१) वर्ण-विचार (२) शब्द-विचार (३) वाक्य-विचार।

(३) वर्ण-विचारमे वर्ण, वर्णांरो प्रयोग, वर्णांरो भेद, वर्णांरो उच्चारण तथा वर्णांरी लिखावट—इण वातारो वर्णन हुवै।

(४) शब्द-विचारमे शब्दारा भेद, शब्दारा रूपान्तर, शब्दारी व्युत्पत्ति, शब्दारो निर्माण और शब्दारा प्रयोग—इण वातारो वर्णन हुवै।

(५) वाक्य-विचारमे वाक्यारा भेद, वाक्य वणावणरी रीता, वाक्यारो विश्लेषण तथा वाक्यारो संश्लेषण—इण वातारो वर्णन हुवै।

अध्याय २

वर्ण-विचार

पाठ २

वर्ण-माळा

(६) राजस्थानी वणमाळामे ५१ वर्ण (ध्वनिया) है जिणमे १३ स्वर तथा ३८ व्यजन है—

(क) स्वर—अ आ इ ई उ ऊ
ऄ ए ऍ ओ अै औ ऋ

(ख) व्यजन—क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल ब व
श ष स ह ळ ड़
[ ] अनुस्वार और [ ] विसर्ग

(७) अ इ उ ऄ ऍ और ऋ—अै छव ह्रस्व स्वर कहीजै। आ ई ऊ ए ओ अै और औ—अे सात दीर्घ स्वर कहीजै।

(८) स्वर केवळ मुखसू बोलीजै जद उणनै निरनुनासिक कैवै।

(९) स्वर मुख और नाक दोनासू बोलीजै जद सानुनासिक कहीजै।

(१०) लिखावट मे सानुनासिक स्वररी पिछाण वास्तै स्वररै ऊपर सादी मीडी अथवा चंद्रबिंदु लगावै। जिया—

अ आ इ ई उ ऊ ॲ ऍ ऑ ओ अ औं।

अथवा

अं आं इं ईं उं ऊं ॲं ॲं ऑं ओं अं औं।

(११) व्यजनारा तीन विभाग हुवै—(१) स्पर्श (२) अन्तस्थ (३) घर्षक।

(१२) स्पर्श व्यजनारा पाच विभाग है—

(१) कवर्ग—क ख ग घ ङ
(२) चवर्ग—च छ ज झ ञ
(३) टवर्ग—ट ठ ड ढ ण
(४) तवर्ग—त थ द घ न
(५) पवर्ग—प फ ब भ म

(१३) य र ल व—अै अन्तस्थ व्यजन है।

(१४) श ष स ह ळ व ड—अै घर्षक व्यजन कहीजै।
श ष स—इणानै ऊष्म व्यजन कैवै।

(१५) वर्गारा पैला तथा दूजा वर्ण और श ष स तथा विसर्ग—अै चवदै वर्ण अघोष कहीजै, बाकी वर्ण अर्थात् वर्गारा तीजा, चौथा और पाचवा वर्ण, य र ल ळ व ह् व ड तथा अनुस्वार और स्वर—अै घोष वर्ण कहीजै।

(१६) वर्गारा दूजा तथा चौथा वर्ण और श ष स ह तथा विसर्ग—अै १५ वर्ण महाप्राण कहीजै। बाकी २८ वर्ण अल्पप्राण वाजै।

पाठ ३

लिपि अथवा लिखावट

(१७) राजस्थानी भाषा जिण लिपिमे लिखीजै वा देवनागरी अथवा नागरी लिपि बाजै। राजस्थानमे इणनै शास्त्री तथा गुजरात और महाराष्ट्रमे बाळबोध भी कैवै।

(१८) देवनागरीरै अलावा नीचे बतायी लिपिया भी राजस्थानमे चालै—

(१) जैनी।

(२) वाणीकी अथवा महाजनी—इणनै व्यापारी काममे लेवै, इणमे मात्रावा नही हुवै।

(३) कामदारी—आ राजरा दफ्तरामे प्राय कर चालती।

इण लिपियारा नमूना आगै परिशिष्टमे दिया है।

(१९) देवनागरी लिपिमे कईक आखर दो-दो तीन-तीन तरिया लिखीजै। जिया—

अ = अ	ड = ड
अे = ए	ण = न
अै = ऐ	र = न
ॠ = ॠ	ल = ल
ख = प	श = श ग
छ = छ	क्ष = क्ष
झ = झ	त्र = त्र

अनुस्वार = ॰ अथवा –

अनुनासिक = – अथवा ँ

(२०) स्वर व्यजनरै आगै आवै जद व्यजन मे मिल जावै।

मिलणेसू उणरो रूप बदळ जावै । बदलियोड़ै रूपनै मात्रा कैवै । मात्रावा इण प्रकार है—

स्वर—अ आ इ ई उ ऊ ॲ ए ऑ ओ ऐ औ ऋ
मात्रा—० ा ि ी ु ू ॅ े ॉ ो ै ौ ृ

(२१) 'अ' री कोई मात्रा नहीं । अ व्यजनरै आगै आवै जद व्यजनरो हल्रो चिह्न आघो कर देवै । जिया—

क्+अ=क

(२२) मात्रा सहित व्यजनरा रूपानै बारखडी कैवै । 'क्'री बारखडी इण भात हुवै—

क का कि की कु कू कॅ के कॉ को कै कौ कृ ।

(२३) स्वररै विना व्यजन अेकलो आवै जद नीचै इसो (्) चिह्न लगायीजै । इण चिन्हनै हल् कैवै ।

(२४) व्यजनरै आगै व्यजन आवै जद दोनारो सयोग हुज्यावै । सयोग हुयोडा व्यजनानै सयुक्त-व्यजन या सयुक्त-वर्ण अथवा भेळा-आखर कैवै ।

(२५) सयोग करणेमे पाईवाळा आखरारी पाई, और आधी पाई-वाळा आखरारी आधी पाई, आधी कर देवै । पाई विनारा व्यजन आगलै व्यजनरै ऊपर लिखीजै । जिया—

(१) न्+य=न्य म्+ल=म्ल
(२) क्+ख=क्ख ज्+ञ=ज्ञ
(३) द्+र=द्र ड्+ग=ड्ग
ड्+ड=ड्ड द्+व=द्व

(२६) *कई व्यजनारा, सयोग होणै पर, निराळा ही रूप हुवै ।* जिया—

(क) य-रो सयोग--

क् +य=क्य, क्य	ढ +य=ढ्य
छ् +य=छ्य	द +य=द्य, दय
ट् +य=ट्य	र् +य=रय,-य, र्य
ड् +य=ड्य	ह +य=ह्य, हय

(ख) 'र' रो पूर्व-सयोग—

र् +क=र्क	र् +र=र्र
र् +च=र्च	र् +य=र्य, रय, -य
र् +म=र्म	र् +ह=र्ह, -ह

(ग) 'र' रो पर-सयोग—

क् +र=क्र	छ् +र=छ्र
ग्+र=ग्र	ट् +र=ट्र
द्+र=द्र	ढ् +र=ढ्र
प्+र=प्र	त् +र=त्र, त्र
श्+र=श्र, श्र	ह +र=ह्र

(घ) दूजा वर्णारो सयोग

क+त=क्त, क्त	ह+ण =ह्ण, ह्ण
क्+ल=क्ल, क्ल	ह+न =ह्न, ह्न
प्+त=प्त, प्त	ह+म =ह्म, ह्म
त्+त=त्त, त्त	ह+य =ह्य, ह्य
क्+ष=क्ष, , क्ष	ह+ र=ह्र, ह्र
ज्+ञ=ज्ञ, ज्ञ	ह+ ल=ह्ल, ह्ल
क्+त्+र=क्त्र, क्त्र	ह+व =ह्व, ह्व

पाठ ४

उच्चारण

(२७) अै और औ रा दो उच्चारण हुवै। अेक अइ-अउ सरीखो, जिसो सस्कृतमे हुवै। जिया—

अैरावत=अइरावत	औपधि=अउपधि
कैरव =कइरव	कौरव =कउरव
[भैया =भइया	कौवा =कउवा]

दूसरो जिसो हिन्दी मे हुवै। जिया—

है	और
जेसा	कौन

(२८) राजस्थानीमें हिन्दी सरीखो उच्चारण हुवै, सस्कृत सरीखो नही—

अै—जिया वैण और नैण मे,
भैया और कन्हैया मे जिया नही।
औ—जिया चौर और कौल मे,
कौवा मे जिया नही।

(२६) ऋ, ञ और ष तथा विसर्ग खाली सस्कृतरा तत्सम शब्दा मे काम आवै। इणारो शुद्ध उच्चारण अब लोग भूल चूका है। आजकाल इणारो उच्चारण इण प्रकार हुवै—

ऋ=रि
ञ =यँ
ष =श

(३०) आथूणी तथा दिखणादी मारवाडी बोलिया मे 'स' री जागा अेक भातरो 'ह' और 'च छ' री जागा अेक भातरो 'स' बोलीजै। जिया—

सा'व =हा'व
चक्की =सक्की
छाछ =सास ।

(३१) 'व'रो उच्चारण संस्कृत सरीखो हुवै । ओ दन्तोष्ठ्य अर्ध-स्वर वर्ण है । उदाहरण--

स्वामी, स्वर, कवर, हुवै ।

(३२) 'व' द्वयोष्ठ्य या ओष्ठ्य वर्ण है । इणरो उच्चारण व और ब दोनासू भिन्न है । संस्कृतमे शब्दारै आदिमे आवणवाळो 'व' व्रज-भापामे 'ब' हुज्यावै, राजस्थानीमे वो 'व' हुवै—

वास्ती (वैश्वदेव), व्योपार, वासी, वाड, वादळ, वेल ।

(३३) व, व और ब रो आतरो नीचे लिखिया उदाहरणासू मालम हुसी—

(क) व और व—

वैवणो=चालणो (हिन्दी चलना या बहना)
वावणो=(हिन्दी बोना)
वुवो=चाल्यो (हिन्दी चला)
वगावणो=फेंकणो (हिन्दी फेंकना) ।

(ख) व और व —

वो =हिन्दी वह
बो =(बीज) बो, अथवा वह ।

(ग) व और ब

वाडो=गायो आदि का वाडा
वाडो=अेक स्वाद, कसैला
वळ =वाकपन
बळ =बल, शक्ति ।

वळनो=लौटना, फिरना; वळनो (जलना)
वारी=पारी, Turn; वारी=खिडकी
वोरो=महाजन; वोरो=गेहूँ आदि भरने का बोरा।

(घ) ब और व—
बाळो=बालक,
वाळो=पानी का बरसाती नाला,
वाळो=वाला प्रत्यय, जिया गुणवाळो=गुणवाला ।

(३४) द और ड आखरारो कदे-कदे अेक निराळो उच्चारण हुवै। 'द' रो उच्चारण—टाबर तोतलो बोलै जद ज-नै द बोलै। उदाहरण—दिल्ली, दरवाजो, दौडनो।

ड रो उच्चारण डेरा शब्दरै उच्चारणसूं जाण्यो जासी।
डेरो=रैवणरो स्थान,
ढेरो=वडी जू,
ड̱ेरो=काटारी वाडरो ड̱ेरो।

(३५) कई अल्पप्राण आखरारो महाप्राण तो नहीं, पण हळका महाप्राण जिसो, उच्चारण हुवै। इणनै अनुप्राणित उच्चारण कैवै।

(३६) अनुप्राणित उच्चारण वतावण वास्तै कदे-कदे शब्दरै आगै ['] कामा जिसो चिह्न लगायीजै। उदाहरण—

सा'रो (सहारा) — सारो (सब)
पी'र (पीहर) — पीर (मुसलमानी पीर)
मो'र (मुहर) — मोर (मोर पक्षी)
पा'ड (पहाड) — पाड (धोती का पाड)
का'णी (कहानी) — काणी (कानी, अेक आख वाली)
ना'र (नाहर) — नार (नार, नारी)।

(३७) शब्दरै अन्तमे, और बीचमे भी, घणी वार 'अ'रो उच्चारण लुप्त हुज्यावै। जिया—

कर	=कर्	कम	=कम्
मत	=मत्	तक	=तक्
चमक	=चमक्	भजन	=भजन्
चकमक	=चक्मक्	बरकत	=बर्कत्
चमकसी	=चमक्सी	चरपरो	=चर्परो
चमकै	=चम्कै	चमकावै	=चम्कावै

पाठ ५

संधि

(३८) दो वर्णांरै पर्नं आणंसू उणामे कदे-कदे विकार (परिवर्तन) हुज्यावै । इणनै सधि कैवै । जिया—

१ राम+अनुज=रामानुज
अठै अ रै आगै अ आयो, दोनू मिलनै आ हुग्या ।

२ उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट
अठै त् रै आगै श् आयो, दोनू मिलनै च्छ हुग्या ।

३ इति+आदि=इत्यादि
अठै इ रै आगै आ आयो, इ-रो य् हुग्यो ।

४ निः+सार=निस्सार
अठै विसर्ग ( ) रै आगै स् आयो, विसर्ग-रो स् हुग्यो ।

५ षट्+नवति=षण्णवति
अठै ट् रै आगै न आयो, दोनारो ण्ण हुग्यो ।

(३९) व्यजनरै आगै स्वर अथवा व्यजन आवै और दोनू मिल ग्याय, पण कोई परिवर्तन नही हुवै तो उणनै सयोग कैवै, मधि नही ।

निर्+आश=निराश मे सयोग है, पण
निः+आश=निराश मे सधि है ।
भगवत्+कृपा=भगवत्कृपा मे सयोग है, पण
भगवत्+गीता=भगवद्गीता मे सधि है ।

(४०) सधि दो तरारी हुवै—

१ अेक शब्दरै माय । जिया—
राम+अनुज=रामानुज .

तिः + फळ = निष्फळ
भज् + ति = भक्ति ।

२ दो स्वतंत्र शब्दां मे । जियां—
राजा आयाति = राजायाति
श्रीमन् आगच्छ = श्रीमन्नागच्छ

(४१) संस्कृतमें दोनूं तरारी संधि हुवैं । राजस्थानीमें केवळ अेक शब्द मायली संधि हुवैं, और वा भी संस्कृतरा तत्सम शब्दामें ही ।

(४२) अेक शब्द मायली संधि तीन तरासूं हुवैं—

१ समासरा शब्दामें । जियां—
हिम + अचळ = हिमाचळ
गण + ईश = गणेश

२ उपसर्ग और शब्दरा मेळ मे । जियां—
प्र + आप्ति = प्राप्ति
उत् + छेद = उच्छेद
सम् + देश = संदेश
निः + रस = नीरस

३. शब्द और प्रत्ययरा मेळ मे । जियां—
भज् + त = भक्त
आचार्य + आ = आचार्या

नोट—राजस्थानी मे स्वरादि प्रत्यय जुड़ैं जद पहला पूर्व-शब्दरै अंतिम स्वररो लोप हुज्याय और पछै प्रत्ययरो स्वर उण मे मिल ज्याय । जियां—

घोडो + आ = घोड् + आ = घोडा
सुन्दर + ई = सुन्दर् + ई = सुन्दरी
चतर + आई चतर् + आई = चतराई
टाबर + इयो टाबर् + इयो = टाबरियो

व्यंजनादि प्रत्यय जुड़ै जद शब्दमे प्राय सीधो जुड़ ज्याय। जियां—

राम + रो=रामरो
कर + तो=करतो

(४३) संधिरा तीन भेद हुवै—

१. स्वर-संधि—जद स्वर और स्वररी संधि हुवै।
२. व्यंजन-संधि—जद व्यंजन और व्यंजनरी, अथवा व्यंजन और स्वररी, संधि हुवै।
३ विसर्ग-संधि—जद विसर्ग और स्वर, अथवा विसर्ग और व्यंजनरी, संधि हुवै।

संधिरा भेदारी सारणी

पूर्व शब्दरै अन्त मे	पर शब्दरै आदिमे	संधिरो नाव
स्वर	स्वर	स्वर-संधि १
,,	व्यंजन	कोई संधि नही
,,	विसर्ग	कोई संधि नही
व्यंजन	स्वर	व्यंजन-संधि २
,,	व्यंजन	व्यंजन-संधि २
,,	विसर्ग	कोई संधि नही
विसर्ग	स्वर	विसर्ग-संधि ३
,,	व्यंजन	विसर्ग-संधि ३
,,	विसर्ग	कोई संधि नही

पाठ ६

स्वरसंधि

(४४) स्वर-सधिरा पांच भेद हुवै—

दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, और अयादि।

(४५) दीर्घ—दो समान स्वर कनैं-कनैं आवै जद दोनारी जाग्या दीर्घ स्वर हुज्यावै—

अ + अ = आ	राम + अवतार = रामावतार
अ + आ = आ	देव + आलय = देवालय
आ + अ = आ	विदया + अर्थी = विदयार्थी
आ + आ = आ	विदया + आलय = विदयालय
इ + इ = ई	रवि + इंद्र = रवींद्र
इ + ई = ई	कवि + ईश = कवीश
ई + इ = ई	मही + इंद्र = महींद्र
ई + ई = ई	मही + ईश = महीश
उ + उ = ऊ	गुरु + उपदेश = गुरूपदेश
उ + ऊ = ऊ	सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि
ऊ + उ = ऊ	वधू + उपदेश = वधूपदेश
ऊ + ऊ = ऊ	वधू + ऊर्मि = वधूर्मि
ऋ + ऋ = ॠ	मातृ + ऋण = मातॄण

(४६) गुण—अ या आ रै आगै इ या ई, अथवा उ या ऊ, अथवा ऋ आवै तो क्रमसू ए, ओ और अर् हुज्यावै—

(१) अ + इ = ए	गज + इन्द्र = गजेन्द्र
अ + ई = ए	गण + ईश = गणेश

आ + इ = अे   महा + इन्द्र = महेन्द्र
आ + ई = अे   महा + ईश = महेश

(२) अ + उ = ओ   हित + उपदेश = हितोपदेश
अ + ऊ = ओ   नव + ऊढा = नवोढा
आ + उ = ओ   महा + उत्सव = महोत्सव
आ + ऊ = ओ   गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि

(३) अ + ऋ = अर्   सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
आ + ऋ = अर्   महा + ऋषि = महर्षि

(४७) वृद्धि—अ या आ रै आगै अे या अै, अथवा ओ या औ, आवै तो क्रमसूं अै और औ हुज्यावै—

(१) अ + अे = अै   अेक + अेक = अैकैक
आ + अे = अै   सदा + अेव = सदैव
अ + अै = अै   गुण + अैश्वर्य = गुणैश्वर्य
आ + अै = अै   महा + अैश्वर्य = महैश्वर्य

(२) अ + ओ = औ   परम + ओषधि = परमौषधि
आ + ओ = औ   महा + ओषधि = महौषधि
अ + औ = औ   परम + औदार्य = परमौदार्य
आ + औ = औ   महा + औत्सुक्य = महौत्सुक्य

(४८) यण्—इ या ई, अथवा उ या ऊ, अथवा ऋ रै आगै अ-समान स्वर आवै तो इ-ई रो य्, उ-ऊ रो व् और ऋ रो र् हु ज्यावै (तथा आगलो स्वर उणमें मिल ज्यावै)—

(१) इ या ई + अ = य् + अ = य   यदि + अपि = यद्यपि
इ या ई + आ = य् + आ = या   इति + आदि = इत्यादि
इ या ई + उ = य् + उ = यु   अभि + उदय = अभ्युदय
इ या ई + ऊ = य् + ऊ = यू   वि + ऊढ = व्यूढ

पाठ ७

व्यंजन-संधि

(५१) क् च् ट् प् रै आगै कोई घोष वर्ण आवै तो क् च् ट् प् क्रम सूं ग् ज् ड् ब् हुज्यावै—

वाक् + ईश्वरी = वागीश्वरी

षट् + रिपु = षड्रिपु

(५२) च् अथवा ज् रै आगै अघोष वर्ण आवै तो च्-ज् रो क् हुज्यावै और घोष वर्ण आवै तो ग् हुज्यावै—

वाच् + पति = वाक्पति

वाच् + देवी = वाग्देवी

वणिज् + पुत्र = वणिक्पुत्र

वणिज् + भवन = वणिग्भवन

(५३) त् रै आगै चवर्ग, टवर्ग और 'ल'नै टाळनै कोई घोष वर्ण आवै तो उणरो द् हुज्यावै—

सत् + गुण = सद्गुण

सत् + आचार = सदाचार

(५४) द् रै आगै चवर्ग, टवर्गनै टाळनै कोई अघोष वर्ण आवै तो उणरो त् हुज्यावै—

शरद् + काळ = शरत्काळ

(५५) त् अथवा द् रै आगै च्-छ् आवै तो त्-द् रो च् हुज्यावै—

उत् + चारण = उच्चारण

(५६) त् अथवा द् रै आगै ज्-झ् आवै तो त्-द् रो ज् हुज्यावै—

सत् + जन = सज्जन

(५७) त् अथवा द् रै आगै ल् आवै तो त्-द् रो ल् हु ज्यावै—

उत्+लास=उल्लास

(५८) त् अथवा द् रै आगै ह् आवै तो ह् रो ध् हु ज्यावै—

उत्=हार=उद्घार

(६१) छ् ह्रस्व स्वर रै पछै, या आ उपसग रै पछै, आवै तो उणरो च्छ् हु ज्यावै। दीर्घ स्वर रै पछै आवै तो विकळपसू हुवै—

परि +छेद =परिच्छेद
वि +छेद =विच्छेद
आ +छादन=आच्छादन
छत्र +छाया=छत्रच्छाया
लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीछाया, लक्ष्मीच्छाया

विशेष—भापारा शब्दा म छ रो च्छ् नहीं भी हुवै—

छत्र +छाया=छत्रछाया

(६२) म् रै पछै व्यजन आवै तो उणरो अनुस्वार हुज्यावै—

किम्+कर =किंकर किम् +वा =किंवा
सम् +तोप =संतोप सम् +सार =संसार
सम् +योग =संयोग सम् +हार =संहार

(६३) म् रै पछै स्पर्श व्यजन आवै तो म् रो विकळपसू नासिक्य वर्ण भी हु ज्यावै—

किम्+कर =किङ्कर किंकर
सम् +कट =सङ्कट संकट
सम् +चय =सञ्चय संचय
सम् +तान =सन्तान संतान
सम् +तोप =सन्तोप संतोप
सम् +पूर्ण =सम्पूर्ण संपूर्ण

पाठ ८

विसर्ग-सन्धि

(६४) विसर्गरै आगै च छ, ट ठ त थ आवै तो विसर्गरी जागा क्रमसू श ष और स् हुज्यावै—

नि + चल = निश्चल
तप + चर्या = तपश्चर्या
नि + छल = निश्छल
धनु + टकार = धनुष्टकार
मन + ताप = मनस्ताप

(६५) विसर्गरै आगै श ष स् आवै तो विसर्गरो क्रमसू श् ष् स् हुज्यावै, अथवा विसर्ग अविकळ कायम रैवै—

दु + शासन = दुश्शासन, दुःशासन
नि + सदेह = निस्सदेह, निःसदेह
नि + सहाय = निस्सहाय, निःसहाय

(६६) विसर्गरै पैली अ हुवै और बादम भी अ आवै तो अ और विसर्ग मिलनै ओ हुज्यावै और आगलो अ लुप्त हुज्यावै—

मन + अनुकूल = मनोनुकूल

(६७) विसर्गरै पैली अ हुवै और आगै कोई घोष व्यजन आवै तो अ और विसर्ग मिलनै ओ हुज्यावै—

मन + रथ = मनोरथ
मन + वृत्ति = मनोवृत्ति
रज + गुण = रजोगुण

(६८) विसर्गरै पैली अ हुवै ओर आगै अ नै छोडनै कोई दूसरो स्वर हुवै तो विसर्गरो लोप हुज्यावै—

अत +अव =अतअेव

(६९) विसर्गरै पैली अ और आ नै छोडनै कोई दूसरो स्वर हुवै तथा आगै कोई घोष वर्ण आवै तो विसर्गरो र् हुज्यावै—

नि +जन =निर्जन
दु +जन =दुर्जन
नि +आशा =निराशा
दु +उपयोग =दुरुपयोग

(७०) विसर्गरै पैली इ या उ हुवै और आगै क् ख् या प् फ् हुवै तो विसर्गरो ष् हुज्यावै—

नि +कारण =निष्कारण
नि +फल =निष्फल
दु +कर =दुष्कर

(७१) विसर्गरै पैली ह्रस्व स्वर हुवै और आगै र् आवै तो उण ह्रस्व स्वर और विसर्ग दोनारी जागा दीर्घ स्वर हुज्यावै—

नि +रस =नीरस
नि +रोग =नीरोग

(७२) ऊपरला नियमारा कई अपवाद—

यश +विन् =यशस्विन्
तेज +विन् =तेजस्विन्
यश +कर =यशस्कर
नम +कार =नमस्कार
भा +कर =भास्कर
पुन +उक्ति =पुनरुक्ति
पुन +जन्म =पुनर्जन्म

अध्याय ३

शब्द-विचार

पाठ १

शब्दरा भेद

(७३) शब्द-विचारमे शब्दरै भेदारो, प्रयोगारो, रूपांतरारो और व्युत्पत्तिरो निरूपण हुवै ।

(७४) शब्दरा तीन भेद हुवै —

(१) सज्ञा (२) क्रिया (३) अव्यय ।

(७५) कंई पदार्थरो नांव अथवा विशेषता बतावै वो शब्द सज्ञा कहीजै । यथा—पोथी, जोधपुर, ऊंचाई, सोनो, पचायत, काळो, ऊंचो, ऊपरलो, घणो, तीन ।

(७६) कामरो हुवणो बतावै वो शब्द क्रिया कहीजै । यथा—आवणो, देखणो, करणो, पढै है, बोलसी, बाची ।

(७७) सज्ञा और क्रिया शब्दामे रूपान्तर हुवै अर्थात् अेक ही शब्दरा कई रूप बणै । यथा—

घोडो, घोडा, घोडां, घोड़ी, घोडिया ।
हूं, म्हे, मनै, म्हा, म्हारो, म्हामू ।
काळो, काळा, काळी ।
जावै, जासी, जावतो, जावती, गयो, गया ।

(७८) सज्ञामे जाति, वचन और विभक्तिरा रूपान्तर हुवै । यथा—

(१) जाति—

नरजाति	— घोडो	काळो	वो
नारीजाति	— घोडी	काळी	वा

(२) वचन—

अेकवचन	— घोडो	माळो	वो
अनेकवचन	— घोडा	काळा	वै

(३) विभक्ति—

पहली	— घोडो	घोडा
दूसरी	— घोडा	घोडा
तीसरी	— घोडै	घोडा

सर्वनाम संज्ञामे पुरुषरो रूपान्तर और हुवै—

(४) पुरुष—

अन्यपुरुष	— वो, वा	वै	
मध्यमपुरुष	— तू	थे	आप
उत्तमपुरुष	— हू	म्हे	आपा

(७९) नियामे जाति, वचन, पुरुष, काळ, वाच्य तथा प्रयोगरा रूपान्तर हुवै। यथा—

(१) जाति—

नरजाति	— गयो	करतो
नारीजाति	— गयी	करती

(२) वचन—

अेकवचन	— गयो	करतो	जाऊ
अनेकवचन	— गया	करता	जावा

(३) पुरुष—

अन्यपुरुष	— देखै	देखै	जासी
मध्यमपुरुष	— देखै	देखो	जासो
उत्तमपुरुष	— देखू	देखा	जासा

(४) काळ—

वर्तमान	—	भरै	आवै
भूत	—	भरियो	आयो
भविष्य	—	भरैला	आवैला

(५) वाच्य—

कर्तृवाच्य	—	आवै	करै	करसी
कर्मवाच्य	—	×	करीजै	करीजसी
भाववाच्य	—	आयीजै	×	×

(६) प्रयोग—

कर्तरिप्रयोग — घोडा दौडिया।

कर्मणिप्रयोग — घोडा घास खायो।

भावेप्रयोग — घोडासूं उठीजियो नही।

(८०) जिण शब्दमें रुपान्तर नहीं हुवै वो अव्यय। यथा—ऊपर, आगै, आजकल, अठै, किन्तु, अथवा।

पाठ १०

संज्ञा

(८१) सज्ञारा तीन भेद हुवै—

(१) नाम (२) सर्वनाम (३) विशेषण ।

(८२) वस्तुरा नावनै नाम कैवै । यथा—गाय, भारत, रामदास, गगा, चावळ, सोनो, सभा, धीरज ।

गाय	अेक	प्राणीरो नाव है ।
भारत	अेक	देशरो नाव है ।
रामदास	अेक	आदमीरो नाव है ।
गगा	अेक	नदीरो नाव है ।
चावळ	अेक	अन्नरो नाव है ।
सोनो	अेक	धातुरो नाव है ।
सभा	मिनखांरी जमात रो नाव है ।	
धीरज	अेक	गुणरो नाव है ।

(८३) नामरै बदळै आवै बो शब्द सर्वनाम । यथा—हू, तू, बो, जो ।

(१) सीता बोली—हू जासू ।
इण वाक्यमें 'हू' सीतारै बदळै आयो है ।

(२) गगाराम रतननै कयो—तू किसी पोथी लेवैला ?
इण वाक्यमें 'तू' रतनरै बदळै आयो है ।

(३) काळू घरै कोनी, बो बजार गयो है ।
इण वाक्यमें 'बो' काळूरै बदळै आयो है ।

(८४) नाम अथवा सर्वनामरी विशेपता वतावै वो शब्द विशेपण। यथा—

(१) काळो घोडो आयो।

इण वाक्य मे 'काळो' शब्द घोडैरो रग वतावै।

(२) ओ काम आछो कोनी।

इण वाक्य मे आछा' शब्द कामरी गुण वतावै।

(८५) जिण नाम अथवा सर्वनामरी विशेपता विशेषण वतावै उणनै विशेष्य कैवै। ऊपरला उदाहरणामे काळो और आछो शब्द विशेपण है तथा घोडो और काम शब्द विशेष्य है।

पाठ ११

नाम

(८६) नामरा तीन भेद हुवै—(१) जातिवाचक (२) व्यक्तिवाचक (३) भाववाचक ।

(८७) अेक जातिरै नावनै जातिवाचक कैवै । जिया—गाय, वड, पेड ।

गाय	जिनावरारी अेक जातिरो नाव है ।
वड	पडारी अेक जातिरो नाव है ।
पेड	वनस्पतियारी अेक जातिरो नाव है ।

(८८) अेक जातिरी अेक चीजरा नावनै व्यक्तिवाचक नाम कैवै । जिया—गगा, पार्वती, वीकानेर ।

गगा अेक नदीरो नाव है ।
पार्वती अेक स्त्रीरो नाव है ।
वीकानेर अेक नगररो नाव है ।

(८९) गुण, सभाव, काम अथवा अवस्थारै नावनै भाव-वाचक नाम कैवै । जिया—मिठास, चतराई, भजन, अढाई, नीद, पीड, गरीबाई ।

पाठ १२

सर्वनाम

(६०) सर्वनामरा छै भेद हुवै—(१) पुरुषवाचक (२) निश्चयवाचक (३) अनिश्चयवाचक (४) प्रश्नवाचक (५) सबधवाचक (६) निजवाचक।

(६१) पुरुषवाचक सर्वनाम पुरुषरो बोध करावै ।

पुरुष तीन है—(१) उत्तम (२) मध्यम (३) अन्य ।

बोलै जका उत्तम पुरुष । जिया—हूँ, म्हे, आपा ।

जिणसू बोलै बो मध्यम पुरुष । जिया—तू, थे, आप ।

जिणरी बात करीजै बो अन्यपुरुष । जिया—बो, बै ।

उत्तम-पुरुष और मध्यम पुरुषरा सर्वनामा (हू, तू, आप) नै टाळनै बाकी सारा सर्वनाम और नाम अन्यपुरुष हुवै । निजवाचक आप तीनू पुरुषामे काम आवै ।

(६२) निजरो अर्थ देवै जको सर्वनाम निजवाचक कहीजै । जिया—आप (आपनै, आपसू, आपरो, आपमे) ।

(६३) निश्चयवाचक सर्वनाम कनैरी अथवा दूररी निश्चित वस्तुरो बोध करावै । जिया—ओ, बो ।

ओ कनैरी वस्तुरो बोध करावै । बो दूररी वस्तुरो बोध करावै ।

(६४) अनिश्चयवाचक सर्वनाम अनिश्चित वस्तुरो बोध करावै । जिया—कोई, की ।

(६५) प्रश्नवाचक सर्वनाम प्रश्न पूछणमे वापरीजै । जिया—कुण, काई, किसो ।

(६६) सबधवाचक सर्वनाम दो वाक्यारो सबध करै । जिया—जा, जको, सो ।

जावै जको दिन आवै कोनी ।

आ काल मिलियो जको ही आदमी है ।

ओ वो ही आदमी है जको काल मिलियो हो ।

पाठ १३

विशेषण

(९७) विशेषणरा ४ भेद हुवै—(१) गुणवाचक (२) परिणाम-वाचक (३) सख्यावाचक (४) सार्वनामिक ।

(९८) गुणवाचक जको गुणरो बोध करावै । जिया—

काळो, ऊचो, भलो, बावळो ।

(९९) परिमाणवाचक जको परिमाण बतावै । जिया—

थोडो, घणो, सगळो, पूरो, अधूरो, कमती, वेसी ।

(१००) सख्यावाचक जको गिणती बतावै । जिया—

अेक, दो, बीस, सौ, हजार,
पैलो, दूजो, दसवो, हजारवो,
पाव, आधो, सवा, डोढ, साढीतीन,
चौथाई, सवायो, दुगणो,
अनेक, घणा, थोडा, सगळा ।

(१०१) पुरुषवाचक नै निजवाचक सर्वनामानै टाळनै बाकी सारा सर्वनामारो विशेषणरी भात प्रयोग हुवै । विशेषणरी भात काम आवै जद वै विशेषण कहीजै । इणानै सार्वनामिक विशेषण कैवै । जिया—

ओ आदमी, वो बळद, कोई देस, की दूध, जका लुगाई, कुण मिनख, काई बात ।

(१०२) सर्वनामारै आगै प्रत्यय जोडनै गुणवाचक, परिमाणवाचक, तथा सख्यावाचक विशेषण बणायीजै । इणारा उदाहरण नीचै सारणीमे दिया है—

विशेषण	ओ	वो	वो, ऊ	सो	जो	कुण
गुणवाचक	इसो अँडो	विसो वँडो	ओडो	तिसो तँडो	जिसो जँडो	क्सो कँडो
परिमाण-वाचक	इत्तो इतरो इतणो	वित्तो वितरो वितणो	उत्तो उतरो उतणो	तितरो तितणो	जित्तो जितरो जितणो	कित्तो कितरो कितणो
सख्या-वाचक	इत्ता इतरा इतणा	वित्ता वितरा वितणा	उत्ता उतरा उतणा	तितरा तितणा	जित्ता जितरा जितणा	कित्ता कितरा कितणा

पाठ १४

जाति

(१०३) जाति आ बतावै कै नर है क नारी।

(१०४) राजस्थानीमे दो जातियाँ है—(१) नरजाति (२) नारी-जाति।

(१०५) नरजाति बतावै कै चीज नर है। जिया—घोडो, माळी, सेठ, राजा, काळो।

(१०६) नारीजाति बतावै कै चीज नारी है। जिया—घोडी, माळन, सेठाणी, राणी, काळी।

(१०७) नरजातिसू नारीजाति बणावण वास्तै नीचै बताया प्रत्यय जुडै—

(१) ई—	बामण	—	बामणी
	सुनार	—	सुनारी
	कुभार	—	कुभारी
	मामो	—	मामी
(२) णी—	जाट	—	जाटणी
	बीन	—	बीनणी
	हस	—	हसणी
	हाथी	—	हथणी
(३) अण—	चौधरी	—	चौधरण
	दरजी	—	दरजण
	नाई	—	नायण
	जोगी	—	जोगण
	माळी	—	माळन

	आचार्य	आचार्या
	क्षत्रिय	क्षत्रिया
	बाळक	बाळिका
	नायक	नायिका
	उपदेशक	उपदेशिका
(२) ई	सुंदर	सुंदरी
	देव	देवी
	दास	दासी
(३) री	कर्त्ता	कर्त्री
	धाता	धात्री
	दाता	दात्री
(४) आनी	भव	भवानी
	रुद्र	रुद्राणी
	इन्द्र	इन्द्राणी
(५) नी	पति	पत्नी
(६) इनी	मानी	मानिनी
	हितकारी	हितकारिणी
(७) आ	साहब	साहबा
	वालिद	वालिदा

(११४) नामरै अलावा अन्यपुरुष-वाचक सर्वनाम तथा ओकारान्त विशेषणामें भी जाति-भेद हुवै—

(क) विशेषण—काळो काळी
रातो राती
(ख) सर्वनाम—वो वा
जको जकी, जका

पाठ १५

वचन

(११५) वचन सख्या बतावै अर्थात् आ बतावै कै चीज गिणतीमे कित्ती है ।

(११६) राजस्थानीमे दो वचन हुवै—

(१) अेकवचन (२) अनेकवचन ।

(११७) अेकवचन अेक सख्यारो बोध करावै अर्थात् आ बतावै कै चीज अेक है । जिया—घोडो, पोथी, गाय ।

(११८) अनेकवचन अेकसू अधिक सख्यारो बोध करावै अर्थात् आ बतावै कै चीजा अेकसू अधिक है । जिया—घोडा, पोथिया, गाया ।

(११९) कदे-कदे आदर बतावण वास्तै अेकवचनरी ठोड अनेकवचन आवै । जिया—

आप कद आया ? अै कठै जावैला ? सेठानै कागद दो ।

(१२०) अेकवचनसू अनेकवचन बणावण वास्तै नीचै बतायै मुजब प्रत्यय लागै—

(क) नरजातिरा शब्द—

१ ओकारात शब्दामे आ प्रत्यय लागै । जिया—

घोडो	—	घोडा
बाबो	—	बाबा

२. बाकी नरजातिरा शब्द दोना वचनामे समान रैवै । जिया—

बादळ	बादळ
राजा	राजा
पति	पति

(१२२) बाकी नरजातिरा और नारीजातिरा तमाम विशेषण दोनाँ वचनामे सरीसा रैवँ—

काळी घोडी ।
काळी घोडिया ।

(१२३) नारीजातिरा विशेषण नामरी भात काम आवैं जद उणरो अनेकवचन नामरी भात ही ज वर्णे—

सुन्दरी आयी ।
सुन्दरिया आयी ।

(१२४) सर्वनामारा अनेकवचन इण मुजब हुवैं—

हू	म्हे, आपा	जो	जो
तू	थे, आप	जको	जका, जकै
बो	वै	कुण	कुण
बा	वैं	काई	काई
ओ	अै	की	की
आ	अैं	कोई	कोई

पाठ १६

विभक्ति

(१२५) राजस्थानी में आठ विभक्तिया हुवै ।

(१२६) विभक्तियारा दोय भेद हुन्न—(१) मूळ विभक्ति (२) यौगिक विभक्ति ।

(१२७) मूळ विभक्तिया—इणामे सस्कृत जिया अेकवचन और अनेकवचनरा प्रत्यय न्यारा-न्यारा हुवै । मूळ विभक्तिया तीन है—(१) पहली (२) दूसरी (३) तीसरी ।

(१२८) यौगिक विभक्तिया दूसरी अथवा तीसरी मूळ विभक्तिमे परसर्ग जोडनैसू बणै । अै परसर्ग द्राविडी भाषावा जिया दोना वचनामे अेकसा हुवै । यौगिव विभक्तिमा मुख्यकर पाच है—(१) चौथी (२) पाचवी (३) छठी (४) सातवी (८) आठवी ।

(१२९) इण विभक्तियारा उदाहरण इण मुजब है—

विभक्ति	अेकवचन	अनेकवचन
पहली	घोडो	घोडा
दूसरी	घोडा	घोडा
तीसरी	घोडँ	घोडा
चौथी	घोडानै, घोडँनै	घोडानै
पांचवी	घोडासू, घोडँसू	घोडासू
छठी	घोडारो, घोडँरो	घोडारो
सातवी	घोडामे, घोडँमे	घोडामे
आठवी	घोडा पर, घोडँ पर	घोडा पर

(१३०) नारीजातीय शब्दामे पहली तीनू विभक्तियारा रूप सरीखा हुवै —

(१) पहली रोटी — रोटिया
(२) दूसरी रोटी — रोटिया
(३) तीसरी रोटी — रोटिया

(१३१) नरजातिरा शब्दाम दूसरी और तीसरी विभक्तियारा रूप समान हुवै। जिया —

(१) पहली नर — नर माळी — माळी
(२) दूसरी नर — नरा माळी — माळिया
(३) तीसरी नर — नरा माळी — माळिया

(१३२) ओकारात नरजातिरा शब्दामे तीनू विभक्तियारा रूप न्यारा-न्यारा हुवै। जिया—

(१) पहली घोडो — घोडा
(२) दूसरी घोडा — घोडा
(३) तीसरी घोडै — घोडा

(१३३) पहली तीन विभक्तियारा प्रत्यय इण मुजब है—

(क) नरजातीय ओकारात शब्दामे—

(१) पहली ×́ — आ
(२) दूसरी आ — आ
(३) तीसरी अैं — आ

(ख) अन्य शब्दामें—

(१) अेकवचन मे कोई प्रत्यय नही लागै।
(२) अनेकवचनमे नारीजातीय शब्दामे अनेकवचनरा प्रत्यय तीनांहीज विभक्तियामे लागै, नरजातीय शब्दामे पहली विभक्ति मे कोई प्रत्यय नही लागै, दूसरी-तीसरी विभक्तियामे नारीजातिम लागै जकाहीज प्रत्यय लागै।

(१३४) तीनू विभक्तियारा प्रत्यय नीचै कोठामे बताया है—

		अेकवचन		अनेकवचन	
शब्द	विभक्ति	नर	नारी	नर	नारी
अकारात	१ २ ३	×	×	× आ ,,	आ ,, ,,
आकारात	१ २ ३	×	×	× वा, आ ,,	वा, आ ,, ,,
इ-ईकारात	१ २ ३	×	×	× इया, या ,,	इया,या ,, ,,
उ-ऊकारात	१ २ ३	×	×	× उवा, अवा ,,	उवा, अवा ,, ,,
अे-अैकारात	१ २ ३	×	×	× आ ,,	अेवा-अैआ ,, ,,
ओ-औकारात	१ २ ३	× × ×	× × ×	× ओवा ,,	ओवा-औवा ,, ,,
ओकारात (घोडा-वर्ग)	१ २ ३	× आ अैं	...	आ आ ,,	... ...

(१३५) पछली पाच विभक्तिया वणावण वास्तै दूसरी अथवा तीमरी विभक्तिरै आगै नीचे वताया परसर्ग लगायीजै —

(४) चौथी नै
(५) पाचवी सू
(६) छठी री
(७) सातवी म
(८) आठवी पर

(१३६) पुराणी भापा और वोलियामे नीचे वताया प्रत्यय भी पायी जै —

चौथी रहइ रइ रै को वू नू नइ भणी
पाचवी सउ सिउ स्यू सै हूंत थकी तै भणी
छठी वो चो नो दो जो नू
तणो हदो सदो केरो रहदो
सातवी मइ माय मा मैं मह माहे माहि माह महि
आठवी परि पइ पै माथै

(१३७) छठी और चौथी विभक्तियारै प्रत्ययारो मूळ अेक ही है—

छठी	चौथी	
रो	रै	
नो	नै	नू
को	कै	वू

(१३८) छठी विभक्ति विशेषण-आळी दाई काममे आवै। इण वास्तै इणरै प्रत्ययमे जाति और वचनरो भेद हुवै —

नरजाति अेकवचन — रो।
अनेकवचन — रा।

नारीजाति अेकवचन री
अनेकवचन री

(१३९) छठी विभक्तिरै आगै नरजातीय भेदक दूसरी, तीसरी आदि विभक्ति मे हुवै तो 'रो' री जागा 'रा' या 'रै' हुज्यावै। जिया—

राजा-रा घोडा पर,
राजा-रै घोडै पर।
किला-रा माथा पर,
किलै-रै माथै पर।

(१४०) छठी विभक्तिरै आगै नामयोगी शब्द आवै तो 'रो' री जागा 'रै' हुज्यावै। जियाँ—

म्हारै ऊपर।
घररै लारै।

पाठ १७

कारक

(१४१) कारक सज्ञारो सबध क्रियासू (अथवा कदे-कद दूदतसूं) बतावै ।

(१४२) राजस्थानी म आठ कारक है—(१) कर्ता (२) कर्म (३) करण (४) सप्रदान (५) अपादान (६) अधिकरण (७) सबध और (८) सबोधन ।

(१४३) सबोधन और सबध कारक (तथा कदे-कदे दूसरा कारक भी) सज्ञारो सबध क्रियासू नही बतावै । जिया—

म्हारो घर ।
म्हारै ऊपर ।
मैंसू आगै ।
मनै जोईजतो ।
घोड़ै चढियो ।

सबोधनरो सबध वाक्य मे दूजा किणी शब्दसू नही हुवै ।
सबधरो सबध नाम अथवा नामयोगीसू हुवै ।

(१४४) क्रियानै करै जको कर्त्ता । कर्त्ता कारकमें पहली, दूसरे तीसरी, अथवा पाचवी विभक्ति आवै । जिया—

घोड़ो घास कोनी खावै ।
घोडा घास कोनी खायो ।
घोड़ै घास कोनी खायो ।
घोडै-सू घास कोनी खायीजियो ।

(१४५) करीजै जको कर्म । कर्म मे पहली और चौथी विभक्ति ।ावै । जिया—

गाय वाटो खावै ।
गाय-सू वाटो खावीजै ।
गाय वाटै नै खावै ।

(१४६) क्रियारै करणरो साधन जको करण । करण कारकमे ांचवी (अथवा कदे-कदे तीसरी) विभक्ति आवै । जिया—

हाथ-सू कागद लिखियो ।
पाणी-सू स्नान कीधो ।
हाथा घडो भरियो ।

(१४७) जिणरै वास्तै क्रिया हुवै वो सप्रदान । सप्रदानमे चौथी ाभक्ति आवै । जिया—

राजा बामणा-नै दान दियो ।
सवार घोडै-नै पाणी पायो ।
विद्यार्थी गुरुजी-नै प्रणाम करै है ।

(१४८) जिणसू कोई चीज आघी हुवै वो अपादान । अपादानमे ांचवी विभक्ति आवै । जिया—

पेड-सू फूल भडिया ।
सिपाही घोडै-सू कूदियो ।
गुरूजी-सू विद्या पढसा ।
मैं माजी-सू दो रुपिया लिया ।

(१४९) जिणरै आधार (अर्थात् जिणरै माय अथवा ऊपर) कोई ाज रैवै वो अधिकरण । अधिकरणमे सातवी अथवा आठवी (तथा कदे-दे तीसरी) विभक्ति आवै । जिया—

भाई घर-मे गयो है ।
मोर पेड-पर बैठो है ।
हाकम घोडै चढ-नै आयो हो ।

(१५४) सबोधन कारक पुकारणमे वापरीजै। सबोधनमे दूसरी विभक्ति हुवै। जिया—

बैन ! बैना !
राजा ! राजा !
घोडा ! घोडा !
माळी ! माळिया !

(१५५) सबोधन कारकरै पहली प्रायकर हे ओ अे अरे आदि अव्यय जोड दिया करै है।

(१५६) नामयोगी अव्यय शब्दारै साथै सज्ञामे छठी, तीसरी और कदे-कदे पाचवी विभक्ति आवै। जिया—

छठी— घररै लारै
घोडारै ऊपर (घोडैरै माथै)
नदियारै माय
बामणारै वास्तै
म्हारै विचाळै।

पाचवी— हवासू आगै,
लडाईसू दूर,
पाणीसू परै।

तीसरी— घर लारै,
घोडै ऊपर,
नदिया माय
बामणा वास्तै
म्हा विचाळै।

(१५७) कदे-कदे दूसरी विभक्ति भी आवै जिया—

घोडा ऊपर,
घोडा पाछै
घोडा लैर
कमरा माय।

(१५८) कुण सैं कारकमें कुण सी विभक्ति आवै आ बात नीचे म वतायी है—

कारक	विभक्ति
कर्ता	पहली तीसरी पाचवी
कम	चौथी पहली
सप्रदान	चौथी
करण	पाचवा तीसरी
अपादान	पाचवी
अधिकरण	सातवी आठवी तीस
सवध	छठी
सवोधन	दूसरी

(१५८) कुण सी विभक्ति कुण-सा कारकाम आवै आ काठाम वताया है—

विभक्ति	कारक
पहली	कत्ता कम
दूसरी	सवोधन
तीसरी	कत्ता करण अधिक
चौथी	कम सप्रदान
पाचवीं	करण अपादान
छठी	सवध
सातवीं	अधिकरण
आठवी	

पाठ १८

शब्दांरा रूप

(१६०) नाम-शब्दारा रूप—

(१) नरजातीय अकारात शब्द (२) नारीजातीय अकारान्त शब्द

	नर		गाय	
	एक	अनेक	एक	अनेक
पहली	नर	नर	गाय	गाया
दूसरी	नर	नरा	गाय	गाया
तीसरी	नर	नरा	गाय	गाया
चौथी	नर-नै	नरा-नै	गाय-नै	गाया-नै
पांचवीं	नर-सू	नरा-सू	गाय-सू	गाया-सू
छठी	नर-रो	नरा-रो	गाय-रो	गाया-रो
सातवीं	नर-मे	नरा-मे	गाय-मे	गाया-मे
आठवीं	नर पर	नरा पर	गाय पर	गाया पर

(३) नरजातीय आकारात शब्द (४) नारीजातीय आकारात शब्द

(१५८) कुण-में कारकम कुण सी विभक्ति आवै आ बात नीचै कोठा-म बतायी है—

कारक	विभक्ति
कर्त्ता	पहली, तीसरी, पाचवी
कर्म	चोथी, पहली
सम्प्रदान	चोथी
करण	पाचवी, तीसरी
अपादान	पाचवी
अधिकरण	सातवी, आठवी, तीसरी
सबध	छठी
सबोधन	दूसरी

(१५९) कुण-सी विभक्ति कुण-सा कारकामे आवै आ बात नीचै कोठाम बतायी है—

विभक्ति	कारक
पहली	कर्त्ता, कर्म
दूसरी	सबोधन
तीसरी	कर्त्ता, करण, अधिकरण
चोथी	कर्म, सम्प्रदान
पाचवी	करण अपादान
छठी	सबध
सातवी	अधिकरण
आठवी	"

पाठ १८

शब्दांरा रूप

(१६०) नाम-शब्दारा रूप—

(१) नरजातीय अकारांत शब्द — नर

(२) नारीजातीय अकारान्त शब्द — गाय

	नर एक	नर अनेक	गाय एक	गाय अनेक
पहली	नर	नर	गाय	गायां
दूसरी	नर	नरां	गाय	गायां
तीसरी	नर	नरां	गाय	गायां
चौथी	नर-नै	नरां-नै	गाय-नै	गायां-नै
पांचवीं	नर-सूं	नरां-सूं	गाय-सूं	गायां-सूं
छठी	नर-रो	नरां-रो	गाय-रो	गायां-रो
सातवीं	नर-में	नरां-में	गाय-में	गायां-में
आठवीं	नर पर	नरां पर	गाय पर	गायां पर

(३) नरजातीय आकारांत शब्द — राजा

(४) नारीजातीय आकारांत शब्द — मा

	राजा		मा	
१	राजा	राजा	मा	मावां
२	राजा	राजावां, राजां	मा	मावां
३	राजा	राजावां, राजा	मा	मावां
४	राजानै	राजावांनै, राजांनै	मानै	मावांनै
		इत्यादि		इत्यादि

(५) नरजातीय इकारांत शब्द		(६) नारीजातीय इकारांत शब्द	
पति		गति	
१ पति	पति	गति	गतिया
२ पति	पतिया	गति	गतिया
३ पति	पतिया	गति	गतिया
४ पतिनें	पतियानें	गतिनें	गतियानें
	इत्यादि		इत्यादि

(७) नरजातीय ईकारांत शब्द		(८) नारीजातीय ईकारांत शब्द	
माळी		काकी	
१ माळी	माळी	काकी	काकिया
२ माळी	माळिया	काकी	काकिया
३ माळी	माळिया	काकी	काकिया
४ माळीनें	माळियानें	काकीनें	काकियानें
	इत्यादि		इत्यादि

(९) नरजातीय उकारांत शब्द		(१०) नारीजातीय उकारांत शब्द	
साधु		रितु	
१ साधु	साधु	रितु	रितवा
२ साधु	साधवा	रितु	रितवा
३ साधु	साधवा	रितु	रितवा
४ साधुनें	साधवानें	रितुनें	रितवानें
	इत्यादि		इत्यादि

(११) नरजातीय ऊकारांत शब्द		(१२) नारीजातीय ऊकारांत शब्द	
भालू		वऊ	
१ भालू	भालू	वऊ	वउवा
२ भालू	भालुवा	वऊ	वउवा
३ भालू	भालुवा	वऊ	वउवा
४ भालूनें	भालुवानें	वऊनें	वउवानें ।
	इत्यादि		इत्यादि

(१३) नरजातीय अेकारात शब्द			(१४) नारीजातीय अेकारात शब्द	
	दुवे		से	
१	दुवे	दुव	से	सेआ
२	दुवे	दुवेआ (दुवा)	से	सेआ
३	दुन	दुवेआ (दुवा)	से	सेआ
४	दुवेनं	दुवेआनं (दुवानं)	सेनं	सेआनं
		इत्यादि		इत्यादि

(१५) नरजातीय ओकारात शब्द			(१६) नारीजातीय अंकारात शब्द	
	खो		जं	
१	खो	खो	जं	जंआ
२	खो	खोआ	जं	जंआ
३	खो	खोआ	जं	जंआ
४	खोनं	खोआनं	जंनं	जंआनं
		इत्यादि		इत्यादि

(१७) नरजातीय औकारात शब्द		
	जौ	
१	जौ	जौ
२	जौ	जौआ
३	जौ	जौआ
४	जौनं	जौआनं
		इत्यादि

(१८) नरजातीय ओकारात शब्द (घोडा-वर्ग)*				
	घोडो		तारो	
१	घोडो	घोडा	तारो	तारा
२	घोडा	घोडा	तारा	तारा
३	घोडै	घोडा	तारै	तारा
४	घोडानं / घोडैनं	घोडानं	तारानं / तारैनं	तारानं

* अै शब्द हिन्दी मे आकारात हुवै (घोडा, तारा इत्यादि)।

(१६१) सर्वनामारा रूप

	(१) हूँ*			(२) तूँ†	
१ हूँ	म्हे,	आपा	तूँ	थे,	आप
३ मैं	म्हा,	आपा	तैं	था,	आप
४ मनै	म्हानैं,	आपानैं	तनै	थानैं,	आपनैं
५ मैंसू	म्हासू,	आपासू	तैंसू	थासू,	आपसूं
६ म्हारो	म्हांरो,	आपारो	थारो	थारो,	आपरो
७ मैंमे	म्हामे,	आपामे	तैंमे	थामे,	आपमें
८ मैं पर	म्हा पर,	आपा पर	तैं पर	था पर,	आप पर

(३) बो		(४) ओ	
१ बो	वो (नर)	ओ	अै
बा	बैं (नारी)	आ	अै
३ बैं, बैं, बण	बा	अैं, अैं, अण	आ
४ बैं-नै	बानैं	अैं-नै	आ-नैं
५ बैं-सू	बासू	अैं-सू	आ-सू
६ बैं-रो	बा-रो	अैं-रो	आं-रो
७ बैं-मे	बा-मे	अैं-मे	आ-मे
८ बैं पर	बा पर	अैं पर	आ पर
अथवा		अथवा	
३ उण	उणां	इण	इणां
४ उणनैं	उणानैं	इणनैं	इणानैं'
	इत्यादि		इत्यादि

---

* पाचवी, सातवी तथा आठवी विभक्तियामे म्हारैंसू, म्हारैंमे, म्हारैं पर तथा म्हारैंसू, म्हारैंमे, म्हारैं पर रूप भी हुवैं ।

† पांचवी, सातवी, आठवी विभक्तियामे थारैंसू, थारैंमे, थारैं पर तथा थारैंसू, थारैंमे, थारैं पर रूप भी हुवैं ।

अथवा		अथवा	
३ वीं	विया	ईं	इया
४ वींनै	वियानै	ईंनै	इयानै
	इत्यादि		इत्यादि

अथवा	
१ ऊ	वै, उवै
३ ऊ	वा, उवा
४ ऊ-नै	वा-नै, उवा-नै
	इत्यादि

(५) कोई

१ कोई	काई
३ कोई, कैई	कोई, कोया
४ कोई-नै, कैई-नै, किणीनै	कोई-नै, कायानै
	इत्यादि

(६) कुण   (७) काई

१ कुण	कुण	काई
३ कण, कैं	किणा	क्या
४ किणनै, कैंनै	किणानै	क्यानै
५ किणसूं, कैंसूं	किणासूं	क्यासूं

(८) जो   (९) सो

१ जो	जो	सो	सो
३ जै	ज्या	तै	त्या
४ जैनै	ज्यानै	तैनै	त्यानै
	इत्यादि		इत्यादि

अथवा

३ जी	ज्या
४ जीनै	ज्यानै
	इत्यादि

अथवा		अथवा	
३ जिण	जिणा	तिण	तिणा
४ जिणनै	जिणानै	तिणनै	तिणानै
	इत्यादि		इत्यादि

जिको (जको)		तिको	
१ जिका (नर) / जिका (नारी)	जिका, जिकै	निका (नर) / तिका (नारी)	तिका, तिकै
३ जिका / जिकै	जिका	तिका / तिकै	तिका
४ जिकानै / जिकैनै	जिकानै	तिकानै / तिकैनै	निकानै
	इत्यादि		इत्यादि

जिकी (जकी)		तिकी	
१ जिकी	जिक्या	तिकी	तिक्या
३ जिकी	जिक्या	तिकी	निक्या
३ जिकीनै	जिक्यानै	निकीनै	निक्यानै

पाठ १६

संज्ञारो पद-परिचय

(१६२) नामरो पद-परिचय—

(१) भेद (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक)

(२) जाति (नरजाति, नारीजाति)

(३) वचन (अेकवचन, अनेकवचन)

(४) विभक्ति (पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पाचवी, छठी, सातवी, आठवी)

(५) कारक (कर्ता, कर्म, करण, सप्रदान, अपादान, सबध, अधिकरण, सबोधन)

(६) सबध—कारकरै अनुसार

१ फलाणी क्रियारो या कृदतरो कर्ता, कर्म, करण आदि।

२ फलाणी क्रियारो या कृदतरो पूरक।

३ फलाणै नामरो समानाधिकरण।

४ सबध कारक हुवै तो फलाणै भेद्यरो भेदक।

५ सबोधन कारक हुवै तो सबध नही बतायीजै।

(१६३) सर्वनामरो पद-परिचय—

(१) भेद (पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, सबधवाचक)

(२) पुरुष (उत्तम, मध्यम, अन्य)

(३) जाति (४) वचन (५) विभक्ति (६) कारक (७) सबध।

टिप्पणी—सर्वनाम मे सबोधन कारक नही हुवै।

बैठी — सज्ञा, भूत कृदंत विशेषण, नारीजाति, अकवचन, मक्डी विशेष्यरी विशेषता वतावै ।

इण — सज्ञा सार्वनामिक विशेषण, नरजाति अेकवचन, माछर विशेष्यरी विशेषता वतावै ।

अभिमानी — सज्ञा, गुणवाचक विशेषण, नरजाति, अेकवचन, माछर विशेष्यरी विशेषता वतावै ।

(४)

म्हारो भाई रामदास पाठशालाम अध्यापक है ।

म्हारा — सज्ञा पुरषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरष, अनेकवचन, छठी विभक्ति, सबधकारक, भाई भेदरो भेदक ।

भाई — सज्ञा, जातिवाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, कर्ता कारक, है कियारो कर्ता ।

रामदास — सज्ञा, व्यक्तिवाचक नाम, नरजाति, अेकवचन, पैली विभक्ति, कर्ता कारक, भाई सज्ञारा समानाधिकरण, है कियारा कर्ता ।

अध्यापक — सज्ञा, जातिवाचक, नरजाति, अेकवचन, पहली विभक्ति, है क्रियारो पूरक ।

पाठ २०

क्रिया

(१६६) कामरो हुवणो अथवा करीजणो वतावै जको शब्द क्रिया कहीजै।

(१६७) त्रियारै अन्तमे णो (अथवा बो) हुवै। णो-सू पैली ड, ळ वा ण हुवै तो णो-रो नो हुज्यावै। जिया—

(क) करणो उठणो चालणो
करबो उठवा चालबो

(ख) लडनो पाळनो जाणनो
लडबो पाळवो जाणबो

(१६८) त्रियारै णो-सहित रूपनै क्रियारो साधारण रूप कैवै।

(१६९) क्रियारै णो-रहित रूप नै धातु कैवै। जिया—कर उठ चाल लड पाळ जाण।

(१७०) धातु दो प्रकाररी हुवै—(१) व्यजनात, (२) स्वरात।

(१७१) अकारात धातुनै व्यजनात कैवै, कारण उणरै अतरै अकाररो उच्चारण नही हुवै। जिया—कर उठ बण लिख जाण भूल।

(१७२) अकारनै टाळनै बाकी कोई स्वर अतमे आवै बा धातु स्वरात कहीजै। जिया—आ जा खा पी सी ले दे कै रै जो।

(१७३) स्वरान्त धातुसू त्रियारो सामान्य रूप वणावै जद णो-रै पूर्व व रो आगम विकळपसू हुवै। जिया—

आवणो पीवणो लेवणो कैवणो जोवणो।
आणो पीणो लेणो कैणो जोणो।
आवो पीबो लेवो कैवो जोवो।

पाठ २१

क्रियारा भेद

(१७४) क्रियारा दो भेद हुवै—(१) सकर्मक, (२) अकर्मक।

(१७५) जठै क्रियारो व्यापार कर्त्तामें, और क्रियारो फळ कर्ममें, उठै सकर्मक, तथा जठै क्रियारो व्यापार और फळ दोनूं कर्त्तामें रैवै अकर्मक हुवै।

(१७६) शरीररै अगारी (अथवा मन-सहित इन्द्रियारी) चेष्टाव व्यापार कैवै। जिया—

(१) हाथी उठियो।

अठै हाथी पगासूं ऊभो हुवणरी चेष्टा करी।

(२) बाळक रोटी जीमियो।

अठै बाळक रोटीनै मूंढैमें घालणरी और मूंढैमें दांता चवावणरी चेष्टा करी।

(३) गजराज देवकरणनै पटकियो।

अठै गजराज देवकरणनै उठा'र फेंकणरी चेष्टा करी।

(४) गोपाळ बजारसूं फळ लायो।

अठै गोपाळ बजार जावणरी, बठैसूं फल लेवणरी और उठायनै लावणरी चेष्टावा करी।

(५) गोदावरी चाली।

अठै गोदावरी पगासूं चालणरी चेष्टा करी।

(६) माळी पेड सींच्यो।

अठै माळी पाणी लावणरी और पेडरै थाळैमें नाखणरी चेष्टावा करी।

१७७) चेप्टारै परिणामनै फळ कथै। जिया—

(१) वामण रोटी पकायी।

अठै वामण रोटीनै आग पर नाखण और उणनै उथळण आदिरी चेप्टावा करी जद रोटी पकी। पकणो फळ है।

(२) गजराज देवकरणनै पटकियो।

अठै गजराजरी चेप्टारा फळ ओ हुयो कै देवकरण जमी माथै पडियो। जमी माथै पडनो अर्थात पटकीजणो फळ है।

(३) माळी पेड सीच्यो।

अठै माळीरी चेप्टारो ओ फळ हुयो के पेड सींचीजियो। सींचीजणो फळ है।

(४) गोपाळ वजारसू फळ लायो।

अठै गोपाळरी चेप्टावारो ओ फळ हुयो कै फळ बजार सू घरमे आया। फळारो वजारसू आवणो अर्थात लायीजणो फळ है।

(५) गोदावरी चाली।

अठै गोदावरीरी चेप्टारो ओ फळ हुयो कै गोदावरी अेक स्थानसू दूसरै स्थान ताईं गयी अर्थात गोदावरी सू चालीजियो। चालीजणो फळ है।

(६) हाथी उठियो।

अठै हाथीरी चेप्टारो ओ परिणाम हुयो कै हाथी ऊभो हुयो। हाथीरो ऊभो हुवणो फळ है।

(१७८) (१) वामण रोटी पकायी।

अठै चेप्टा करी वामण, अत व्यापार कर्तामे है। चेप्टारै फळस्वरूप रोटी पकी, पकणो फळ रोटीमे हुयो।

(२) रामू किसननै मारियो।

अठै मारणरी चेप्टा करी रामू, और मारीजणो फल मिलियो किसननै।

(३) माळी रूख सींचै ।

अठै सींचणरो व्यापार माळी करै, और फळ सींचीजणो पेडनै मिलै ।

पकावणो, मारणो, सींचणो, इण क्रियावामे व्यापार कर्त्तामे और फळ कर्ममे रैवे, इण वास्तै अै सकर्मक है ।

(१७६) (१) गगा उठी ।

अठै उठणरी चेष्टा गगा करै और उठीजणो फळ भी गगानै ही मिलै, अत व्यापार और फळ दोनू कर्त्तामे है ।

(२) राधा चालै ।

अठै चालणरो व्यापार राधा करै और अेक स्थानसू दूसरै स्थान ताई पूगणो फळ भी राधानै ही मिलै ।

(३) मजूर घरमे वडियो ।

अठै घरमे वडनरो व्यापार मजूर करियो और घरमे वडीजणो ओ फळ भी मजूरनै ही मिलियो ।

उठणो, चालणो, वडनो, इण क्रियावामे व्यापार और फळ दोनू ही कर्त्तामे रैवै, इण वास्तै अै अकर्मक है ।

पाठ २२

पूर्ण और अपूर्ण क्रिया

(१८०) क्रिया कदे पूर्ण हुवै, कदे अपूर्ण ।

(१८१) पूर्ण क्रियामे अर्थ पूरो हुवै, अर्थात अर्थ पूरो करण वास्तै और शब्दरी आवश्यकता नही हुवै । जिया—

(१) राजा उठियो ।

(२) राजा बामणनै दान दियो ।

(१८२) अपूर्ण क्रियामे अर्थ पूरो नही हुवै, अर्थात अर्थ पूरो करण वास्तै और शब्दरी आवश्यकता हुवै, सकर्मक क्रियामे कर्म हुता थका भी अर्थ अधूरो भासै । जिया—

(१) राजा बणियो ।

काई बणियो ? राजा भिखारी बणियो ।

(२) राजा बामणनै बणायो ।

काई बणायो ? राजा बामणनै सेनापति बणायो ।

(१८३) है क्रिया पूर्ण और अपूर्ण दोनू है—

(१) ईश्वर है । अर्थात ईश्वर रो अस्तित्व है ।

(२) ईश्वर है । ईश्वर काई है ? ईश्वर अज्ञेय है ।

(१८४) अपूर्ण क्रियारो अर्थ पूरो करै जका शब्दानै पूरक कवै ।

(१८५) कर्म, सम्प्रदान और क्रियाविशेषण पूरक नही कहीजै ।

(१८६) कर्ता और कर्म भिन्न पदार्थ हुवै, पण पूरक और कर्ता भिन्न पदार्थ नही हुवै, सकर्मक क्रिया मे कर्म और पूरक अभिन्न हुवै ।

(१) रामू बींद बणियो ।

अठै रामू और बींद भिन्न भिन्न व्यक्ति नही, रामू ही बींद है ।

(२) राजा बामणनैं सेनापति वणायो ।

अठै बामण और सेनापति न्यारा-न्यारा व्यक्ति नहीं, बामण ही सेनापति है ।

(३) गोमती रोटी-नैं खायी ।

अठै गोमती और रोटी न्यारा-न्यारा पदार्थ है, गोमती रोटी नहीं है ।

पाठ २३

वाच्य

(१८७) वाच्य आ वात वतावें के क्रियारो कर्ता (अथवा कर्ता और कर्म) किसी विभक्तिमे है।

(१८८) वाच्य तीन है—(१) कर्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाववाच्य।

(१८९) कर्ता पैली अथवा दूसरी विभक्ति मे हुवें जद कर्तृवाच्य।

घास ऊगे है।
विद्यार्थी पढतो हो।
विद्यार्थी पोथी वाचे है।
राम रावणनै मारियो।
घोडे घास खायो।

(१९०) कर्ता पाचवी और कम पैली विभक्ति मे हुवै जद कर्मवाच्य। कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया मे ही हुवै।

रामसू रावण मारीजियो।
घोडेसू घास खायीजियो।
विद्यार्थीसू पोथी वाचीजी।

(१९१) अकर्मक क्रियारो कर्ता पाचवी विभक्ति मे हुवै जद भाववाच्य।

घाससू ऊगीजियो।
विद्यार्थीसू चढीजियो।
मैंसू आयीजियो।

(१९२) भाववाच्य प्राय करनै निषेधात्मक वाक्यमे (अर्थात् नही, कोनी आदि शब्दारै साथ) आवै—

थारासू कोनी आयीजियो।
मैंसू रोटी नही खायीजै।
गायसू उठीजियो कोनी।

पाठ २४

प्रयोग

(१६३) प्रयोग बतावै कै क्रिया किणरै अनुसार हुवै अर्थात क्रियारा वचन, जाति और पुरषमें किणरै अनुसार परिवर्तन हुवै ।

(१६४) प्रयोग तीन हुवै—(१) कर्तरि प्रयोग (२) कर्मणि प्रयोग (३) भावे-प्रयोग ।

(१६५) क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै जद कर्तरि प्रयोग—

वचन—	घोडो भाग्यो ।	घोडा भाग्या ।
	तू जासी ।	थे जासो ।
	वैन काम करती ही ।	वैना काम करती ही ।
जाति—	घोडो कूदियो ।	घोडी कूदी ।
	हू काम करै हो ।	हू काम करै ही ।
पुरुष—	वो करै । तू करै ।	हू करू ।
	वै जासी । थे जासो ।	म्हे जासा ।

(१६६) क्रिया कर्मरै अनुसार हुवै जद कर्मणि प्रयोग । कर्मणि प्रयोग कर्मवाच्यमें, तथा जिण काळारा रूप भूतकृदन्त सूं बणै उण काळांमें कर्तृवाच्य में भी, हुवै ।

(क) कर्मवाच्य—

छोरासू आबो खायीजियो ।

छोरासू आबा खायीजिया ।

छोरासू रोटी खायीजी ।

(ख) कर्तृवाच्य—

छोरै आबो खायो ।	छोरा आबो खायो ।
छोरै आबा खाया ।	छोरा आबा खाया ।

छोरै रोटी खायी। छोरा रोटी खायी।

छोरी आबो खायो। छोरिया आबो खायो।
छोरी आबा खाया। छोरिया आबा खाया।
छोरी रोटी खायी। छोरिया रोटिया खायी।

(१६७) क्रिया कर्ता और कर्म दोनारै ही अनुसार नही हुवै, पण बराबर अेकवचन, नर-जाति, अन्य-पुरुष बणी रैवै, जद भावे-प्रयोग। भावे-प्रयोग भाववाच्य मे हुवै।

म्हासू कोनी आयीजै।
तैसू कोनी उठीजैला।
उणसू नीचै कोनी उतरीजियो।

पाठ २५

अर्थ

(१६८) अर्थ बतावै कै क्रिया किसो भाव सूचित करै है।

(१६६) अर्थ पाच हुवै—(१) निश्चयार्थ (२) आज्ञार्थ (३) सभावनार्थ (४) सदेहार्थ (५) सकेतार्थ।

(२००) आज्ञारो भाव पायीजै जद आज्ञार्थ—

तू जा। थे जावो।

तू काल आये। थे काल आयीजो।

(२०१) सभावना, इच्छा, आशीर्वादरो भाव पायीजै जद सभावनार्थ—

हू जाऊ। म्हे ओ काम करा।

तू फळै-फूळै। थे सुख पावो।

स्यात् बो घरे जावै। कदास वै आज आ ज्यावै।

(२०२) सदेहरो भाव पायीजै जद सदेहार्थ—

पुजारी पूजा करतो हूसी।

भाई दुकान गयो हुसी।

(२०३) जद ओ भाव पायीजै कै अेक काम हुवै तो दूसरो हुवै, अर्थात अेक कामरो हुवणो दूसरै कामरै हुवण माथै आश्रित रैवै, जद सकेतार्थ—

विद्यार्थी पढतो तो पूजीजतो।

रोटिया करी हुती तो जीमता।

मे बरससी तो खेती हुसी।

आटो लावै तो रसोई हुवै।

(२०३) कोई विशेष भाव नही हुवै और कोरी बात कहीजै जद निश्चयार्थ—

विद्यार्थी पढै है।

मेह बरसियो।

परीक्षा हुसी।

(२०५) तीनू काळामे अै पाचू अर्थ हुवै पण पाचू अर्थारा न्यारा-न्यारा रूप तीनू काळामे नहीं हुवै । जिण अर्थरा न्यारा रूप नही हुवै उण अर्थनै बतावण वास्तै दूसरा किणी अर्थरा रूप वापरीजै । जियां—

वर्तमान-काळमे सकेतार्थ—
आटो लावै तो रसोई करा ।
पढै तो पास हुवै ।

भविष्यकाळ मे सकेतार्थ—
पढसी तो पास हुसी ।

भविष्यकाळ मे सदेहार्थ—
रामू कदाचित् रोटी लासी ।

(२०६) किसा अर्थ मे किसा-किसा काळारा रूप बणै आ बात नीचै सारणीमे बतायी है—

अर्थ	भविष्य	वर्तमान	भूत
निश्चय	सामान्य-भविष्य	सामान्य-वर्तमान	सामान्य-भूत
	×	×	आसन्न भूत
	×	×	अपूर्ण-भूत
	×	×	पूर्ण-भूत
सभावना	सभाव्य-भविष्य	सभाव्य-वर्तमान	सभाव्य-भूत
सदेह	×	सदिग्ध-वर्तमान	सदिग्ध-भूत
सकेत	×	×	सामान्य-सकेत भूत
	×	×	अपूर्ण-सकेत भूत
	×	×	पूर्ण-सकेत भूत
आज्ञा	आज्ञा भविष्य	आज्ञा-वर्तमान	×

(२०७) किसा काळामे किसा किसा अर्थारा रूप हुवै आ बात नीचै सारणीमे बतायी है—

काळ		निश्चय	सकेत	सभावना	सदेह	आज्ञा
भूत	सामान्य	सामान्य-भूत	सकेत-भूत	सभाव्य-भूत	सदिग्ध भूत	×
	अपूर्ण	अपूर्ण-भूत	अपूर्ण-सकेत-भूत	×	×	×
	पूर्ण	पूर्ण-भूत	पूर्ण-सकेत-भूत	×	×	×
	आसन्न	आसन्न-भूत	×	×	×	×
वर्तमान	सामान्य	सामान्य-वर्तमान	× ×	सभाव्य-वर्तमान	सदिग्ध वर्तमान	आज्ञा-वर्तमान
भविष्य	सामान्य	सामान्य-भविष्य	×	सभाव्य-भविष्य	×	आज्ञा-भविष्य

पाठ २६

काळ

(२०८) काळ क्रियारै हुवणरो समय वतावै ।

(२०९) मुख्य काळ तीन है—(१) भूत (२) वर्तमान (३) भविष्य ।

(२१०) बीत चूको बो भूत-काळ । जिया—
वादळ वरसियो ।

(२११) अबार चालै बो वर्तमान-काळ । जिया—
वादळ वरसै है ।

(२१२) अबै आसी बो भविष्य-काळ । जिया—
वादळ वरसैला ।

(२१३) राजस्थानी व्याकरणमे भूतकाळरा ९, वर्तमानरा ४ तथा भविष्यरा ३ भेद हुवै । इण तरा सारा काळ १६ हुवै ।

(२१४) भूतकाळरा भेद—

१ निश्चयार्थ—	१ सामान्य-भूत	वादळ वरसियो
	२ आसन्न-भूत	वादळ वरसियो है
	३ पूर्ण-भूत	वादळ वरसियो हो
	४ अपूर्ण-भूत	वादळ वरसतो हो
२ सभावना अर्थ —	५ सभाव्य-भूत	वादळ वरसियो हुवै
३ सदेहार्थ—	६ सदिग्ध भूत	वादळ वरसियो हुसी
४ सकेतार्थ—	७ सकेत-भूत	वादळ वरसतो
	८ सकेत भूत	वादळ वरसतो हुतो
	९ पूर्ण-भूत	वादळ वरसियो हुतो

(२१५) वर्तमान-काळरा भेद

१ सामान्यार्थ—	१ सामान्य-वर्तमान	बादळ बरसै है
२ सभावनार्थ—	२ सभाव्य-वर्तमान	बादळ बरसतो हुवै
३ सदेहार्थ—	३ संदिग्ध-वर्तमान	बादळ बरसतो हुसी
४ आज्ञार्थ—	४ आज्ञा-वर्तमान	बादळ ! तू बरस

(२१६) भविष्य-काळरा भेद—

१ सामान्यार्थ—	१ सामान्य-भविष्य	बादळ बरसैला
२ सभावनार्थ—	२ सभाव्य-भविष्य	बादळ बरसै
३ आज्ञार्थ—	३ आज्ञा भविष्य	बादळ ! तू बरस्ये बादळ ! तू बरसीजे बादळ ! तू बरसजे

(२१७) सामान्य-भूत—जद ओ निश्चय नही हुवै कै काम थोडी वार पैली पूरो हुयो कै घणी वार पैली ।

आसन्न-भूत—बतावै कै काम अबार, थोडी वार पैलीज, पूरो हुयो है ।

पूर्ण-भूत—बतावै कै काम घणो पैली हुयो हो ।

अपूर्ण-भूत—बतावै कै काम आरभ हो चूको हो पण पूरो नही हुयो हो ।

सकेत-भूत—आ बात बतावै कै अेक काम हुतो तो दूसरो हुतो ।

सामान्य-वर्तमान—बतावै कै काम हुवै है अथवा हुया करै है ।

सामान्य भविष्य—बतावै कै काम हाल आरभ नही हुयो, आगै हुसी ।

सभाव्य-भूत—भूतकाळमे कामरै हुवणरी सभावना बतावै ।

सभाव्य-वर्तमान—वर्तमानमें कामरै हुवणरी, संभावना वतावै।

सभाव्य-भविष्य—भविष्यमे कामरै हुवणरी सभावना अथवा इच्छा वतावै।

सदिग्ध-भूत—भूतकाळमे कामरै हुवणमे सदेह वतावै।

सदिग्ध-वर्तमान—वर्तमानमे कामरै हुवणमे सदेह वतावै।

आज्ञा-वर्तमान—मे अबार काम करणरी आज्ञा पायीजै।

आज्ञा-भविष्य—मे भविष्यमे काम करणरी आज्ञा पायीजै।

(२१८) सभाव्य-भविष्य अपभ्रशरा सामान्य-वर्तमानसूं वणियो है इण वास्तै घणी वार सामान्य-वर्तमानरा अर्थमे भी आवै।

(२१९) आज्ञारा दोनू काळ मध्यम-पुरुषमे ही हुवै।

(२२०) तात्काळिक वर्तमान-काळ और तात्काळिक भूत-काळरो प्रयोग घणो कम हुवै, उणा-री जागा प्राय-कर सामान्य-वर्तमान और अपूर्णभूत वापरीजै।

पाठ २७

क्रियारी रूप-साधना

(२२१) रूप-साधनारी दृष्टिसू काळारा तीन विभाग करीजै—

(१) जका धातुरै आगै प्रत्यय लगाणैसू वणै।

(२) जका वर्तमान-कृदन्तसू वणै।

(३) जका भूत-कृदन्तसू वणै।

(२२२) काळारा प्रत्यय इण भात है—

विभाग १

काळ	पुरुष	प्रत्यय	
		अेकवचन	अनेकवचन
(१) आज्ञा-वर्तमान	मध्यम	×	ओ
(२) आज्ञा-भविष्य	,,	इये ये जे ईजे	इया या जो ईजो
(३) सभाव्य-भविष्य	अन्य मध्यम उत्तम	अै अै ऊ	अै ओ आ
(४) सामान्य-भविष्य (२)	अन्य मध्यम उत्तम	अैला अैला ऊला	अैला ओला आला
(३) सामान्य-भविष्य (१)	अन्य मध्यम उत्तम	सी सी सू	सी सो सा

(६) सामान्य-वर्तमान	अन्य	अँ है	अँ है
	मध्यम	अँ है	ओ हो
	उत्तम	ऊ हू	आ हा
(७) अपूर्ण-भूत (१)	तीनू पुरुप		
	(नर जाति)	अँ हो	अँ हा
	(नारी जाति)	अँ ही	अँ ही

विभाग २

काळ	जाति	प्रत्यय	
		अेकवचन	अनेकवचन
(१) सकेत-भूत	नर-जाति	तो	ता
	नारी-जाति	ती	ती, त्या
(२) अपूर्ण-सकेत-भूत	नर	तो हुतो	ता हुता
	नारी	ती हुती	ती हुती
(३) अपूर्ण-भूत (२)	नर	तो हो	ता हा
	नारी	ती ही	ती ही
(४) सभाव्य-वर्तमान	नर	तो हुवै	ता हुवै
		तो हुवै	ता हुवो
		तो हुऊ	ता हुवा
	नारी	ती हुवै	ती हुवै
		ती हुवै	ती हुवो
		ती हुऊ	ती हुवा
(५) सदिग्ध-वर्तमान	नर	तो हुसी	ता हुमी
		तो हुमी	ता हुसो
		तो हुसू	ता हुसा
	नारी	ती हुसी	ती हुमी
		ती हुसी	ती हुसो
		ती हुसू	ती हुसा

विभाग ३

१ सामान्य-भूत	नर नारी	इयो, यो ई	इया, या ई
२ पूर्ण-भूत	नर नारी	इयो हो ई ही	इया हा ई ही
३ पूर्ण-सकेत-भूत	नर नारी	इयो हुतो ई हुती	इया हुता ई हुती
४ आसन्न-भूत	नर नारी	इयो है ई है	इया है ई है
५ सभाव्य-भूत	नर नारी	इयो हुवै ई हुवै	इया हुवै ई हुवै
६ सदिग्ध-भूत	नर नारी	इयो हुसी ई हुसी	इया हुसी ई हुसी

(२२३) नीचे बताया ५ काळामे वचन और पुरुषरै अनुसार रूप-भेद हुवै—सामान्य-भविष्य, सभाव्य-भविष्य, सामान्य-वर्तमान, आज्ञा-भविष्य, आज्ञा-वर्तमान ।

(२२४) नीचे बताया १९ काळामे वचन और जातिरै अनुसार रूप-भेद हुवै—अपूर्ण-भूत (१) तथा (२), सकेत-भूत, अपूर्ण-सकेत-भूत, सामान्य-भूत, पूर्ण-भूत, आसन्न-भूत, सभाव्य-भूत, सदिग्ध-भूत, पूर्ण-सकेत-भूत ।

(२२५) नीचे बताया दो काळामे वचन, जाति और पुरुष तीनारै अनुसार रूप-भेद हुवै—सभाव्य-वर्तमान, सदिग्ध-वर्तमान ।

(२२६) ऊपर बताया प्रत्यय धातुरै आगै जुडै ।

(२२७) धातु दो तरारा हुवै—

(१) व्यजनान्त, जकारै अन्त मे अनुच्चरित अ हुवै। जिया—कर उठ चाल वण मान लाभ वंस।

(२) स्वरान्त जकारै अन्त म अ टाळनै दूजा स्वर हुवै। जिया—आ पी सू दे जो।

(२२८) कई धातु स्वरान्त और व्यजनान्त दोनू हुवै। जिया—

कै और कह।
रै और रह।
सै और सह।
वै और वह।

(२२९) व्यजनान्त धातुरै आगै स्वरादि अथवा यकारादि प्रत्यय जुडै जद अन्तिम अनुच्चरित अ रो सर्वथा लोप हु ज्यावै, व्यजनादि प्रत्यय हुवै तो लोप नही हुवै—

फिर+इये=फिरिये।
फिर+इयो=फिरियो।
फिर+ये =फिरये।
फिर+यो =फिरयो।
फिर+अै =फिरै।

फिर+तो =फिरतो।
फिर+जे =फिरजे।

(२३०) स्वरान्त धातुरै आगे इकारादि प्रत्यय लागै जद प्रत्ययरै आदि इकाररो लोप हु ज्यावै—

खाये। खाया।
आयो। आया।
लियो। लिया।

(२३१) व्यजनान्त धातुरं आगं इकारादि प्रत्यय लागं जद प्रत्य आदि इकार रो विकलप सू लोप हुवं—

कर + इये = करिये करये

कर + इयो = करियो, करयो ।

(२३२) स्वरान्त धातुरं आगं ईकारादि प्रत्यय आवं जद य आगम हुवं जिया—

खा + ईजे = खायीजे

खा + ई = खायी ।

(२३३) धातु ईकारान्त हुवं तो य रो आगम नहीं हुवं, अंतिम रो लोप हुवं—

पी + ई = पी (पीवी)

जी + ई = जी (जीवी) ।

(२३४) ईकारान्त और ऊकारान्त धातुरो अन्तिम स्वर, स्वरा प्रत्यय लागणंसू पूर्वं, कदे-कदे ह्रस्व हुज्यावं—

पी + इयो = पियो, पीयो

जी + इयो = जियो, जीयो

मू + इयो = मुयो, मूयो

लू + ई = लुयो, लूयो

जी + ई = जिवी, जीवी ।

(२३५) हू धातुरो स्वर, प्रत्ययलाग्यासू पूर्वं, नित्य ह्रस्व हुज्यावं—

हू + इये = हुये

हू + इयो = हुयो

हू + तो = हुतो

हू + सी = हुसी

हू + [illegible]

ले और दे इण धातुवांरै आगै सामान्य-भूतरा प्रत्यय लागै जद अंतिम स्वररी जागा इ या ई हु ज्याव—

ले+इयो=लियो, लीयो, ली ।

दे+इयो=दियो, दीयो, दी ।

(२३६) आज्ञा-वर्तमान (अनेक-वचन), सभाव्य भविष्य, सामान्य-भविष्य(२), सामान्य-वर्तमान और अपूर्ण भूत(१) मे स्वरादि धातुरै आगै व-रो आगम हुवै—

आवो, खावै, खावैलो, खावै है, खावै हो इत्यादि ।

अपवाद—अैकारान्त धातुवामे आगम विकळपसू हुवै—

कैव—कै, कैवै ।

रैव—रै, रैवै ।

वैव—वै, वैवै ।

(२३७) अैकारान्त धातुरै आगै प्रत्यय लागै जद अै-री जागा विकळपसू अ, इ, ई हुज्यावै । जिया—

कै—कैयो कयो कियो कीयो ।

रै—रैयो रयो रियो रीयो ।

वै—वैयो वयो वियो वीयो वुवो वूवो ।

(२३८) सकेत-भूत, अपूर्ण-सकेत-भूत, अपूर्ण-भूत, सभाव्य-वर्तमान और सदिग्ध वर्तमानमे स्वरादि धातुमे व रो आगम विकळपसू हुवै—

आतो आवतो ।

जातो हुतो जावतो हुतो ।

जातो हुवै जावतो हुवै ।

जातो हुसी जावतो हुसी ।

जातो हो जावतो हो ।

(२३९) सकेत भूत आदि पाच काळामे कई-अेक स्वरान्त धातुवारो अतिम स्वर प्राय सानुनासिक हु ज्यावै—

आवतो	आतो
पीवतो	पींवतो
जीवतो	जींवतो
सूवतो	सूंवतो
वेंवतो	वेंवतो
केंवतो	केंवतो
लेंवतो	लेवतो
अपवाद—दूवतो	दूतो
सूवतो	सूतो
चूवतो	चूतो
सेवतो	सेतो

(२४०) कई क्रियावा सस्कृत और प्राकृ[illegible]
है । जिया—

नाठणो	नष्ट	
रूठणो	रुष्ट	रुट्ठ
तूठणो	तुष्ट	तुट्ठ
वूठणो	वृष्ट	वुट्ठ
बेंठणो	उपविष्ट	वइट्ठ
लाधणो	लब्ध	लद्ध
लाभणो	लब्ध	लम्भ
ऊभणो	ऊर्ध्व	उब्भ

(२४१) इसी क्रियावारो सामान्य-भूतकाल वणावणमे, इयो प्रत्यय-रै सार्थं-सार्थं, विकळपसू ओ प्रत्यय भी लागै । ओ प्रत्ययरा रूप विशेष चालै है । जिया—

नाठ	=नाठो	नाठ्यो	नाठियो
रूठ	=रूठो	रूठ्यो	रूठियो
तूठ	=तूठो	तूठ्यो	तूठियो
वूठ	=वूठो	वूठ्यो	वूठियो
वैठ	=वैठो	वैठ्यो	वैठियो
लाध	=लाधो	लाध्यो	लाधियो
लाभ	=लाभो	लाभ्यो	लाभियो
ऊभ	=ऊभो	ऊभ्यो	ऊभियो
अैठणो=		अैठ्यो	अैठियो।

(२४२) कई धातवारा भूतकाळ संस्कृत अथवा प्राकृतरा कृदन्तासू वणियोड़ा है। जिया—

कर	(करियो, करयो)	कियो	कीनो	कीधो
दे	(दियो)		दीनो	दीधो
ले	(लियो)		लीनो	लीधो
पी	(पियो)			पीधो
जा	(···)	गयो		
वंव	(वैयो-वयो)	वुवो		
धाप	(धापियो धाप्यो)	धायो		
रोव	(रोयो)		रूनो	
सूव	(सुयो-सूयो)			सूतो
देख	(देखियो-देख्यो)			दीठो

पाठ २८

क्रियारा रूप

कर्तृ-वाच्य

(२४३) व्यजनान्त धातु फिर

काळ	पुरुष	वचन	
		अेक-वचन	अनेक-वचन
१ आज्ञा-वर्तमान	अ	फिर	फिरो
२ आज्ञा-भविष्य	म	फिरिये फिरघे फिरजे फिरीजे	फिरिया फिरधा फिरजो फिरीजो
३ सामान्य-भविष्य (१)	अ म उ	फिरसी फिरसी फिरसू	फिरसी फिरसो फिरसा
४ सभाव्य-भविष्य	अ म उ	फिरै फिरै फिरू	फिरै फिरो फिरा
५ सामान्य-भविष्य (२)	अ म उ	फिरैला फिरैला फिरूला	फिरैला फिरोला फिराला
६ सामान्य-वर्तमान	अ म उ	फिरै है फिरै है फिरू हूँ	फिरै है फिरो हो फिरा हा

७ अपूर्ण-भूत (१)	न	फिरै हो	फिरै हा
	ना	फिरै ही	फिरै ही
८ सकेत-भूत	न	फिरतो	फिरता
	ना	फिरती	फिरती फिरत्या
९ अपूर्ण भूत (२)	न	फिरतो हो	फिरता हा
	ना	फिरती ही	फिरती ही फिरत्या ही
१० अपूर्ण-सकेत भूत	न	फिरतो हुतो	फिरता हुता
	ना	फिरती हुती	फिरती हुती फिरत्या हुत्या
११ सभाव्य-वर्तमान	अ	फिरतो हुवै	फिरता हुवै
	म	,, हुवै	,, हुवो
	उ	,, हुवू	,, हुवा
	अ	फिरती हुवै	फिरती हुवै
	म	,, हुवै	फिरती हुवो
	उ	,, हुव	फिरती हुवा
१२ सदिग्ध वर्तमान	अ	फिरतो हुसी	फिरता हुसी
	म	, हुसी	, हुसो
	उ	,, हुसू	,, हुसा
	अ	फिरती हुसी	फिरती हुसी
	म	,, हुसी	,, हुसो
	उ	,, हुसू	,, हुसा
१३ सामान्य भूत	न	फिरियो फिरचो	फिरिया फिरचा
	ना	फिरी	फिरी

१४ आसन्न-भूत	न ना	फिरियो है फिरी है	फिरिया है फिरी है
१५ पूर्ण-भूत	न ना	फिरियो हो फिरी ही	फिरिया हा फिरी ही
१६ पूर्ण-संकेत-भूत	न ना	फिरियो हुतो फिरी हुती	फिरिया हुता फिरी हुती
१७ सभाव्य-भूत	न ना	फिरियो हुवै फिरी हुवै	फिरिया हुवै फिरी हुवै
१८ संदिग्ध-भूत	न ना	फिरियो हुसी फिरी हुसी	फिरिया हुसी फिरी हुसी

नोट—सकर्मक क्रियारा रूप भी इणी तरा हुवै।

(२४४) स्वरान्त धातु खा—

काल	अ	अेकवचन	अनेकवचन
१ आज्ञा-वर्तमान	म	खा	खावो
२ आज्ञा-भविष्य	अ	खाये खाजे खायीजे	खाया खाजो खायीजो
३ सामान्य-भविष्य	अ म उ	खासी ,, खासू	खासी खासो खासा
४ सभाव्य-भविष्य	अ म उ	खावै ,, खावू	खावै खावो खावा

५ सामान्य-भविष्य	अ म उ	गावैगो ,, गाऊँगो	गावैगा गावोगा गावागा
६ सामान्य वर्तमान	अ म उ	गावै है ,, गाऊँ हूँ	गावैं है गावो हो गावा हा
७ अपूर्ण-भूत (१)	न ना	गावै हो गावै ही	गावैं हा गावै ही
८ संकेत-भूत	न ना	गावतो गावती	गावता गावती
९ अपूर्ण-भूत (२)	न ना	गावतो हो गावती ही	गावता हा गावती ही
१० अपूर्ण-संकेत भूत	न ना	गावतो हुतो गावती हुती	गावता हुता गावती हुती
११ संभाव्य वर्तमान	अ म उ	गावतो हुवै ,, हुवै ,, हुऊँ	गावता हुवैं ,, हुवो ,, हुवा
१२ संदिग्ध-वर्तमान	अ म उ	गावतो हुवै ,, हुवै ,, हुऊँ	गावतो हुवै ,, हुवो ,, हुवा
१३ सामान्य-भूत	न ना	गायो गायी	गाया गायी
१४ आसन्न-भूत	न ना	गायो है गायी है	गाया है गायी है

१५ पूर्ण-भूत	न ना	खायो हो खायी ही	खाया हा खायी ही
१६ पूर्ण-सकेत-भूत	न ना	खायो हुतो खायी हुती	खाया हुता खायी हुती
१७ सभाव्य-वर्तमान	न ना	खायो हुवै खायी हुवै	खाया हुवै खायी हुवै
१८ सदिग्ध-वर्तमान	न ना	खायो हुसी खायी हुसी	खाया हुसी खायी हुसी

(२४५) अकर्मक क्रियारा रूप भी इणी तरा हुवै ।

(२४६) कई-अेक विशेष रूप—

(१) आव धातुरा आज्ञा-वर्तमान अेकवचनरा रूप— आ, आव ।

(२) जाव धातुरा सामान्य-भूतरा रूप—

गयो गया
गयी गयी, गया ।

(३) अैकारान्त धातुरा बहुत-सा विशेष रूप वणै, इण वास्तै नीचै अैकारान्त धातु रैवणो-रा मुख्य-मुख्य रूप दिरीजै है—

आज्ञा-वर्तमान-अेकवचन	रै	रह
अनेकवचन	रौ रैवो रवो	रहो
आज्ञा-भविष्य	रैये रये रिये रीय	रह्यो रहिये
	रैया रया रिया रीया	रह्या रहिया
सामान्य-भविष्य १	रैसी	रहसी
सभाव्य-भविष्य	रै रैवै रवै	रहै
सामान्य-भविष्य २	रैला रैवला रवैला	रहैला

सामान्य-वर्तमान	रै है रैवै है रवै है	रहै है
अपूर्ण-भूत १	रै हो रैवै हो रवै हो	रहै हो
	रै ही रैवै ही रवै ही	रहै ही
संकेत-भूत	रैतो रैवतो	रहतो
	रैती रैवती	रहती
सामान्य-भूत	रैयो रयो रियो रीयो	रह्यो रहियो
	रैया रया रिया रीया	रह्या रहिया
	रैयी रयी री*	रही

* इसो रूप केवळ रैय धातुरो वणै, भैव, सैव, सैव आदि दूजी अैकारान्त धातुवांरा नहीं वणै ।

पाठ २६

कर्मवाच्य और भाववाच्य

(२४७) सकर्मक क्रियारो कर्म-वाच्य तथा अकर्मक क्रियारो भाव-वाच्य हुवै ।

(२४८) कर्मवाच्यमे कर्तृवाच्य जिता पूरा रूप हुवै । भाववाच्य मे हरेक कालमे केवळ अेक-अेक रूप हुवै ।

(२४९) कर्मवाच्य और भाववाच्य दो तरारा है—

(१) पुराणा अथवा सश्लिष्ट ।
(२) नूवा अथवा विश्लिष्ट ।

(२५०) पुराणा कर्मवाच्य और भाववाच्य सस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रशसू आया है, नूवा हिंदी आदिरै प्रभावसू हालमे ही प्रयोगमे आवण लाग्या है ।

(२५१) सश्लिष्ट कर्मवाच्य अथवा भाववाच्यरी धातु कर्तृवाच्य-री धातुरै आगै ईज प्रत्यय जोडियासू बणै—

कर + ईज = करीज करीजणो
देख + ईज = देखीज देखीजणो
जीव + ईज = जीवीज जीवीजणो
जी + ईज = जियीज जियीजणो
आ + ईज = आयीज आयीजणो
जा + ईज = जायीज जायीजणो
पी + ईज = पीज पीजणो
ले + ईज = लिरीज लिरीजणो
दे + ईज = दिरीज दिरीजणो

(२५२) विशिष्ट कर्मवाच्य अथवा भाववाच्यरी धातु कर्त्तृवाच्यरी धातुरैं सामान्य-भूत (या, भूत-कृदन्त)-रै रूपरैं आगै जाव धातु जोडिया-सू वणैं—

कर	=	करियो जाव (करियो जावणो)
देख	=	देखियो जाव
पा	=	पायो जाव
आ	=	आयो जाव
जा	=	जायो जाव गयो जाव
पी	=	पीयो जाव, पियो जाव
जी	=	जीयो जाव जियो जाव
ले	=	लियो जाव
दे	=	दियो जाव
रै	=	रैयो जाव, रियो जाव।

(२५३) कर्मवाच्य और भाववाच्य दोनामे काळारा प्रत्यय कर्त्तृ-वाच्यरैं समान ही-ज है। केवळ भाववाच्यमे हरेक काळमे अेक-अेक रूप, अन्य पुरुष अेकवचन नर-जातिरो ही-ज, वणैं—

(२५४) नीचे कर्मवाच्य और भावाच्यरा रूप दिया है—

	(क) कर्मवाच्य कर धातु		(ख) भाववाच्य आ धातु
आज्ञा वर्तमान	करीज	करीजो	..
आज्ञा-भविष्य	करीज्यै करीजियै करीजजै	करीज्या करीजिया करीजजो	
सामान्य-भविष्य (१)	करीजसी करीजसी करीजसू	करीजसो करीजसो करीजसा	आयीजसी

सभाव्य-भविष्य	करीजँ करीजै करीजू	करीजँ करीजो करीजा	आयीजँ
सामान्य-भविष्य (२)	करीजँला	करीजँला	आयीजँला
सा० वर्तमान	करीजँ है	करीजँ है	आयीजँ है
अपूर्ण भूत (१)	करीजँ हो करीजँ ही	करीजँ हा करीजँ ही	आयीजँ हो
सकेत-भूत	करीजतो करीजती	करीजता करीजती	आयीजतो
अपूर्ण-भूत (२)	करीजतो हो करीजती ही	करीजता हा करीजती ही	आयीजतो हो
अपूर्ण सकेत भूत	करीजतो हुतो करीजती हुती	करीजता हुता करीजती हुती	आयीजतो हुतो
सभाव्य वर्तमान	करीजतो हुवँ करीजती हुवँ	करीजता हुवै करीजती हुवै	आयीजतो हुवँ
सदिग्ध-वतमान	करीजतो हुसी करीजती हुसी	करीजता हुसी करीजती हुसी	आयीजतो हुसी
सामान्य-भूत	करीजिया करीजी	करीजिया करीजी	आयीजिया
आसन्न-भूत	करीजियो है करीजी है	करीजिया है करीजी है	आयीजियो है
पूर्ण-भूत	करीजियो हो करीजी ही	करीजिया हा करीजी ही	आयीजियो हो

पूर्ण-सकेत-भूत	करीजियो हुतो करीजो हुतो	करीजिया हुता करीजो हुतो	आयीजियो हुतो
सभाव्य-भूत	करीजियो हुवै करीजो हुवै	करीजिया हुवै करीजो हुवै	आयीजियो हुवै
संदिग्ध-भूत	करीजियो हुसी करीजो हुसी		आयीजियो हुसी

पाठ ३०

क्रियारो पद-परिचय

(२५५) क्रियारै पद-परिचयमे नीचे बतायी बाता बतायीजै—
- (१) भेद (अकर्मक, सकर्मक)
- (२) वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य)
- (३) प्रयोग (कर्तरि-प्रयोग, कर्मणि-प्रयोग, भावे-प्रयोग)
- (४) अर्थ (निश्चयार्थ, सभावनार्थ, सदेहार्थ, सकेतार्थ, आज्ञार्थ)
- (५) काळ (भूत—सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण, आसन्न, सभाव्य, सदिग्ध, सकेत, अपूर्णसकेत, पूर्ण-सकेत,
  वर्तमान—सामान्य, सभाव्य, सदिग्ध, आज्ञा-वर्तमान,
  भविष्य—सामान्य, सभाव्य, आज्ञा-भविष्य)।
- (६) वचन (अेक-वचन, अनेक वचन)
- (७) जाति (नर-जाति, नारी-जाति)
- (८) पुरुष (उत्तम, मध्यम, अन्य)
- (९) सबध (इणरो कर्ता फलाणो, कर्म फलाणो, पूरक फलाणो है)।

(२५६) उदाहरण—

(१)

महाराज कदोईरी पुकार सुण उण दोनू ठगानै बुलाया।

सुण —क्रिया, सकर्मक, कर्तृ वाच्य, पूर्वकालिक कृदत, इणरो कर्ता महाराज, कर्म पुकार तथा समापिका क्रिया बुलाया है।

बुलाया —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्मणि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-भूत, नर-जाति, अनेकवचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्ता महाराज तथा कर्म ठगानै है।

(२)

कागदरै ऊपर जो श्री लिखीजै है उणनै श्रीकार कैवै है।

लिखीजै है—क्रिया, सकर्मक, कर्मवाच्य, कर्मणि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-वर्तमान काळ, नारी-जाति, अनेकवचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्म श्री है।

कैवै है —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-वर्तमान काळ, नर-जाति, अनेक-वचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्ता अध्याहृत है।

(३)

इणमे विचारणरी वात आ है कै कोई आदमी आपसू कित्तोई हळवो हुवै उणनै तुच्छ समझनै उणरो अनादर नही करणो।

है —क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, निश्चयार्थ, मामान्य वर्तमान, नारी जाति, अेक-वचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्ता आ तथा पूरक वात है।

हुवै —क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, सभावनार्थ, सभाव्य-भविष्य, नर-जाति, अेकवचन, अन्यपुरुष, इणरो कर्ता आदमी है।

करणो —विधि कृदन्त, सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य कर्तरिप्रयोग, नर-जाति, अेकवचन, इणरो कर्म अनादर है।

(३)

जद माछर नाकसू बारै निकळ उण साडनै कयो—देखियो ? अव आगैसू कदेई अैडो अहक्रार मत करजे, नही तो फेर इणसू वत्ती वीतैला।

निकळ —क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, निश्चयार्थ, पूर्वकाळिक कृदत, इणरो कर्ता माछर है, समापिका क्रिया कयो है।

कर्यो —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्मणि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-भूत, अेक-वचन, नर-जाति, अन्य-पुरुष, इणरो कर्ता माछर है, कर्म अध्याहृत है।

देखियो —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्मणि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-भूत, अेकवचन, नर-जाति, अन्य-पुरुष, इणरो कर्ता तैं अध्याहृत है, कर्म अध्याहृत है।

करजे —क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, आज्ञार्थ, आज्ञा-भविष्य-काळ, अेक-वचन, नर-जाति, मध्यम-पुरुष, इणरो कर्ता तू अध्याहृत है।

बीतैला —क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्तरि-प्रयोग, निश्चयार्थ, सामान्य-भविष्य काळ, अेकवचन, नारी-जाति, अन्य-पुरुष, इणरो कर्ता अध्याहृत है।

पाठ ३१

अव्यय

(२५७) जिण शब्दमे रूपान्तर नही हुवै बो अव्यय ।

सज्ञा में जाति, वचन और विभक्तियारै कारण रूपान्तर हुवै अर्थात कई तरारा रूप वणै, इणी भात क्रियामे वाच्य, प्रयोग, अर्थ, काळ, वचन, जाति, पुरुष-रा घणा-सारा रूप-भेद हुवै, पण अव्ययमे किणी तरारो रूप-भेद नही हुवै, अेक ही-ज रूप सदा काममे आवै ।

(२५८) कई-अेक विशेषण क्रियाविशेषणारी भाति वापरीजै, उणामे वचन और जातिरो भेद पायीजै ।

(२५९) अव्ययरा चार भेद हुवै—

(१) क्रियाविशेषण—जको क्रियारी कोई विशेषता बतावै ।

(२) नामयोगी—जको सज्ञारै साथै जुडनै क्रियाविशेषणरो काम करै ।

(३) सयोजक—जको दो वाक्यानै, अथवा कदे-कदे दो शब्दानै, जोडै ।

(३) केवळ-प्रयोगी—जिणरो सबध वाक्यरा दूसरा शब्दासूं नही हुवै और जो मनरा हरख, सोव वगैरा भावनै सूचित करै ।

पाठ ३२

क्रियाविशेषण

(२६०) क्रियारी कोई विशेषता वतावै जका शब्द क्रियाविशेषण कहीजै। जिया—

(१) विद्यार्थी धीरै चालै है।

अठै धीरै शब्द चालै क्रियारी विशेषता वतावै। किया चालै है? धीरै चालै है।

(२) राजा काल दिल्ली गयो।

अठै काल शब्द गयो क्रिया-रो काळ (समै) वतावै।

(३) तैं कम खायो।

अठै कम शब्द खायो क्रियारो परिमाण वतावै।

(४) पाणी जरूर आसी।

अठै जरूर शब्द आसी क्रियारै हुवणरो निश्चय वतावै।

(५) फूल कोनी तोडिया।

अठै कोनी शब्द तोडिया क्रिया नही हुई आ वात वतावै।

(२६१) कई क्रियाविशेषण विशेषण अथवा दूजा क्रियाविशेषणरी विशेषता वतावै।

(१) शरवत कमती मीठो है।

(२) चोररी वात साव (वा, समूची) भूठी है।

(३) घोडो घणो धीमै चालै है।

(२६२) कई विशेषण क्रियाविशेषण जिया वापरीजै।

(१) वाडो धीमो चालै।

(२) घाडो घणा तेज भागै।

(३) मैं आज थोडो गायो ।

(४) तू मोडो आयो ।

(५) हू वेगी उठमू ।

(६) काम वेगो करजे ।

(२६३) क्रियाविशेषण जिया वापरीजै जका विशेषणा मे कदे-कदे जाति और वचनरा रूपान्तर पायीजै—

(१) घोडो धीमो चालै ।
घोडी धीमी चालै ।
घोडा धीमा चालै ।

(२) छोकरो मोडो आयो ।
छोकरी मोडी आयी ।
छोकरा मोडा आया ।

(२६४) कई क्रियाविशेषण सज्ञारी विभक्तियासू बणियोडा हुवै । जिया—

घरे, राते, हाथे, आपे, असलमे ।

(२६५) सम्बन्धबोधक अव्यय आपरी सज्ञारै सार्थ मिलनै क्रियाविशेषण-रो काम करै—

घरसू दूर ।	घररै ऊपर ।
घररै विना ।	घररी दाई ।
घर ताई ।	पोथी सूधो ।
विद्यारै वास्तै ।	सिर माथै ।

(२६६) कई क्रियाविशेषण सज्ञारी दाई काम आवै । उणामे विभक्ति-रो रूपान्तर हुवै । जिया—

अठैसू, अठैरो, परसूसू ।

(२६७) कई क्रियाविशेषण सर्वनामासू सबध राखै—

सर्वनाम—	ओ	ऊ	कुण	जो	तो	वो
स्थानवाचक—	अठै	उठै	कठै	जठै	तठै	वठै
	ऐथियै	ओथियै	केथियै	जेथियै	...	...
	इथिये	उथिये	किथिये	जिथिये	...	.
	इथै	उथै	किथै	जिथै	...	...
		ओडै	कोडै	...	..	...
	अठीनै	उठीनै	कठीनै	जठीनै	तठीनै	वठीनै
	ईनै	ऊनै	कीनै	जीनै	...	वीनै
काळवाचक—	अब		कद	जद	तद	...
	अबै		कदे	जदे	तदे	...
			कदेई	जदेई	...	...
	हरा		करा	जरा	तरा	..
	हणा		कणा	जणा	...	...
	हणै		कणै	जणै	...	...
	हमार		...	...	...	...
	अबार		...	...	..	...
रीतिवाचक—	इया		किया	जिया	तिया	बिया
	इयांन		कियान	जियान	तियान	बियान
	यूं		क्यू	ज्यू	त्यू	..
	यो		क्यो	ज्यो	त्यो	.
	...		क्यूकर	...	...	...
	.		क्योंकर	...	..	...
	...		कीकर	...	...	...

पाठ ३३

क्रियाविशेषणरा भेद

(२६८) क्रियाविशेषणरा ४ भेद हुवै—(१) स्थानवाचक (२) काळवाचक (३) परिमाणवाचक (४) रीतिवाचक ।

(२६९) स्थानवाचक क्रियारै हुवणरो स्थान बतावै—

आगै अगाडी पछै पाछै लारै लार लारोलार, ऊपर नीचै वळै हेठै, सामनै सनमुख बार बारै माय भीतर, पास कनै नेडो निकट समीप नजीक उरो परो दूर आघो कडखै, सर्वत्र अन्यत्र, कठै अठै उठै वठै कठै जठै तठै इत्यादि ।

(२७०) काळवाचक क्रियारै हुवणरो समय बतावै—

आज काल तडकै दिनूगै सवेरै परसू पैह , तरसू नरसू पैलै-दिन परलै दिन ता-परलै-दिन आजकाल, अैस पर परार ता-परार पर-ता-परार, पैली पैला पछै पाछै बादमे फेर फेरू ,तुरत वेगो जळदी भटपट भट भटाभट मोडो, प्रथम परथम आखर अतमे निदान लगातार लगोलग लगोलगी निरतर सदा सर्वदा हमेशा नित रोज रोजीना रोजीनै नित्य-प्रति वारवार बरावर रोज-रोज कदे-कदे अकसर बहुधा प्राय. प्रायकर घडी-घडी घणोकर, छेवट सेवट, दिन दिन, रातू-रात, रात्यू, दिन-ऊग्या इत्यादि ।

(२७१) परिमाणवाचक विशेषण अथवा दूजै क्रियाविशेषणरो परिमाण बतावै—

घणो बोत निरो थोडो कम कमती वेसी वत्तो अधिक ज्यादा थोडा-थोडो थोडो-घणो कम-बेसी बिलकुल जावक निरो

कोरो खालो मात्र केवळ सिरफ घणो कापी खूब गैरो निपट अत्यंत अति अतिशय बुछ की लगभग अंदाजन अंदाज आसरें दुबेत्र प्राय जरा किंचित घणकरो सगळो सेंग समूधो मात्र निरार निनियो मा ।

(२७२) रीतिवाचक क्रियारें हुवणरी रीति बतावें—

इयां किया जियां तियां जियां यूं वयूं ज्यूं त्यूं इयान कियान जियान तियान बियान जियां तियां जियां-जियां बियां-बियां, ज्यूं-ज्यूं त्यूं-त्यूं ज्यूं-त्यूं, वयूंकर जथा-तथा कियाईं इयाईं जियाईं नयूंईं वीकरई, अचानक अनायास औचक अकस्मात अचानचक, वृथा व्यर्थं विरथा फालतू मुंई मंत-मेंत अहलो अहळो पाऊ पाहू, होळे धीरें धीमें तेज आतरो आसतो खाथो पैदल पाळो, सेज मोरें-गाम, परसपर आपसमें माय-माय माहोमाय मोंह्‌मायामें घर-घरमें, साक्षात साख्यात प्रत्यक्ष परतक, मन-मनमें अंकें-माथें अेकें-ममचें; जथाशक्ति जथाजुगत-खडाखडी ऊभाऊभ, फटाफट चटाचट सटासट गटागट यटायट पटापट यटावट खटाखट; तड़ातड़ भड़ाभड़ दड़ादड़ मड़ासड़ फड़ाफड़ चड़ाचड़ घड़ाधड़; निमचें अवश्य जरूर माचेंई साचण साचल साचाणी अवस अवसकर, बेसक निस्सदेह अलबत अलबत्तें खासकर विशेषकर विशेषतः वस्तुत वास्तवमें दरअसल असलमें, कदाचित कदास कदाच स्यात शायद घणोकर, इणवास्तें अत अतअेव, ना नहीं मत कोनी कोयनी कोयनही, देखता करता, उठाया लिया लिया-थका; क्यों ।

पाठ ३४

नाम-योगी

(२७३) नाम-योगी सज्ञारै साथै आवै ।

(२७४) घणकरा नाम-योगी क्रियाविशेषण है । अै सज्ञारै साथै आवै जद नामयोगी बाजै, अेकला आवै जद क्रियाविशेषण हुवै ।

(२७५) घणकरा नाम-योगी छठी विभक्तिरै आगै आवै पण कई नाम-योगी तीसरी विभक्तिरै, कई दूसरीरै, कई पाँचवीरै और कई इणा मायसू दोना अथवा तीनारै आगै भी आवै—

घोडारै ऊपर, घोडारै लारै, घोडारै आगै ।
घोडा ऊपर, घोडा लारै, घोडा आगै ।
घोडै ऊपर, घोडै लारै, घोडै आगै ।
घोडासू आगै ।

(२७६) कदे-कदे नामयोगी सज्ञारै पैली भी आवै—

म्हारै बिना, बिना म्हारै ।

(२७७) नामयोगी शब्द अै है—

कालवाचक —पैली, पैला, आगै, अगाडी, पूर्व, पछै, पाछै, अनतर उपरात ।

स्थानवाचक —ऊपर, माथै, मालै, नीचै, तळै, हेठै, आगै, सामनै सनमुख, समक्ष, लारै, लार, माय, भीतर, बिचै बारै, बार, बायर, कनै, नजीक, नजदीक, पास निकट, नेडै, समीप, आसपास, अडैगडै, करीब पाखती, जोडै, सारै ।

दिशावाचक —कानी, ओर, तरफ, दिमै, दिसा, दीस्या, दीसिया प्रति, किनारै, परै ।

सहचारवाचक —साथैं, सागैं, साथ, सग, पाखती जोडैं, समेत, सहित, सूधो, बराबर।

साधनवाचक —द्वारा, जरियैं, मारफत।

सादृश्यवाचक —समान, दाई, नाई, जिया, जैडा।

कार्य कारणवाचक —लियैं, वासतैं, खातर, सारू, निमत, निमित्त, अर्थ, काज, कारणैं, कारण, वैई वगैं।

भिन्नतावाचक —सिवाय, अलावें, अतिरिक्त, विना, वगैर, रहित, पाखैं, टाळ, विगर।

तुलनावाचक —अपेक्षा, बनिस्वत, आगैं, करता।

विषयवाचक —विसैं, बाबत निस्वत, लेखैं, माथै, मद्धै, मद्दे।

विनिमयवाचक —बदळैं, जाग्या, जगा, पळटैं, ठौड।

विरोधवाचक —विरुद्ध, खिलाफ, विपरीत, प्रतिकूळ।

सीमावाचक —तक, ताई, ताणी, तलक, तोडी, परजत, पर्यन्त।

संयोजक अव्यय

(२७८) दो वाक्यानै, अथवा दो शब्दानै, मिलावै जको शब्द संयोजक अव्यय कहीजै ।

(१) राम और लक्ष्मण भाई हा।

(२) राजू परीक्षा दी पण पास कोनी हुयो ।

(२७९) संयोजकरा दो भेद हुवै ।

(१) व्यधिकरण (२) समानाधिकरण ।

(२८०) व्यधिकरण अेक मुख्य और अेक आश्रित उपवाक्यनै जोड़ै । व्यधिकरण संयोजक अै है—

(१) कारणवाचक —क्यू, कै, कारण, इण वास्तै, कै ।

(२) उद्देशवाचक —जो, कै, जिणसू, ज्यू ।

(३) संकेतवाचक —कै, तो, तो भी, तथापि, पण, परन्तु पर ।

(४) स्वरूपवाचक —कै (क, अक), जे, जो, अर्थात, यानी, मानो, जाणै ।

(२८१) समानाधिकरण दो बराबररा, परस्पर अनाश्रित, उपवाक्यानै जोड़ै । समानाधिकरण संयोजक अै है——

(१) योग-सूचक—और, अर, नै, तथा, अेव ।

(२) विकल्प सूचक—या, अथवा, वा, कै, का, नहीतो, नहितर, नीतर, अन्यथा ।

(३) विरोध-सूचक—पण, पर, परतु, किंतु, लेकिन, वरच वरना ।

(४) परिणाम-सूचक—अतअेव, इणवास्तै, सो ।

(२८२) सबधवाचक सवनाम सार्वनामिक विशेपण तथा सार्वनामिक क्रियाविशेपण भी सयोजक अव्ययरो काम करै—

जो, जको, जिसो जितरो, जित्ता, जेहडो, जठै, जद, जियां, ज्यूं ।

पाठ ३६

केवळ-प्रयोगी अव्यय

(२८३) केवळ-प्रयोगी अव्ययारो वाक्यमे दूसरा किणी शब्दसूं संबंध नही हुवै ।

(२८४) घणकरा केवळ-प्रयोगी सोग, हरख आदि मनोभावारा सूचक हुवै—

(१) ओहो ! कद आया ?

(२) हाय ईश्वर !

(३) हाय ! घणो दुख पायो ।

(२८५) सज्ञारो संबोधन कारक भी केवळ-प्रयोगी ही-ज है—

राम ! तू अठै आ ।

(२८६) मुख्य-मुख्य केवळ-प्रयोगी नीचै दिया है—

विस्मय-सूचक —अरे ! ओहो ! हो ३ ! है ३ ! भला !

प्रशंसा-सूचक —वाह वाह ! धन्य धन्य ! धिन धिन ! साबास ! खूब ! रंग है !

हर्ष-सूचक —आहो ! आहा ! हा हा !

शोक-सूचक —अरे ! हाय ! ओ ! आह ! आय ! ओय रे ! ओ राम ! अे मा ! हे राम !

घृणा-सूचक —छी छी ! हाय हाय ! राम-राम ! शिव शिव ! थू ! थू-थू !

अनादर-सूचक —हट् ! हट् ! हुस्त ! दुर ! फिट ! फोट !

प्रतिबंध-सूचक —हैं-हैं ! चुप ! भला !

संबोधन-सूचक —हे, ओ, अे, अरे, रे, अजी, जी, क्यो ! लो ! लै ! अनै !

स्वीकार-सूचक —जी, जी हा, हा, हा सा ! ठीक, भलो, आछो, हुकम, अस्तु ।

निषेध-सूचक —बस ! मत ! ना ! ऊहू ! अंहै !

विवशता-सूचक —अस्तु, खैर, आछो, भला हो, थे जाणो ।

पाठ ३७

अव्ययरो पद-परिचय

(२८७) अव्ययरै पद-परिचयम अै वाता वतावणी—

१ क्रियाविशेपण अव्यय—

(१) भेद (स्थानवाचक, काळवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक)

(२) सबध (किसी क्रिया, अथवा विशेपण, अथवा क्रियाविशेपणरी विशेपता वतावै)।

२ नामयोगी अव्यय—

(१) सबध (किसी सज्ञासू सबध राखै)।

३ सयोजक—

(१) भेद (समानाधिकरण, व्यधिकरण)

(२) सबध (किसा-किसा शब्दा अथवा उपवाक्यानै मिलावै)।

४ केवळ प्रयोगी—

(केवळ शब्दभेदरो नाव बतायीजै)।

(२८८) उदाहरण—

१ राजा और राणी शिकारै चारै आया।

२ पूजारै वास्तै फूल लावो।

३ ओहो! किसोक फूटरो रूप है!

४ हे राजन्! ब्रह्मचारी द्वार मार्थै ऊभा है।

५ नौकर घणो मोडो आयो।

६ परसू गुरूजी अठै आवैला।

७ सिंघ कही कै ओ वन म्हारो है ।

८ वरसै जठै ऊगै ।

और —अव्यय, समानाधिकरण सयोजक, राजा और राणी इण दो नामानै जोडै ।

वारै —नामयोगी अव्यय, किला सज्ञासू अन्वित ।

वास्तै —नामयोगी अव्यय, पूजा सज्ञासू अन्वित ।

ओहो !—केवळ-प्रयोगी अव्यय, हर्ष सूचित करै ।

हे —केवळ-प्रयोगी अव्यय, सबोधन सूचित करै ।

मायँ —नामयोगी अव्यय, द्वार सज्ञासू अन्वित ।

घणो —अव्यय, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, मोड़ो क्रियाविशेषणरी विशेषता वतावै ।

मोडो —अव्यय, रीतिवाचक क्रियाविशेषण, आयो क्रियारी विशेषता वतावै ।

परसू —अव्यय, काळवाचक क्रियाविशेषण, आवैला क्रियारी विशेषता वतावै ।

अठै —अव्यय, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, आवैला क्रियारी विशेषता वतावै ।

कै —अव्यय, व्यधिकरण सयोजक, दो उपवाक्यानै जोडै ।

जठै —अव्यय, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, सयोजकरी भाति प्रयुक्त, ऊगै क्रियारी विशेषता वतावै, तथा दो उपवाक्यानै जोडै ।

पाठ ३८

शब्द-साधना

(२८६) नया शब्द च्यार तरासूं बणायीजै—

(क) शब्दरै माय स्वररो परिवर्त्तन करनै—

मरणो	—	मारणो
निवळनो	—	निवाळनो
फिरणो	—	फेरणो
मुडनो	—	मोडनो
छूटणो	—	छोडणो
विकणा	—	वेचणो

(ख) शब्दरै पैली उपसर्ग जोडनै—

जाण	—	अणजाण
डर	—	निडर
ज्ञान	—	अज्ञान
बळ	—	दुर्बळ

(ग) शब्दरै आगै परसर्ग अथवा प्रत्यय जोडनै—

चढ	—	चढाई
मीठो	—	मिठास
कवि	—	कविता
सुख	—	सुखियो
भण	—	भणियोडो

(घ) शब्दरै आगै दूसरो शब्द जोडनै—

मा बाप	राज-दरबार	देशभक्ति
लबोदर	कन-फटो	आठानी ।

(ङ) शब्दरी पुनरुक्ति करनै—

रोम-रोम, लारै-लारै, बारबार, चोरम-चोर,
फेर-फार, बात चीत, पूछ-ताछ, गटर-पटर ।

पाठ ३९

स्वर-विकार

(२९०) स्वर-विकारसू नीचे बताया शब्द बणायीजै—

(क) अकर्मकसू सकर्मक क्रिया

(ख) नामसू विशेषण

(ग) नामसू अपत्य-वाचक नाम।

(२९१) नामसू विशेषण बणावणो हुवै जद नामरै पैलड़ै स्वररी वृद्धि कर देवै अर्थात अ-रो आ, इ-ई-रो ऐ, उ-ऊ-रो औ तथा ऋ रो आर् कर देवै जिया—

नगर	—	नागर
क्षत्र	—	क्षात्र
अर्य	—	आर्य
तरग	—	तारग
कपोत	—	कापोत
पर्वत	—	पार्वत
ग्रीष्म	—	ग्रैष्म
पुर	—	पौर
सूर	—	सौर
भुज	—	भौज
ऋषि	—	आर्ष।

(२९२) नामसू अपत्य-वाचक नाम बणावणो हुवै जणा भी नाम-रै पैलड़ै स्वररी वृद्धि करीजै। जिया—

पुत्र	—	पौत्र
वसुदेव	—	वासुदेव।

(२६३) अकर्मकसूं सकर्मक क्रिया बणावै जद धातुरै उपान्त्य स्वररो गुण करीजै अर्थात अ-रो आ, इ-ई-रो ए, और उ-ऊ-रो ओ हुवै। जियां —

अजणो	आजणो	पिटणो	पीटणो
उखड़नो	उखाड़नो	पिसणो	पीसणो
उपड़नो	उपाड़नो	पुंछणो	पाछणो / पूछणो
कटणो	काटणो		
घिरणो	घेरणो	फिरणो	फेरणो
खुभणो	खोभणो	फुरणो	फोरणो
खुलणो	खोलणो	बधणो	बाधणो
खुसणो	खोसणो	बळनो	बाळनो
गडणो	गाडणो	भिडनो	भेडनो
गळनो	गाळनो	भुरणो	भोरणो
गिरणो	गेरणो	मरणो	मारणो
घिरणो	घेरणो	मिलणो	मेलणो
चलणो	चालणो	मिळनो	मेळनो
चिरणो	चीरणो	मुडनो	मोडनो
चुभणो	चोभणो	रळनो	राळनो
छणनो	छाणनो	रुळनो	रोळनो
जमणो	जामणो	रुडनो	रोडनो
जुडनो	जोडनो	रुकणो	रोकणो
टटणो	टाटणो	लदणो	लादणो
डूबणो	डोबणो	लिटणो	लेटणो
तुलणो	तोलणो	लुटणो	लोटणो
दबणो	दाबणो	लुटणो	लूटणो
दुडनो	दोडनो	बचणो	बाचणो
धरणो	धारणो	बडनो	बाडनो

धुपणो	धोवणो	वळनो	वाळनो
निकळनो	निकाळनो	वमणो	वासणो
निमणो	नामणो	विखरणो	विखेरणो
निवडनो	निवेडनो	विगडनो	विगाडनो
पटणो	पाटणो	विचरणो	विचारणो
पडनो	पाडनो	सभळनो	सभाळनो
पळनो	पाळनो	सूखणो	सोखणो

(२६४) धातुरे अंत मे ट हुवै तो उणरो ड या ड हुज्यावै—

छूटणो	छोडणो
तूटणो	तोडनो
फूटणो	फोडनो ।

(२६५) कई रूप अनियमित-सा हुवै—

निवडनो	निवेडनो	विकणो	वेचणो
विखरणो	विखेरणो	रंखणो	राखणो
निमणो	नामणो	पीवणो	पावणो
धुपणो	धोवणो		पियावणो
पुछणो	पूछणो		प्यावणो

पाठ ४०

उपसर्ग

(२६६) उपसर्ग शब्दरै पैली जुडै ।

(२६७) राजस्थानीमें दो तरारा उपसर्ग है—(१) संस्कृतरा, (२) देसी ।

(२६८) संस्कृतरा उपसर्ग इण भांत है—

१ अति—अतिकाळ, अतिरिक्त, अतिसै, अत्यन्त, अत्याचार, अत्युक्ति ।

२ अधि—अधिकार, अधिपति, अधिराज, अधिष्टाता, अध्यात्म ।

३ अनु—अनुकरण, अनुक्रम, अनुग्रह, अनुचर, अनुज, अनुभव, अनुरूप ।

४ अप—अपकीर्ति, अपमान, अपराध, अपशकुन, अपशब्द, अपहरण ।

५ अपि—अपिधान ।

६ अभि—अभिन्न, अभिप्राय, अभिमान, अभ्यागत, अभ्यास, अभ्युदय ।

७ अव—अवगुण, अवतार, अवनति, अवलोकन, अवमाण, अवस्था ।

८ आ—आकार, आगमन, आचरण, आजन्म, आह्वान ।

९ उत्—उत्कठा, उत्तम, उद्देश, उद्योग, उन्नति, उत्पन्न, उत्सेग, उत्साह ।

१० उप—उपकठ, उपकार, उपदेश, उपनाम, उपनेत्र, उपमंत्री, उपवन ।

११ दुर् —दुराचार, दुर्गुण, दुर्जन, दुष्कर, दुष्कर्म, दुस्सह, दुःख।

१२ नि —निकृष्ट, निदान, निपात, निबंध, नियुक्त, निवास।

१३ निर्—निराकार, निर्दोष, निश्चळ, निष्कारण, निस्सहाय, नीरस।

१४ परा —पराक्रम, पराजय, परामर्श, परावर्तन।

१५ परि —परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण, परिवर्तन।

१६ प्र —प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रताप, प्रभात, प्रदेश, प्रस्थान।

१७ प्रति —प्रतिकूळ, प्रतिक्षण, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिरूप, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष।

१८ वि —विकास, विचार, विज्ञान, विदेश, विदेह, वियोग, विस्मरण, विहार।

१९ सम् —संगम, संग्रह, संतोष, संयोग, समान, संहार।

२० सु —सुगम, सुजन, सुदूर, सुप्रभात, स्वागत।

(२९९) नीचे बताया उपसर्ग संस्कृतमें उपसर्ग नहीं कहीजै पण उपसर्गांरी भांति हीज वापरीजै। राजस्थानीमें अै सारा उपसर्ग है—

२१ कु —कुकर्म, कुपुरुष, कुरूप।

२२ कत् —कदाचार, कदन्न।

२३ का —कापुरुष।

२४ स —सजातीय, सजीव, सफळ, सपत्नी।

२५ अ —अज्ञान, अधर्म, अनीति, असावधान।

२६ अन् —अनाधार, अनिष्ट, अनेक, अनादि, अनुत्पन्न।

२७ न —नास्तिक।

(३००) राजस्थानीमें इण उपसर्गांरो रूप नीचै बतायै मुजब बदळ ज्यावै—

अधि = इध — इधकारी

अध — अधकारी

अनु = उणि — उणिहारो

अभि = अभ — अभमानी

= इभ — इभमानी

अव = औ — औगण

ओ — ओगण

दुर् = दुर — दुरगुण, दुरजण

निर् = निर — निरधण

नि — निरोगो, निसक, निबळ

परा = प्रा — प्राक्रम

परि = पर — परकमा

प्र = पर, पड — परकाम, परवळ, परळै, पड़पोतो।

प्रति = पड — पडक्मणा

अ = अण — अणपार

स = सं — संजोडै।

(३०१) देशी उपसर्ग—

अ — अचेत, अजाण, अमाप, अलख, अनीत।

अण — अणचेत, अणजाण, अणभण, अणपढ, अणमोल अणूतो, अणहूतो।

गुण — गुणतीस, गुणचास, गुणियासी।

उगण — उगणीस, उगणतीस, उगणचास।

औ — औघट, ओसर।

गैर — गैर-वाजबी।

दु —दुकाळ, दुबळो, दुहाग।

दू —दूबळो।

ना —नाउम्मेदी, नालायक।

बा —बाजाब्ता, बाकायदै।

बे —बेईमान, बेसक।

हर —हरेक, हर-घड़ी।

पाठ ४१

प्रत्यय

(३०२) प्रत्यय दो प्रकाररा हुवै—

(१) जका रूप वणावै, (२) जका नया शब्द वणावै।

(३०३) रूप वणावै जका प्रत्ययारा दो प्रकार हुवै—

(१) तिङ्-प्रत्यय—जका धातवारै आगै लागै और काळारा रूप वणावै।

(२) विभक्ति-प्रत्यय—जका सज्ञा (अथवा सज्ञारी भाँति प्रयुक्त अव्यया) रै आगै लागै और विभक्तियारा रूप वणावै (अनेकवचनरा प्रत्यय विभक्ति-प्रत्ययारै अंतर्गत हुवै)।

(३०४) नया शब्द वणावै जका प्रत्यय तीन प्रकाररा हुवै—

(१) धातु प्रत्यय—जका नयी धातुवा वणावै। जिया—

पढ+ईज	=पढीज	(पढीजणो)
कर+ईज	=करीज	(करीजणो)
उठ+आव	=उठाव	(उठावणो)
चढ+आव	=चढवाव	(चढवावणो)
स्वीकार+अ	=स्वीकार	(स्वीकारणो)
पत्थर+ईज	=पथरीज	(पथरीजणो)
चक्कर+ईज	=चकरीज	(चकरीजणो)
लाड+आव	=लडाव	(लडावणो)

(२) कृत्-प्रत्यय—जका धातवारै आगै लागै और संज्ञा य

अव्यय शब्द वणावै। कृत्-प्रत्ययसू वणियोड़ै शब्दनै कृदन्त कैवै। जिया—

ओढ + णी=ओढणी
सीड + आई=सिडाई
मार + अ=मार
उतार + ऊ=उतारू
कमा + ऊ=कमाऊ।

(२) तद्धित प्रत्यय—जका कृदन्तारै अथवा सज्ञा वा अव्यय शब्दारै आगै लागै और नया सज्ञा-शब्द वणावै। जिया—

भूख + ओ=भूखो
चूडो + वत=चूडावत
भलो + आई=भलाई
सम + ता=समता
मधुर + य=माधुर्य
चौधरी + अण=चौधरण
ईनै + लो=ईनलो।

(३०५) तिङ् और विभक्ति प्रत्ययारो वर्णन ऊपर हो चूको है। नया शब्द वणावण-वाळा प्रत्ययारो वर्णन आगै करीजै है।

शब्द-साधक प्रत्यय

(क) धातु प्रत्यय

(३०६) धातु-प्रत्यय धातवा अथवा संज्ञावारै आगै लागै और नयी धातवा बणावै। इणारा मुख्य प्रकार अै है—

(१) जका अकर्मक अथवा सकर्मकसू अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक अथवा प्रेरणार्थक धातु बणावै।

(२) जका कर्मवाच्य अथवा भाववाच्यरी धातवा बणावै।

(३) जका नाम-धातु बणावै।

(१) प्रथम प्रकार

(३०७) अकर्मकसू अकर्मक—इण मे आव प्रत्यय लागै—

सोहणो — सुहावणो
सोवणो — सुवावणो (=शोभा देवणो)।

(३०८) सकर्मकसू अकर्मक—इण मे ईज प्रत्यय लागै। जिया—

भरणो — भरीजणो
चोरणो — चोरीजणो
चावणो — चावीजणो
छडनो — छडीजणो।

(३०९) सकर्मकसू सकर्मक—इण मे ईज प्रत्यय लागै। जिया—

पढणो — पढीजणो।

(३१०) सकर्मकसू द्विकर्मक—इणमे आव, आड, और आळ प्रत्यय लागै। जिया—

देखणो — देखावणो, देखाळनो, देखाडनो
जीमणो — जिमावणो, जिमाडनो

पढणो	पढावणो
पीवणो	पियावणो
	प्यावणो
	पावणो
बोलणो	बोलावणो
समझणो	समझावणो
सीखणो	सिखावणो
सुणनो	सुणावणो ।

(३११) अकर्मकसूं सकर्मक—इणमें आव, आण, आड अथवा ओव प्रत्यय लागै। जिया—

उठणो	उठावणो	उठाडनो,	उठाणनो
जीवणो	जिवावणो	जिवाडनो,	जिवाणनो
बैसणो	बैसावणो	बैसाडनो,	बैसाणनो
रोवणो	रोवावणो	रोवाडनो,	रोवाणनो
सूवणो	सुवावणो	सुवाडनो,	सुवाणनो
ओढणो	ओढावणो,	ओढाडनो	
चमकणो	चमकावणो		
जागणो	जगावणो,	जगाडनो	
पोढणो	पोढावणो,	पोढाडनो	
फिरणो	फिरावणो		
बैठणो	बैठावणो		
लिटणो	लिटावणो		
लेटणो	लेटावणो		
डूबणो	डबोवणो		
भीजणो	भिजोवणो ।		

(३१२) अकर्मकसूं प्रेरणार्थक—प्रेरणार्थक दो हुवै, अेक आव

प्रत्ययसू वणै, दूजो वाव प्रत्ययसू। कई धातवारा दोनू प्रेरणार्थक वणै, कइयारो अेक-हीज वणै—

खुलणो	खोलणो	खुलावणो	खुलवावणो
घटणो	घाटणो	घटावणो	घटवावणो
विगडनो	विगाडनो	विगडावणो	विगडवावणो
मरणो	मारणो	मरावणो	मरवावणो
फुरणो	फोरणो	फोरावणो	फुरवावणो
बचणो	बाचणो	बचावणो	बचवावणो
बिकणो	बेचणो	बिकावणो	बिकवावणो
टूटणो	तोडनो	तुडावणो	तुडवावणो
बैंठणो		बैठावणो	बिठवावणो
उठणो		उठावणो	उठवावणो
जीवणो	जिवावणो	जिवाडणो	
मावणो	मवावणो		
सूवणो	सुवावणो	सुवाडणो	
वैंवणो	वैंवावणो		
भरीजणो (भरणो)	भरणो	भरावणो	भरवावणो
चढणो	चाढणो, चोढणो	चढावणो	चढवावणो

(३१३) सकर्मकसू प्रेरणार्थक—ऊपर मुजब आव और वाव प्रत्यय जोडनै वणायीजै—

पढणो	पढावणो	पढवावणो
जीमणो	जिमावणो	जिमवावणो
देखणो	दिखावणो	दिखवावणो
बोलणो	बोलावणो	बुलवावणो

रमणो	रमावणो	रमवावणो
वदळनो	वदळावणो	वदळवावणो
भूलणो	भुलावणो	भुलवावणो
जीतणो	जितावणो	जितवावणो
देवणो	दिरावणो	दिरवावणो
सीडणो	सिडावणो	सिडवावणो
करणो	करावणो	करवावणो
भरणो	भरावणो	भरवावणो
पकडनो	पकडावणो	पकडवावणो
खावणो	खवावणो, खवाडनो	
पीवणो	पिवावणो, पियावणो	
लेवणो	लिवावणो, लिरावणो।	

(२) द्वितीय प्रकार

(३१४) कर्मवाच्य और भाववाच्यरी धातु वणावण वास्तै ईज प्रत्यय लागै।

कर + ईज = करीज
खा + ईज = खायीज
जा + ईज = जायीज
पी + ईज = पीयीज
सू + ईज = सूयीज
सो + ईज = सोयीज
कै + ईज = कैयीज, कयीज
रै + ईज = रैयीज, रयीज
कह + ईज = कहीज

(३१५) सामान्य-भूतरै रूपरै आगै जा धातु जोडनैं भी कर्तृवाच्य और भाववाच्यरी धातु वणै—

करियो जा (करियो जावणो)।

(३) तृतीय प्रकार—नाम-धातु

(३१६) सज्ञारै आगै प्रत्यय लगायासू जकी धातु वणै उणनै नाम-धातु कैवै ।

(३१७) नाम धातुरा प्रत्यय इण भात हुवै—

१	ईज	पत्थर	+ ईज	=	पथरीज	(पथरीजणो)
		चक्कर	+ ईज	=	चकरीज	(चकरीजणो)
		गरब	+ ईज	=	गरबीज	(गरबीजणो)
२	आव	चक्कर	+ आव	=	चकराव	(चकरावणो)
३	अ	स्वीकार	+ अ	=	स्वीकार	(स्वीकारणो)
		अनुराग	+ अ	=	अनुराग	(अनुरागणो)

पाठ ४३

(ख) कृत्-प्रत्यय

(३१६) कृत् प्रत्यय धातुरै साथ जुडनै नाम, विशेषण अथवा क्रिया-विशेषण शब्द बणावै। मुख्य-मुख्य कृत् प्रत्यय इण भांत है—

(१) नाम बणावणरा प्रत्यय

अ —चाल, समझ, चमक, जोड, मेळ, उतार, फेर, उठ-बैठ।

अत —भिडत, लडत।

आई —चढाई, अवाई, पढाई, जुताई, लिखाई, कमाई, चराई।

आट —गडगडाट, घबराट, जगमगाट, मुसकराट।

आण —उठाण, मिलाण, थकाण।

आपो—चढापो, चलापो, देखापो।

आवो—खावो, पीवो, देखवो।

आरी—जियारी।

आव —लगाव, बचाव, छिडकाव, घुमाव, पडाव।

आवट—लिखावट, थकावट, मिलावट, दिखावट।

आस —प्यास, लिखास, पैंरास।

इयो —जडियो, रोवणियो, हसणियो, खावणियो, धोवणियो, पोवणियो।

ऊ —झाडू, पाडू।

ऐत —लठैत।

ओ —घेरो, जोडो, लेवो-देवो, टोटो, मेळो, भूलो, टाको, बुलावो, चढावो, पैंरावो।

ओतो—समझोतो।
ओती—घटाती।
र —वैठर, वैसर।
री —फिरवी।
गारो —पुरमगारो।
ण —चलण, सीडन, अटेरण, लेणदेण, कतरण।
णी —करणी, कहणी, चपणी, घटणी, लावणी, आमर्ण
कतरणी, वरणी, ढवणी, पैरावणी, ओढावणी।
णो —पढणो, पाड़णो, लेणो-देणो, पावणो, लडनो, मसण
वघणो, ओड़णो, ओढावणो।
त —रमत, वचत, खपत, लागत, रगत।
ती —बढती, चढती, घटती, पावती।
तर —भणतर।

(२) विशेषण वणावणरा प्रत्यय

अ —घाट—कम, भर।
अइयो —गवइयो, भरइयो।
अणियो —पढणियो, करणियो, गावणियो।
अक —तारक।
आऊ —उठाऊ, धराऊ, मराऊ, कराऊ, दिराऊ, सजाऊ।
आक —लडाक, तैराक, खवाक।
आकड —बुभाकड, कुदाकड, रमाकड।
इयल —अडियल, सडियल, मरियल।
इयो —लिखणियो, पढणियो, करणियो।
इयो —करियो, देखियो, राधियो।
ऊ —खाऊ, बिगाड़ू, मारू, चालू, लागू, उतारू, लड्डू।
ई —जोडी, हसी, वोली, रेती, टाकी।

ओटी —कसोटी ।
अेता —जणेता ।
अेती —चढ़ेती, करेती ।
अेतो —परणेतो, जाणेतो ।
अेल —मरेल, अडेल ।
अेरो —कमेरो ।
ओ —वैठो, ऊभो, नाठो ।
ओड —हसोड ।
णी —चढ़णी, खावणी, भुसणी ।
णो —करणो, खावणो, भुसणो, डसणो ।
ती —करती, जाती, देखती ।
तो —करतो, जावतो, देखतो, लेतो ।
तोड —मरतोड ।
तोडो —करतोडो, जावतोडो, देखतोडो ।
यो —खायो, दियो, देख्यो ।
वो —ढळवो, कटवो ।
वाळो —करणवाळो ।

(३) क्रिया-विशेषण बणावणरा प्रत्यय ।

अ —लिख, देख ।
अर —लिख-अर, देख-अरा ।
नै —लिख-नै, आय-नै ।
कै —देख-कै, पढ-कै ।
इया —लिखिया, आया, जाया, लिया, लिया-[illegible], किया ।
ता —जाता, जावता, करता, देखता ।

(४) संस्कृतरा कृत्-प्रत्यय

अ —घोर, नाद, युध, पाठ, लोभ, जप ।

अक —गायक, पाठक, लेखक ।

अन —नंदन, मोहन, साधन, भवन, मरण, श्रवण, भूषण, चरण, प्रार्थन, आराधन ।

अना —वेदना, प्रार्थना, तुलना, आराधना ।

अनीय —दर्शनीय, विचारणीय, करणीय, रमणीय, आदरणीय ।

आ —कथा, पूजा, चिन्ता ।

इन् (ई) —भावी, धनी, गुणी ।

इष्णु —सहिष्णु ।

उ —भिक्षु, साधु ।

उक —भिक्षुक, भावुक ।

त —गत, विगत, भूत, मृत, रत, जात, युत, ज्ञात, भक्त, रक्त, युक्त, आकृष्ट, प्रविष्ट, तृप्त, सिद्ध, विद्ध, गृहीत, कथित, विदित ।

(न) —उद्विग्न, लीन, हीन, सकीर्ण, खिन्न, भिन्न ।

ता —ज्ञाता, वक्ता, श्रोता, हर्त्ता, कर्त्ता ।

तव्य —कर्तव्य, द्रष्टव्य, मतव्य, भवितव्य ।

ति —भक्ति, प्रीति, मति, शक्ति, नीति, स्मृति, रति, बुद्धि, सिद्धि, ऋद्धि, दृष्टि, वृष्टि, भित्ति ।

(नि) —हानि, ग्लानि ।

त्र —खनित्र, चरित्र, चित्र, पवित्र, शस्त्र, क्षेत्र ।

न —यत्न, स्वप्न, प्रश्न ।

मान —यजमान, वर्तमान, विराजमान, विद्यमान ।

य —कार्य, क्षम्य, भव्य, दृश्य, सह्य ।

या —विद्या, क्रिया ।

पाठ ४४

कई विशेष कृदन्त

(३१९) नीचे बताया कृदन्त महत्त्वपूर्ण हुणैसू उणारो विशेष वर्णन करीजै है—

(१) संज्ञा-कृदन्त (२) वर्तमान-विशेषण-कृदन्त (३) भूत विशेषण-कृदन्त (४) भविष्य विशेषण-कृदन्त (५) वर्तमान क्रिया-विशेषण-कृदन्त (६) भूत क्रिया विशेषण-कृदन्त (७) विधि-कृदन्त (८) हेतु-कृदन्त (९) पूर्वकालिक कृदन्त।

(३२०) सज्ञा कृदन्त वणावण वास्तै धातुरै आगै णो अथवा ण अथवा बो प्रत्यय जोडै। जियां—

आवणो	आवण	आबो
जावणो	जावण	जाबो
लेणो-देणो	लेण-देण	लेबो-देबो
करणो	करण	करवो
पढणो	पढण	पढवो
चालणो	चालण	चालबो

(३२१) वर्तमान विशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै तो प्रत्यय लागै; इणांरै साथ कदे-कदे थको या हुवो शब्द जो डदेवै—

करतो	करतो थको	करतो हुवो
करता	करता थका	करता हुवा
करती	करती थकी	करती हुई

(३२०) थको और हुवो री जागा प्राय कर डो प्रत्यय जोडीजै । डो प्रत्यय जोड़ें जद जाति और वचनरै अनुसार विकार डा प्रत्ययमें हुवै, कृदन्तमें नहीं हुवै ।

करताडा करतोडा करताडी ।

(३२३) स्वरान्त धातुमें धातुरो अंतिम स्वर प्राय सानुनासिक हुज्यावै —

खातो खातो खावतो
खाता खाता खावता
खाती खाती खावती
खातोडो खातोडा खावतोडो ।

(३२४) भूत विशेषण-कृदन्तमें इयो अथवा यो प्रत्यय लागै । प्रत्ययरै आगै वर्तमान कृदन्तरी भांति डो प्रत्यय अथवा थको या हुवो शब्द जुडै—

करियो करघो
करिया करया
करी करी
करियोडो करघोडो
करियोडा करघोडा
करियोडी करघोडी
लागियो लाग्यो लागो
चूकियो चूक्यो चूको

कई भूत-कृदन्त संस्कृत-प्राकृतरा भूत-कृदतासूं ध्वणियोडा है—

नष्ट नट्ठ नाठो
तुष्ट तुट्ठ तूठो
रुष्ट रुट्ठ रूठो
वृष्ट वुट्ठ वूठो

उपविष्ट	वइट्ठ	वैठो
प्रविष्ट	पइट्ठ	पैठो
लब्ध	लद्ध	लाधो
कृत	किय	कियो
सुप्त	सुत्त	सूतो
युक्त	जुत्त	जूतो
दृष्ट	दिट्ठ	दीठो
मृत	मुय	मुवो
गत	गय	गयो
	लिण्ण	लीनो
	दिण्ण	दीनो
	रुण्ण	रुनो
	किण्ण	कीनो
	किद्ध	कीधो
	लिद्ध	लीधो
	दिद्ध	दीधो
	पिद्ध	पीधो ।

टिप्पणी—भूत-कृदंत और सामान्य-भूत-काळरा रूप अेक समान हुवै । भूत-कृदतरै आगै प्रायकर डो प्रत्यय अथवा थवो अथवा हुवो शब्द जुडै ।

(३२५) भविष्य विशेषण-कृदन्त—संज्ञा-कृदन्तरी दूसरी अथवा तीसरी विभक्तिरै आगै आळो, वाळो प्रत्यय जुडै—

करणाळो	करणआळो	करणवाळो
करणाळा	करणआळा	करणवाळा
करणाळी	करणआळी	करणवाळी
करवाळो	करवाआळो	करवावाळो
	करणैआळो	करणैवाळो

(३२६) विधि-कृदन्त—धातुरै आगे णो अथवा बो प्रत्यय जुड़ै—

करणो खावणो
करणा खावणा
करणी खावणी

उदाहरण—मनै काम करणो है।
तनै काल परीक्षा देणी है।
इसो काम नही करणो।

(३२७) वर्तमान क्रियाविशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै ता प्रत्यय लागै। ओ कृदन्त वर्तमान विशेषण-कृदन्तसू समानता राखै—

करता आता आता आवता।

(३२८) भूत क्रियाविशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै इया, या, अथवा आ प्रत्यय लागै। ओ भूत विशेषण-कृदन्तसू समानता राखै—

करिया—कर्या, आया, बैठा, नाठा।

(३२९) हेतु-कृदन्त—धातुरै आगै अण अथवा बा प्रत्यय लागै, कदे-कदे साथै नै प्रत्यय और जुड़ै—

(१) अण—करण खावण पीवण
करणनै खावणनै पीवणनै।
(२) बा—करबा खाबा पीबा
करबानै खाबानै पीबानै।

(३४०) पूर्वकालिक-कृदन्त—धातुरै रूपमे—ही हुवै, अथवा सायमे धातुरै आगै नै या 'र या अर प्रत्यय जुड़ै—

कर	खा	पी
करनै	खायनै	पीनै
कर'र	खा'र	पी'र
कर-अर	खाय-अर	पी-अर

पाठ ४५

(ग) तद्धित प्रत्यय

(३४१) मुख्य-मुख्य तद्धित-प्रत्यय इण भांत है—

(१) संज्ञा बणावणरा प्रत्यय

(१) भाववाचक संज्ञा

आई —भलाई, लवाई, पिंडताई, ठकराई चिकणाई, खटाई, ललाई, सादाई ।

आको —सड़ाको, धड़ाको, भड़ाको, धमाको ।

आट —चरड़ाट, भरड़ाट, वण्णाट, चिवणाट ।

आटो —चरड़ाटो, सर्राटो ।

आण —ऊंचाण, नीचाण ।

आणो —तुरवाणो ।

आयत —अपणायत, विद्यायत, पंचायत, बोतायत ।

आरो —जमारो ।

आळी —लेवाळी, देवाळी ।

आळो —ऊनाळो, सियाळो, वरसाळो ।

आस —मिठास, खटास, चरकास, वाडास, कड़वास, तीखास, चिकणास, गरमास, निवास, रतास, धोळास, कळास, काळास ।

इयाड —मूंघियाड, सूंघियाड ।

ई —हिंदी, गुजराती, राजस्थानी, अंग्रेजी, बुद्धिमानी, अकलमंदी, सावधानी, गरीबी, महाजनी, मजूरी, दस्तूरी, चोरी, बीसी, पच्चीसी, साठी, बत्तीसी ।

ईवाडो —मूघीवाडो, सस्तीवाडो, सूधीवाडो ।

ऊ —नवू ।

ओ —आगो-पीछो, सराफो ।

औती —बुढौती, मनौती, कटौती ।

गी —मादगी, देणगी ।

गीरी —सिपाहीगीरी ।

ताई —मूरखताई ।

प —स्याणप (सँणप), धीरप ।

पण —बचपण, भलपण, सगपण ।

पणो —टाबरपणो, माईतपणो, मिनखापणो ।

पो —बुढापो, मोटापो ।

म —पाचम, आठम, दसम ।

यू —पाच्यू , सात्यू , दस्यू ।

संस्कृत-प्रत्यय

अ —गौरव, शैशव ।

इमा —महिमा, लघिमा, गरिमा, अणिमा, लालिमा, हरीतिमा ।

ई —चातुरी, माधुरी ।

ता —सरळता, समता, नीचता, सहायता ।

त्यका —अधित्यका, उपत्यका ।

त्व —मनुष्यत्व, गुरुत्व, कवित्व ।

य —लालित्य, पांडित्य, माधुर्य, धैर्य, काव्य, वाणिज्य ।

(२) जातिवाचक

आई —मिठाई, खटाई ।

आण —जोधाण, जेसाण ।

आणी —हिंदवाणी, तुरकाणी ।

आणो —हिंदवाणो, जोधाणो, बीकाणो, तिलगाणो, सिराणो, पगाणो, दादाणो, नानाणो ।

आड —मेवाड, ढूढाड ।

आथियो —सिराथियो, पगाथियो ।

आनो —राजपुतानो ।

आयत —बिछायत, पचायत, पोहुरायत, लैंणायत ।

आर —सुनार, लुहार, कुंभार, चमार ।

आरो —लखारो, ठठारो, धूतारो ।

आळी —हथाळी, दिवाळी ।

आळो —पनाळो ।

आवट —मावट, कचावट ।

आवटो —मावटो, वावटो ।

इयो —रसोइयो, आढतियो ।

ई —तेली, ढोली, तबाळी,
सेती, वाडी, असवारी
बत्तीसी,
कठी, अगूठी,
भीडी, सीरी ।

ईवाडो —मैलीवाडो ।

ऐरो —नानेरो, दादेरो ।

ऐल —नवेल, फुलेल ।

ऐली —तपेली, अधेली, हवेली ।

ऐलो —अधेलो ।

ओ —आगो, पीछो, लारो, मारो, बीझो, सराफो ।

ओळ —कागोळ ।

ओडो —हथोडो ।

ओती —कठौती।
गी —गदगी।
णी —वादणी।
ळी —सूतळी।
ळो —पूतळो।
वाड —मारवाड, गोडवाड।
वाडो —अेठवाडो।
वाळ —मेघवाळ, अगरवाळ, ओसवाळ, पल्लीवाळ।

संस्कृत प्रत्यय

आमह —पितामह, मातामह।
ता —जनता।
य —राज्य, वयस्य, सदस्य, गव्य।

(२) अपत्यवाचक

अ —काधळ।
ओ —वीको, वीदो, जोधो।
ओत —कांधळोत, रावळोत, सतदासोत।
आणी —सादाणी, भादाणी, लालाणी, कीकाणी।
को —गोयनको, हिम्मतसिंघको, नाई-को, बामण-को, राम-को।
वत —वीदावत, राणावत, राकावत, रामावत, चूंडावत।

संस्कृत प्रत्यय

अ —भार्गव, पांडव, कौरव, यादव, राघव, पार्थ, सौमित्र, सौभद्र।
इ —दशरथि, सौमित्रि, पाणिनि।
अेय —वैनतेय, मार्कण्डेय, भागिनेय, कौन्तेय।
य —आदित्य, दैत्य, जामदग्न्य।
व्य —पितृव्य, भ्रातृव्य।

(४) ऊनवाचक प्रत्यय

इयो —गोपाळियो, लिछमणियो ।

ओली —खटोली ।

की —मिनकी, भाणकी, नायणकी ।

को —मिनको, टोडको ।

डी —लाधूडी, पाखडी, गाठडी, पलगडी, मावडी, छावडी ।

डो —रामूडो, भाईडो, कानूडो, मनडो, जिवडो, छावडो, बापडो, पखीडो, सदेसडो ।

ती —घोडती, नायणती ।

तो —घोडतो, मगतो ।

लो —रामलो, घोडलो, तिणकलो ।

ऊनवाचक प्रत्यय कदे-कदे दोलडा लागै—

आखडली, बासडली, रातडली मावडती, आवलियो, घोडलियो, तिणक्लो, वाटक्डी ।

(५) आदरवाचक

जी —गुरूजी, पिंडतजी, भाईजी, सासूजी, माजी ।

सा —गुरासा, भाईसा, मा सा, काको-सा ।

(६) कर्तृवाचक

आडी —खिलाडी ।

आळ —लैवाळ, दवाळ ।

आरी —पुजारी भिखारी ।

आरो —बिणजारो, हत्यारो ।

ऐंतो —धाडैती ।

इयो —खटपटियो ।

खोर —हरामखोर, चुगलखोर ।

खोरी —सक्करखोरो, चुंगलखोरो ।
गर —कारीगर, जाणगर, मांगीगर, चूडीगर, रफूगर ।
गारो —कामणगारो, जादूगारो ।
दार —चौकीदार, कामदार, हवलदार ।
वार —उम्मेदवार ।

(२) विशेषण बणावणरा प्रत्यय

(१) मत्वर्थीय प्रत्यय—
आल —दयाल ।
आलु —दयालु ।
आळ —रूपाळ ।
आळो —रूपाळो, गाडीआळो, नखराळो, लादीआळो, (लादाळो)
इयो —आढतियो ।
ई —धनी, सुखी, गुणी, सीरी, भीडी ।
ईलो —कोडीलो, खोडीलो, खातीलो, मातीलो, रातीलो ।
ऊ —परजू, भीडू, मेळू ।
चो —मसालचो ।
दार —खूबीदार, रंगदार, धारीदार, जाळीदार, छडीदार ।
मत —श्रीमत ।
मान —बुद्धिमान, श्रीमान ।
ल —दातल, घायल, दागल ।
वत —बळवत, गुणवत ।
वतो —धनवतो, गुणवतो ।
वान —गाडीवान, बळवान, रूपवान, बागवान, धनवान ।
वाळ —गयावाळ, गयोवाळ ।

वाळो —रपवाळो, चीडीवाळो ।

संस्कृत प्रत्यय

इत —तारकित, कंटकित, पुष्पित, सुखित ।

इक —मायिक ।

इम —अग्रिम, अंतिम ।

इल —फनिल, तुंदिल, पंकिल ।

र —मधुर ।

वी —मेधावी, मायावी, तेजस्वी, ओजस्वी ।

(२) अन्य विशेषण-प्रत्यय

आऊ —घराऊ, वटाऊ, अगाऊ ।

आडी —मेवाडी ।

आण —पैलाण, दूजाण ।

आयो —तिसायो ।

आर —गवार, दुधार ।

आरी —मुखारी, दुखारी ।

आरू —दुधारू ।

इयारी —सुखियारी दुखियारी ।

इयो —सुखियो चदणियो अगूरियो, पळगतियो ।

ई —गुलाबी, सूती, देसी, पंजाबी, मारवाडी ।

ईणो —लाखीणो हमीणा, तमीणो ।

ईल —रंगील ।

ईलो —रंगीलो रसीला चटकीलो, वादीलो ।

ऊ —दाऊ, तीनू, नन्नू ।

ऊ —वरसाळ, सियाळू, उनाळू, पटू ।

ऐरो —सुनैरी ।

अेरो —सुनरो ।

ओ —भूखो, तिसो, ठडो, मराठो।
गर —वडगर।
नू —दोनू।
लडो —इकेलडो, दोलडो, तेलडो, चौलडो, पचलडा।
लो —अेकलो, म्हारलो, थारलो, आपणलो, बनलो, आगलो, लारलो, पाछलो, ऊचलो, नीचलो, ऊपरलो, ईनलो, ऊनलो।
ळो —म्हाळ-ळो, थाळ-ळो।
वडो —इकेवडो, दोवडो, तेवडो।
वो —पाचवो, सातवो, दसवो।
सर —कायदेसर,

सस्कृत प्रत्यय

अ —शैव, वैष्णव, पाचाल, कापोत, मौन, नैश, यौवन, पार्थिव।
अक —मीमासक।
इक —वार्षिक, सैनिक, पथिक, शारीरिक, मानसिक, वाचिक, कायिक, आस्तिक, वैदिक, पारलौकिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक।
इय —क्षत्रिय, राष्ट्रिय।
ई —कुटुबी।
ईन —कुलीन, ग्रामीण, विश्वजनीन।
ईय —पाणिनीय, भारतीय, त्वदीय, मदीय, राष्ट्रीय।
अेय —वाराणसेय, पौरुषेय, पाथेय, आतिथेय।
कीय —स्वकीय, राजकीय, परकीय।
कट —प्रकट, उत्कट, विकट।
तन —सनातन, पुरातन, सायतन, अधस्तन, चिरतन।
त्य —दाक्षिणात्य, पाश्चात्य, पौरस्त्य, अमात्य।

मात्र —फळमात्र ।
न —स्त्रैण ।
पाश —वेशपाश ।
मय —मृन्मय, काष्ठमय, दु खमय, अन्नमय ।
य —वायव्य, सम्य, न्याय्य हृद्य, धन्य, वश्य ।

(३) क्रियाविशेषण बणावणरा प्रत्यय

आव — तडाव, भडाव, सटाव, खटाव ।
आस —कदास ।
देसी —पट-देसी, भट-देसी, खटाव-देसी, सडाक-देसी ।
वार —क्रमवार ।
सर —रीत-सर, धाम-सर, लागत-सर, कायदे-सर, वक्त सर ।

सस्कृत प्रत्यय

त —विशेषत , स्वत , परत ।
वत् —पुत्रवत् ।
शः —अनेकश , अक्षरश , शब्दश , क्रमश ।
चित् —कदाचित्, क्वचित्, किंचित् ।

(४) स्वार्थिक प्रत्यय

स्वार्थिक प्रत्यय लाग्यासू अर्थ नहीं बदळै, सागी रैवै—

आडी —अगाडी, पिछाडी ।
ओरो —घणेरो, भलेरो, आधेरो, परेरो, वडेरो ।
ओ —हसो, कागो, रामो, बळदेवो ।
क —बाळक, भिक्षुक ।
को —वडको, छोटको, तिणको ।
ती —थमती ।

ल —नणदल ।

ळो —आघळो, सावळो ।

कई ऊनवाचक प्रत्यय वास्तव में स्वार्थिक प्रत्यय-ही है—

डी —चोयलडी, सहेलडी ।

डो —सदेसडो, मनडो, हिवडो, करियोडो ।

(४) नारी-प्रत्यय

नरजातिसू नारीजाति बणावणरा प्रत्यय भी तद्धित प्रत्यय है। उणारो वर्णन लारै सज्ञा-प्रकरणमे हो चूको है ।

पाठ ४६

समास

(३४२) दो शब्दानैं मिलायनैं अेक नयो शब्द वणावणो इणनै समास कवै। जिया—

सुख + दुख = सुख-दुख
हरि + भक्ति = हरि-भक्ति
जन + मन = जन-मन।

(३४३) समाससू वणियोडा शब्द सामासिक शब्द अथवा समास कहीजै। समस्त शब्दरा दोनू अगभूत शब्द का तो मिलायनै लिखीजै, का दोनारै वीचमे योजक-चिन्ह (—) दिरीजै। जिया—

हरिभक्ति, हरि-भक्ति।

(३४४) समासरै आगै भळै शब्द जोडनै नयो समास वणायीज सकै। जिया—

सुख-दुख + दायक = सुख-दुख-दायक।
हरि-भक्ति + प्रिय = हरि-भक्ति-प्रिय।
जन-मन + मोहन = जन-मन-मोहन।

(३४५) समासरा च्यार भेद हुवै—

(१) द्वन्द्व—उभय-पद-प्रधान।
(२) तत्पुरुष—उत्तर-पद-प्रधान।
(३) बहुव्रीहि—मान्यतर-पद-प्रधान।
(४) अव्ययीभाव—पूर्व-पद-प्रधान।

(१) द्वन्द्व

(३४६) जद और अथवा या शब्दसू जुडियोडा दो शब्दानै, वीच

मायसू और अथवा या नै आघो करनै, मिलायीजै। इणमे दोनू शब्द प्रधान अर्थात् बराबरीरा हुवै। जिया—

सुख-दुख = सुख और दुख
मा-बाप = मा और बाप
बेटो-बेटी = बेटो और बेटी
राम-लिछमण = राम और लिछमण
लाल-पीळा = लाल और पीळा
दो-तीन = दो या तीन
काळो-गोरो = काळो या गोरो।

(३४७) द्वन्द्वरा दो भेद हुवै—

(१) समाहार—जद दोना शब्दारो सामूहिक अर्थ लिरीजै। समाहार-द्वन्द्व सदा अेकवचन-मे हुवै। जिया—

मैं घणो ही सुख-दुख उठायो।

(२) इतरेतर—जद दोनां शब्दारो न्यारो-न्यारो अर्थ लिरीजै। इतरेतर सदा अनेकवचनमे हुवै—

मै घणा ही सुख-दुख उठाया।
राम-लिछमण वनमे गया।

(२) तत्पुरुष

(३४८) तत्पुरुषमे पछलो शब्द प्रधान हुवै और पैलडो शब्द उणरी विशेषता बतावै। इणमे पैला शब्दरा विभक्ति-चिह्नरो लोप करनै दोना शब्दानै मिलायीजै—

गंगा-रो तट = गंगा-तट
देस-सू निकाळो = देस-निकाळो
आप पर बीती = आप-बीती

(३४९) तत्पुरुषरा तीन भेद हुवै—

(१) व्यधिकरण तत्पुरुष (२) समानाधिकरण तत्पुरुष और (३) उपपद तत्पुरुष ।

(३५०) व्यधिकरण तत्पुरुष—जद समासरा दोनू शब्द न्यारी-न्यारी विभक्तियामे हुवै । पैलडो शब्द चौथीमू आठवी ताणी किणी विभक्तिमे हुवै और पछलो शब्द पैली विभक्तिमे हुवै । जिया—

कृष्ण-नै अर्पण = कृष्णार्पण
दु ख-नै प्राप्त = दु ख-प्राप्त
गुण-सू बायरो = गुण-बायरो
धन-सू अध = धनाध
रूप-रो मद = रूप-मद
शिव-रो मदिर = शिव-मदिर
देश-रो भक्त = देश-भक्त
रसोई-रो घर = रसोई-घर
कार्य-मे चतुर = कार्य-चतुर
पर-मे बीती = पर-बीती
घर-मे बैठ्यो = घर-बैठ्यो ।

(३५१) जिण तत्पुरुष समासरो दूसरो शब्द इसो हुवै जिणरो स्वतत्र प्रयोग नही हुवै उणनै उपपद-तत्पुरुष कैवै—

कुभनै करै जको कुभकार ।
जळमे चरै जको जळचर ।
जळनै धारै जको जळधर ।
गोवानै पाळै जको गोप ।
चिडीनै मारै जको चिडीमार ।

(३५२) समानाधिकरण तत्पुरुष—जद दोनू शब्द अेक ही विभक्ति-

मे—अर्थात् प्रथमा विभक्तिमे—हुवै। इणनै कर्मधारय भी कैवै। जिया—

काळी है जको मिर्च	=काळी मिर्च।
बाळ है जको राजा	=बाळ-राजा।
आधो है मरियो जको	=अध-मरियो।
जको लाल भी है और पीळो भी	=लाल-पीळो।
जको खाटो भी है और मीठो भी	=खट-मीठो।
दहीमे डुबियोड़ो बडो	=दही-बडो।
घन जिसो श्याम	=घनश्याम।
चन्द्र जिसो मुख	=चद्र-मुख।
मुख-हीज चद्र	=मुख-चद्र।

(३५३) समानाधिकरण तत्पुरुषम अेक नाम और अेक विशेषण हुवै, कदे-कदे दो विशेषण अथवा दो नाम हुवै। अेक नाम और अेक विशेषण हुवै तो विशेषण पैली आवै पण कदे-कदे पछै भी आवै।

विशेषण और नाम	—काळीमिर्च, परमानद, घनश्याम।
विशेषण और विशेषण	—ऊँचो नीचो (मारग)।
	लाल-पीळो (आख)।
नाम और नाम	—चन्द्र-मुख (चद्र जिसो मुख)।
	वचनामृत (अमृत जिसो वचन)।

(३५४) पैलड़ो शब्द सख्यावाचक विशेषण हुवै और सारे समासरो सामूहिक अर्थ हुवै जद द्विगु समास कहीजै—

तीना लोकारो समूह	=त्रिलोकी।
पाच सेरारो समूह	=पसेरी।
पाच वटारो समूह	=पचवटी।
च्यार महीनारो समूह	=चौमासो।

दो आनारो समूह =दो-आनी ।
छै दामारो समूह = छदाम ।

(३५५) कई लोग प्रताप, अधिराज आदिगे प्रादि-समास तथा अधर्म, अनिष्ट, नगण्य, अणजाण, अणधारियो आदि मे नञ्-तत्पुरुष समास मानै है, पण प्र, अ, अन्, अण, न आदि उपसर्ग है, समास दो शब्दारो हुवै, उपसर्ग और शब्दरो नही, इणीतरा सपुत्र, स-सम्मान, सहर्ष, सोदर आदिमे भी स नै उपसर्ग समझणो ।

(३) बहुव्रीहि

(३५६) बहुव्रीहिमे दोनू ही शब्द अप्रधान हुवै, अर्थात् समासरा दोनू शब्द जिण पदार्थारो बोध करावै पूरो समास उणासू भिन्न तीजै-हीज पदार्थरो बोध करावै । जिया—

(१) लबोदर

ओ समास लब और उदर इण दो शब्दारा मेळसू वणियो है पण इणरो अर्थ ना तो लबो है, ना उदर, पण बो व्यक्ति है जिणरो उदर लाबो (अर्थात बडो) है अर्थात गणेशजी ।

(२) दशानन

इण मे ना दश-रो अर्थ है, ना आनन रो, पण उण व्यक्तिरो अर्थ है जिणरै दश आनन हा अर्थात रावण ।

(३५७) बहुव्रीहिमे भी तत्पुरुष जिया पैलै शब्दरी विभक्तिरो लोप हुवै, पूरो समस्त शब्द विशेषण हुवै ।

(३५८) बहुव्रीहिरा दो भेद हुवै—

(१) व्यधिकरण—जद पैलडै शब्दमे पहली विभक्ति हुवै और दूसरैमे सातवी अथवा आठवी—

चक्र है पाणिमें जिणरै =चक्रपाणि (विष्णु)।
इद्र है आदिमें जिणारै =इन्द्रादि (देवता)।
चद्र है शेखर पर जिणरै = चन्द्रशेखर (शिव)।

(२) समानाधिकरण—जद दोनू शब्द अेक ही, अर्थात् प्रथमा, विभक्तिमें हुवै—

सात है खड जिणमें =सतखडो (महल)।
च्यार है भुजा जिणरै =च्यार-भुजा (देवी)।
महा है बाहु जिणरा =महा-बाहु (बीर)।
चन्द्र-सो है मुख जिणरो =चद्र-मुख।

(४) अव्ययीभाव

(३५६) जो समास अव्यय बण जावै अर्थात क्रियाविशेषणरो काम करै उणनै अव्ययीभाव कैवै।

(३६०) इणमें पैलडो शब्द प्राय कर अव्यय हुवै—
यथा-शक्ति =शक्तिरै अनुसार।
क्षण-क्षण =प्रत्येक क्षण मे।
यथा-सभव =सभव हुवै जित्तै ताई।
हर-घडी =हरेक घडीमें।
रातू-रात =रातरै माय-होज।
मनी-मन =केवळ मनमें।

(३६१) अेक-ही शब्द अर्थरै अनुसार न्यारा-न्यारा समासरै अन्तर्गत आवै। जिया—सत्यव्रत, लाल-पीळा।

(१) सत्यव्रत —सत्य और व्रत =द्वन्द्व।
सत्यरो व्रत =तत्पुरुष।
सत्य है जो व्रत =कर्मधारय।
सत्य है व्रत जिणरो=बहुव्रीहि।

(२) लाल-पीळा—लाल और पीळा

(कई फळ लाल है, कई पीळा है)=द्वन्द्व ।

जका लाल भी है और पीळा भी है

(हरेक फळ लाल और पीळो है)=कर्मधारय ।

(३६२) समासरा शब्दारौ न्यारा-न्यारा करणनै विग्रह कैवै । ऊपर हरेक समासरो विग्रह मार्थ दियो है । अव्ययीभावरो विग्रह समासमे आयोड़ा शब्दास् नहीं हुवै, अर्थरै अनुसार दूजा शब्द लावणा पडै—

राजा-राणी—राजा और राणी (द्वन्द्व) ।

दिन-रात —दिन और रात (द्वन्द्व) ।

बाळ-हठ —बाळ(क)रो हठ (तत्पुरुष) ।

सत् पुरुष —सत् है जो पुरुष (कर्मधारय) ।

पसेरी —पाच सेरा रो समूह (द्विगु) ।

कमजोर —कम है जोर जिणमे (बहुव्रीहि) ।

यथाविधि —विधिरै अनुसार (अव्ययीभाव) ।

दिनरात —दिनम और रातमे लगातार (अव्ययीभाव) ।

पाठ ४७

पुनरुक्त शब्द

(३६३) सागी शब्द दो वार आयासू जको शब्द वणै उणनैं पुनरुक्त शब्द कैवै। जिया—

घडी-घडी, वडा-वडा, देश-देश, जय-जय।

(३६४) पुनरुक्त शब्द अेक प्रकाररो सामासिक शब्द ही हुवै।

(३६५) पुनरुक्त शब्द सात तरारा हुवै—

१ जद शब्दरै आगै सागी शब्द आवै—

रोम-रोम	लोटा-लोटा
कोडी-कोडी	पगा-पगा
दाणो-दाणो	हुता-हुता
भाई-भाई	करता-करता
मीठा-मीठा	बैठा-बैठा
राम-राम	पूगता-पूगता
कुण-कुण	ला-ला
कोई-कोई	पी-पी
जको-जको	देख-देख
	आवो-आवो
	धीरे-धीरे
साची-साची	कदे-कदे
धीमो-धीमो	ऊपर-ऊपर
चूर-चूर	सागै-सागै

२ जद शब्दरै आगै सागी शब्द आवै पण बीचमे कोई संयोजक आखर आ ज्याय—

कोर-म-कोर	साथै-रो-साथै
सोट-म-सोट	लारै-रो-लारै
वारवार	वठै-रो-वठै
रात-वि-रात	बो ही-बो
काल-रो-काल	दूध ही-दूध
	सूतो-ही-सूतो ।

३ जद शब्दरै आगै उणरो पर्याय शब्द जुडै—

सदा-सर्वदा	लुच्चो-लफगो
भाई-बध	लूलो-लगडो
मोटो-ताजो	जळ-थळ
	सोचणो-विचारणो ।

४ जद शब्दरै सागै जोडैरो शब्द जोडीजै—

लेण-देण	काका-वाबा
अठै उठै	आटो सूवो
आर-पार	ऊधो-सूधो
जिया-तिया	दिनूगै सिंझ्या
	आर-म-पार ।

५ जद क्रियारै सागै क्रियारो प्रेरणार्थक रूप जोडीजै-
होणो-हुवणो, करणो-करावणो, मरणो-मारणो ।

५ जद शब्दरै आगै निरर्थक समानुप्रास शब्द जोडीजै—

टेढो-मेढो	सीधो-साधो
सामो-सामो	भीड-भाड
पूछ-ताछ	टीम-टाम
बात-चीत	टाल-म-टोळ ।

६ जद शब्दरै आगै सायरा समानुप्रास शब्द आवीजै—

समझणा-बूझणा   चालणो-सालणा
जोर-शोर   हाल-चाल
नड़नो भिड़ना।

७ जद दोनूं शब्द अर्थहीन हुवै—

अटर-सटर सटर पटर, अड-बड।

(३६६) बातचीतम अपूण पुनरुक्त शब्दारो घणो प्रचार है। पुनरुक्ति करण वास्तै प्राय वर ध अक्षर कामम लायीजै—

रोटी-धाटी   रोवणो धोवणो
माटा-धाटो   जीमणो-धीमणो
कपड़ो-धपड़ो   कलम-धलम।

पुनरुक्ति वास्तै न्यारी-न्यारी भाषावामे न्यारा-न्यारा आखर काममे आवै—

हिंदी — व, उ (जल-वल, जल-उल, घोड़ा-ओड़ा)
बंगला — ट (जोल-टोल, घाडा-टोडा)
मैथिली — त (जल-तल, घोडा-ताडा)
गुजराती — व (जळ-वळ, घोडो-वोडो)
मराठी — व (जळ-विळ, घोडो-वोडो)।

पाठ ४८

अनुकरण-शब्द

(३६७) किणी पदार्थरी यथार्थ अथवा कळपित ध्वनिनै ध्यानमें राखनै जको शब्द बणायीजै उणनै अनुकरण-शब्द कैवै । जिया—

खट्, सट्, पट्, सर्, फुर्र ।

(३६८) अनुकरण-शब्द प्राय पुनरुक्त होयनै प्रयुक्त हुवै । जिया—

खटखट गटगट पटपट फटफट सटसट ।
गडगड भडभड तडतड बडबड भटसड ।
सरसर चरचर परपर टरटर फरफर ।
झळमळ भळसळ भळभळ, कलकल, छलछल ।
चरड-चरड, जरड-जरड, थरड-थरड, गरड-मरड ।

(३६९) पुनरुक्तिसूं पैली बीचमें 'आ' प्रत्यय जोडनैंसूं क्रियाविशेषण बणै—

खटाखट गटागट बटाबट मटामट ।
भडाभड तडातड खडाखड दडादड ।

(३७०) कदे-कदे आक प्रत्यय जोडनै पुनरुक्ति करीजै—

खटाक-खटाक धडाक-धडाक
तडाक-तडाक भडाक-भडाक ।

(३७१) कदे-कदे अनुकरणवाचक शब्दरी अधूरी पुनरुक्ति हुवै अर्थात् पहलो आखर बदळनै पुनरुक्ति करीजै—

गडबड खडबड ।

पाठ ८६

संयुक्त क्रिया

(३७२) कृदंत नाम अथवा विशेषणरै मार्य क्रियारा सयागसू जकी नवी क्रिया वर्णे उणनै संयुक्त क्रिया कैवै । जियां—

(१) सीता पाठ बाच लियो ।
(२) वरगा हुवण लागी ।
(३) मनै काम करण दो ।
(४) हरी दिनूगै आया करै है ।
(५) वयू सिर मार्थ बोझ लिया फिरै ?
(६) माधोजी रोटी कर राखी है ।
(७) वामण आता जामो अर जीमता जासी ।
(८) देवो पाठ याद करै है ।
(९) दुर्गा तीन पोथियां मोल ली ।
(१०) आ वात याद आयी कोनी ।
(११) भाई मनै घणो प्यार करै है ।
(१२) मैं पोथी आरंभ करी ।
(१३) सिपाही सगळी कथा वर्णन करी ।
(१४) रयम नाम कर दी ।

(३७३) वणावटरी दृष्टिसू संयुक्त क्रिया आठ प्रकाररी हुवै—

(१) जका पूर्वकालिक-कृदंतसू वर्णे । इणमे पूर्वकालिक कृदन्तरै आगै लेवणो, देवणो, सकणो, चूकणो, नाखणो, गेरणो, मरणो पावणो, जावणो, आवणो इत्यादि क्रियावा आवै । जियां—

ले लियो, कर लियो, बैठ लियो, आ लियो ।
ले दियो, कर दियो, नाख दियो, रो दियो ।

ले सकियो, कर सकियो, बैठ सकियो, आ सकियो ।
ले चूको, कर चूको, बैठ चूको, आ चूको ।
ले नाखियो, कर नाखियो, तोड नाखियो ।
ले गेरचो, कर गेरचो, मार गेरचो ।
ले मरियो, कर मरियो, डूब मरियो ।
ले पायो कर पायो बैठ पायो आ पायो ।
लेय ग्यो, कर ग्यो, बैठग्यो, आयग्यो ।
ले आयो, कर आयो, बैठ आयो, जा आयो ।

(२) जकी हेतु-कृदतसू वर्णं । इणमे हेतु-कृदतरै आगै देवणो, पावणो, लागणो, सकणो, इत्यादि क्रियावा आवै । जिया—

लेवण दियो, करण दियो, आवण दियो ।
लेवण पायो, करण पायो, आवण पायो ।
लेवण लागियो, करण लागियो, आवण लागियो।
लेवण सकियो, करण सकियो, आवण सकियो ।
लेणं सकियो, करणं सकियो, आणं सकियो ।
लेवा दियो, करवा दियो, आवा दियो ।

(३) जकी विधि-कृदतसू वर्णं । इणमे विधि-कृदतरै आगै करणो, चावणो पडनो इत्यादि क्रियावा जुडै । जिया—

लेवो करै, करवो करै, आवो करै ।
लेवो चावै, करवो चावै, आवो चावै ।
लेणो चावै, करणो चावै, आणो चावै ।
लेणो पडै, करणो पडै, आणो पडै ।

(४) जकी वर्तमान विशेषण-कृदतसू वर्णं । इणमे आवणो, जावणो, रैवणो इत्यादि क्रियावा जुडै । जिया—

लेतो आयो, करतो आयो, बैठतो आयो ।
लेतो ग्यो, करतो गयो, बैठतो गयो ।
लेतो रयो, करतो रयो, आतो रयो ।

(५) जकी भूत विशेषण-कृदतमू वर्णं । इणम आवणो, जावणो, करणा चावणो, पड़ना इत्यादि क्रियावा आवै । जिया—

चालियो आवै,	भरिया आवै ।
चालिया जावै,	भरिया जावै ।
करियो जावै	पढ़िया जावै ।
आया चावै है,	उठियो चावै है ।
करियो चावै है,	पढ़िया चावै है ।
छूटियो पड़ै है	टूटिया पड़ै है ।
आया करै है	वाचिया करै है ।

(६) जकी वर्तमान क्रियाविशेषण-कृदतमू वर्णं । इणमे आवणा इत्यादि क्रियावा जुडै । जिया—

करता आवै है,	वाचता आवै है ।
उठता आवै है,	उडावता आवै है ।

(७) जकी भूत क्रियाविशेषण-कृदतमू वर्णं । इणमे जावणो, फिरणो इत्यादि क्रियावा जुडै । जिया—

लिया जावै है,	वाचिया जावै है
आया जावै है,	किया जावै है ।
उठिया जावै है,	रोया जावै है ।
लिया फिरै है,	चढ़िया फिरै है ।

(८) जकी सज्ञा अथवा विशेषणसू वर्णं । इसमे विशेषकर करणो और हुवणो क्रियावा आवै । जिया—

स्वीकार करणो,	स्वीकार हुवणो ।
याद करणो,	याद हुवणो ।
याद रैवणो,	याद आवणो ।
नास करणा,	नास हुवणो ।

(३७४) अर्थरी दृष्टिसू संयुक्त-क्रियारा अनुमति-सूचक, अभ्यास-

सूचक, इच्छासूचक, आरभमूचक, आवश्यकतासूचक, कर्तव्यसूचक, परीक्षा-सूचक, प्रकर्षसूचक, समाप्तिसूचक, सातत्यसूचक, सामर्थ्यसूचक इत्यादि अनेक प्रकार हुवै—

(१) अनुमति-सूचक—जावण देवै, जावा देवै।

(२) अभ्यास-सूचक—आया करै, आतो रैवै।

(३) सातत्यसूचक—करतो जावै, किया जावै, करतो रैवै।

(४) आरभमूचक—करण लागै, करवा लागै।

(५) इच्छासूचक—करणो चावै, कियो चावै।

(६) आवश्यकतासूचक—करणो पड़ै, करणो पड़ैला, करणो है, करणो हुसी।

(७) कर्तव्यसूचक—करणो चाहीजै, कियो चाहीजै।

(८) परीक्षासूचक—कर देखै।

(९) प्रकर्षसूचक—कर नाखियो, कर गेरच्यो, कर मारच्यो, कर बैठ्यो, कर पड्यो, दे मारचो, कर दियो, कर लियो, करग्यो।

(१०) समाप्तिसूचक—कर चूका, कर छूटो।

(११) सामर्थ्यसूचक—कर सकै, कर पावै।

(१२) शीघ्रतासूचक—आयो चावै है, करो चावै है, कियो चावै है।

अध्याय ४

वाक्य-विचार

पाठ ५०

उद्देश्य और विधेय

(३७६) शब्दारो जको समूह अेक पूरी वात कैवै वो वाक्य क्हीजै।

(३७७) वाक्यरा दो भाग हुवै—(१) उद्देश्य और (२) विधेय।

(३७८) आपा कोई वात कैंवा जद कैई पदार्थरो नाव लेवा और उणरै वारैमे कोई वात कैंवा।

(३७९) जिण पदार्थरै वारैमे वात क्हीजै उणनै उद्देश्य कैवै और जिका वात कहीजै उणनै विधेय कैवै। जिया—

(१) विद्यार्थी पढै है।

अठै पैली विद्यार्थी-रो नाव लियो, फेर उणरै वारैमे अेक वात कही कै, पढै है। इण वाक्यमे विद्यार्थी शब्द उद्देश्य और पढै है शब्द विधेय है।

(२) फळ तोडीजै है।

अठै पैली फळ-रो नाव लियो, फेर उणरै वारैमे आ वात कही कै, तोडीजै है। अठै फळ उद्देश्य और तोडीजै है विधेय है।

(३८०) विधेयमे कम-सू-कम क्रिया जरूर रैवै।

(३८१) वाक्य छोटा-वडा सव तरारा हुवै। सवसू छोटै वाक्यमे दो शब्द हुवै—अेक उद्देश्य और अेक विधेय। कदे-कदे उद्देश्य लुक्योडो रैवै जद वाक्य अेक हीज शब्दरो हुवै। जिया—

(१) जा।

अठै पूरो वाक्य 'तू जा' है, उद्देश्य 'तू' छिपियोडो है।

(२) आऊ हू ।

अठै पूरो वाक्य 'हू आऊ हू' है, उद्देश्य 'हू' छिपियोडो है ।

(३८२) वडा वाक्यारा उदाहरण—

म्हारा पिताजी ऊपर गया है ।

अठै पिताजी-रै बारैमे बात कही कै गया है, म्हारा शब्द विशेषण है और पिताजी-री विशेषता बतावै है, ऊपर शब्द क्रियाविशेषण है और गया है क्रियारी विशेषता बतावै है । इण वाक्यमे—

म्हारा पिताजी उद्देश्य है और
ऊपर गया है विधेय है ।

उद्देश्यरा विशेषण उद्देश्यरै अतर्गत और विधेयरा विशेषण विधेयरै अन्तर्गत आवै ।

(३८३) क्रियारो पूरक विधेयरो अग हुवै ।

(३८४) कर्ता, सबध और सबोधननै छोडनै बाकीरा सै कारक विधेयरा अग हुवै ।

(३८५) सबध कारक विशेषणरो काम करै, इण वास्तै जिण शब्दरो विशेषता बतावै उणरै (भेदरै) साथै जावै । जिया—

किसनै-रो भाई म्हारै घरै आयो ।

अठै 'किसनै रो' शब्द 'भाई' रै साथै जासी और 'म्हारै शब्द 'घरै' रै साथै ।

(३८६) पूरक और कर्मरा विशेषण विधेयरा अग हुवै ।

(३८७) नामयोगी आपरी सज्ञारै साथै पूरकरो अग हुवै ।

(३८८) पूर्वकालिक क्रिया आपरै पूरक, कर्म अथवा दूजा कारकारै साथै विधेयरो अग हुवै ।

पाठ ५१

वाक्यांरा तीन प्रकार

(३८९) रचनारी दृष्टिमू वाक्यरा तीन प्रकार हुवै—(१) सरळ, (२) जटिल और (३) सयुक्त।

(३९०) जिण वाक्यमे अेक ही समापिका क्रिया हुवै बो सरळ वाक्य कहीजै। जिया—

रामचन्द्र मद्रास जावैला।

(३९१) जिको वाक्य दूसरै वाक्यरो भाग हुवै उणनै उपवाक्य कैवै। जिया—

(१) रामचन्द्र मनै कैतोहो कै हू मदराज जासू।

इण वाक्यमे दो छोटा वाक्य है—

(१) रामचन्द्र मनै कैतो हो।

(२) हू मदराज जासू।

दोनू उपवाक्य है।

(२) मनै ठा कोनी कै छोरा कठै है और वै काई करै है।

इण वाक्यमे तीन छोटा वाक्य है—

(१) मनै ठा कोनी।

(२) छोरा कठै है।

(३) वै काई करै है।

तीनू उपवाक्य है।

(३९२) उपवाक्य कदेई आपसमे बराबर हुवै, कदेई अेक प्रधान हुवै और बाकी आश्रित।

(३६३) आश्रित उपवाक्य तीन तरारा हुवै—(१) नामिक उपवाक्य, (२) विशेषण-उपवाक्य, (३) क्रियाविशेषण-उपवाक्य ।

(३६४) जको उपवाक्य प्रधान उपवाक्यरी क्रियारो कर्त्ता, कर्म अथवा पूरक हुवै उणनै नामिक-उपवाक्य कैवै । जिया—

(१) भाईजी कयो, कै काले आऊला ।

(२) वो जाणै कोनी, हू काई करू हू ?

(३) उणरो भाव काई है, इण बातरो मनै पतो कोनी ।

(३६५) जको उपवाक्य प्रधान उपवाक्यरै कैई नाम या सर्वनामरी विशेषता बतावै बो विशेषण-उपवाक्य । जिया—

(१) काम नही करैला वै रिमतावैला ।

(२) ओ घर वोही है, जिणमे राधारो जलम हुयो हो ।

(३) चमकै जको सगळो सोना को हुवै नी ।

(४) हा जो करता हा जका टावर कठै गया ?

(३६६) जको उपवाक्य प्रधान उपवाक्यरी क्रियारी विशेषता बतावै वो क्रियाविशेषण-उपवाक्य । जिया—

(१) वो लै जासी जठै चालसा ।

(२) अबै पग उठावो, कारण मोडो हुयग्यो है ।

(३) वो इत्तो तिरायो हो, कै तीन लोटा पाणी पीग्यो ।

(४) तू चालसी, तो म्हे चालसा ।

(५) वामण सेर मिठाई खायी, तोई धापियो कोनी ।

(३६७) अै उपवाक्य प्रधान वाक्यरै साथै व्यधिकरण मयोजकसू, अथवा जो सर्वनामसू, अथवा जो सर्वनामसू वणियोडा क्रियाविशेषण अथवा विशेषणसू, जुडियोडा रैवै ।

(३६८) जिणमे अेक प्रधान और अेक या अनेक आश्रित उपवाक्य हुवै वो जटिल वाक्य कहीजै । जियां—

(१) रामदास मनै लिखियो, कै हू कळकत्तै आऊला ।
(२) मेह बरसतो, तो खेती घणी चोखी हुती ।
(३) परिश्रम करै जका सफळ हुवै ।
(४) मनै तू पूल दे, तो हू तनै नबी कलम दू ।
(५) आपां जीतसां जिकाम कमर हो काई ?
(६) हू घरै पूग्यो जद रोटी मिली ।
(७) भाई काल कोनी आया, कारण सरीर टीक कोनी हो ।
(८) बरखा चोखी हुई, जिणसू धान मोकळो हुयो है ।
(९) मजूर काम आछो कियो, इणवास्तै इनाम मिळियो ।
(१०) जो सकर मान लै, तो काम बण ज्याय ।

(३९९) सयुक्त वाक्यमे दो या अधिक परस्पर-अनाश्रित वाक्य हुवै ।

(४००) सयुक्त वाक्य तीन तरारा हुवै—

(१) जिणमे दोनू उपवाक्य सरळ वाक्य हुवै ।
(२) जिणमे अेक सरळ और अेक जटिल वाक्य हुवै ।
(३) जिणमे दोनू जटिल वाक्य हुवै ।

(४०१) परस्पर-अनाश्रित उपवाक्य समानाधिकरण सयोजकासू जुडिया हुवै । अेक वाक्यमे इसा उपवाक्य घणा हुवै तो सयोजक अन्तिम वाक्यरै पैली आवै, बाकी उपवाक्यारै आगै कामो (,) लिखीजै—

(१) रामू गयो अर हू आयो ।
(२) राधा चूलो जगायो अर मैं आटो ओसणियो ।
(३) गोमती घरे गयी पण सीता अठै-हीज है ।
(४) सेठरै धन मोकळो पण सुख कोनी ।
(५) किसान उठियो, हळ लियो और खेतनै हालियो ।

(६) राजानै वनमें तीन बामण मिळिया जिणानै राजा नमस्कार कियो और आपगो वृत्तात कयो ।

(७) गंगा अेक पोथी लायी जिणरा दो रुपिया लागा और गवरा अेक साडी लायी जिणरा पाच रुपिया लागा ।

पाठ ५२

वाक्यांरा नव् प्रकार

(४०२) अर्थरी दृष्टिसू वाक्यरा नव प्रकार हुवै —

(१) विधानार्थक — जिणमे विधान पायो जावै —

राम् गाव गयो ।

(२) निषेधार्थक — जिणमे निषेध पायो जावै —

राम् गाव कानी गयो ।

(३) प्रश्नार्थक — जिणमे प्रश्न पायो जावै —

राम् गाव गयो काई ?

राम् गाव कानी गयो काई ?

(४) आज्ञार्थक — जिणमे आज्ञा पायी जावै —

राम् ! तू गाव जा ।

राम् ! तू गाव मती जा ।

(५) इच्छार्थक — जिणमे इच्छा पायी जावै —

राम् जुग-जुग जीवै ।

(६) सभावनार्थक — राम् गाव जावतो हुवै ।

(७) सदेहार्थक — राम् गाव गयो हुसी ।

(८) सकेतार्थक — राम् गाव जावतो तो गाडी लावतो ।

(९) विस्मयादि-बोधक — जिणमे विस्मय आदि भाव पायोजं —

राम् गाव गयो !

पाठ ५३

वाक्य-रचना

(१) शब्द-क्रम

(४०३) वाक्य बणावणमें शब्दानें आगै-पाछै राखणा पड़ै। इणनें शब्द-क्रम कैवै।

(४०४) वाक्यमें शब्दारो साधारण रूपसूं जको क्रम हुवै वो नीचै दिरीजै है—

(१) पैली कर्ता, पछै दूजा शब्द और सारासूं पछै क्रिया आवै।

(२) विशेषण विशेष्यसूं पैली आवै, कर्तारो विशेषण कर्तासूं पैली आवै—

काळी गाय धोळो दूध देवै।

(३) विशेषण पूरक हुवै जद कर्तासूं पछै आवै—

पाण फूटरी है।

(४) सबध वारक सबधी सज्ञा अथवा नामयोगी अव्ययसूं पैली आवै—

(१) म्हारो घर थारै घरसूं आछो है।

(२) गाय रूखरै नीचै बैठी है।

(५) सकर्मक क्रियारो पूरक कर्मरै पछै आवै—

राजा भीमनै सेनापति वणायो।

(६) नामयोगी अव्यय आपरी सज्ञारै पछै आवै—

कोठीरै लारै बगीचो है।

(७) सबोधन और विस्मयादिबोधक शब्द वाक्यरा आरभमें आवै।

(८) कृदन्तारा कर्म कृदन्तारै सागै, उणासूं पैली, आवै—

(१) रामू पोथी लयनै घरै गयो।

(२) किसन पाठ याद करतो-करतो परीक्षा दवण गयो।

(९) प्रश्नवाचक अव्यय 'काई' वाक्यरै अन्तम आवै—

तू जामी काई ?

(१०) निषेधवाचक अव्यय क्रियारै ठीक पैली आवै कदे-कदे अंतम भी आवै, कोनी अव्यय कद-कदे क्रियारै दोना पासी आवै—

(१) तू घरै मती जाय।

(२) मैं पोथी कोनी वाची।

(३) तू आये मती।

(४) भाई पोथी वाची कोनी।

(५) भाई पोथी को वाची नी।

(११) सम्प्रदान कारक प्राय कर कर्मसूं पैली आवै—

राजा वामणानै दिखणा दी।

(४०५) और उदाहरण—

(१) राजा न्यायरै साथ प्रजारो पालन करै हो।

(२) राजूरो छोटो भाई रामदयाल गगारो वैनोई है।

(३) ओ वेद घणो आछो है।

(४) साहूकाररो वेटो म्हारै साथै नागोर चालसी।

(५) वादस्या अमैंसिघजीनै सूवेदार वणाया।

(६) वो वादरा घररै ऊपर वैठा है।

(७) भाई ! तू घरै कणा जासी ?

(८) अरे ! किसनो कद आयो ?

(९) थारो भाई कळकत्तै जामी काई ?

(१०) मैं आज पोथी कोनी वाची।

(११) तू सिज्यारो बगीचैं मती जायीजै ।
(१२) मोवनै आज रोटी खायी कोनी ।
(१३) तू दिन रो सायँ मती, भलो !
(१४) आ बात म्हारै समझम को आयी नी ।
(१५) जीवणराम रतनीनै दो कलमा दी ।
(१६) सारदा पायी लेयनै आवैला ।
(१७) मनै काम करणो है ।
(१८) राजानै देखता ही वैरी भाग छूटा ।

(४०५) शब्दारा साधारण क्रमम प्राय कर व्यतिक्रम हुवै, जिण शब्द पर जोर दिरीजै वो शब्द प्राय कर पैली आवै—

(१) घरमे वैठो है नी वो ।
(२) हू जीम्या कोनी आज ।
(३) आछो तू कोनी क हू ?
(४) ओ काम राधा करसी ।
(५) आज पिडतजी म्हारै घरै आया हा ।
(६) आछो भूडो तो हू जाणू कोनी ।
(७) घररै सामनै खेल हुवैला ।
(८) मिदररै ऊपर वादरा बैठा है ।

(४०७) कर्मणि प्रयोग और भावे प्रयोगमे भी साधारण क्रम ओ ही रैवै । इण प्रयोगाम कर्ता पाचवी विभक्तिमे हुवै तथा कर्म पहली विभक्तिम—

(१) म्हारै सू ओ काम कानी करीजै ।
(२) म्हारै-सू अबार कोनी जायीजै ।

पाठ ५४

अन्वय (मेळ)

(४०८) वचन, जाति और पुरुषरी समानतानै अन्वय कैवै ।

(१) क्रियारो अन्वय

(४०९) कर्तृवाच्यरी अकमक क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै ।

(४१०) कर्तृवाच्यरी सकर्मक क्रिया धातुसू तथा सक्त-भूतसू वणियोडा काळाम कर्तारै अनुसार हुवै ।

(४११) कर्तृवाच्यरी सकर्मक क्रिया सामान्यभूतसू वणियोडा काळाम कर्मरै अनुसार हुवै ।

(४१२) कर्मवाच्यरी क्रिया कर्मरै अनुसार हुवै ।

(४१३) भाववाच्यरी क्रिया कर्ता अथवा कर्म किणीरै अनुसार नही हुवै, सदा अेकवचन, नरजाति, अन्यपुरुषरी हुवै ।

(४१४) कर्ता और कर्म मायसू जको प्रथमा विभक्तिमे हुवै क्रिया उणरै अनुसार हुवै, दोनू प्रथमामे हुवै तो क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै । जिया—

(१) घोडो भाग्यो ।
(२) घोडै घास खायो ।
(३) घोडैसू घास खायोजै ।
(४) घोडो घास खावै है ।

(२) कर्तरि-प्रयोग मे कर्ता और क्रियारो अन्वय

(४१५) कर्ता अेकसू ज्यादा हुवै तो क्रिया बहुवचनमे हुवै —
राम और लक्ष्मण वनमे गया ।

(४१६) नरजाति और नारीजाति दोनू जातियारा कर्ता हुवै तो क्रिया नर जातिरी हुवै—

राजा और राणी अठै आया।

(४१७) उत्तम, मध्यम और अन्य तीनू पुरुपारा कर्ता हुवै तो क्रिया उत्तमपुरुपरी हुवै—

हू, तू और रतन पोथी वाचसा।

(४१८) उत्तम और मध्यम दोनू पुरुपारा कर्ता हुवै तो क्रिया उत्तमपुरुपरी हुवै—

हू और तू काल अठै आसा।

(४१९) मध्यम और अन्य दोनू पुरुपारा कर्ता हुवै तो क्रिया मध्यमपुरुपरी हुवै—

तू और रतन पोथी वाचीजो।

(४२०) कदे-कदे नियारा वचन, जाति, पुरुप अंतिम कर्तारै अनुसार हुवै।

(४२१) आदर दिखावण वास्तै अेकवचनरा कर्तारै साथै अनेक-वचनरी क्रिया आवै—

गुरूजी कद पधारिया ?

(४२२) आदर दिखावण वास्तै नारी-जातिरा कर्ता अथवा कर्मरै साथै नर-जातिरी क्रिया आवै—

राणीजी काल पधारिया हा।

राणीजीनै कद बुलाया हा ?

(४२३) आदर दिखावण वास्तै प्रेरणार्थक रूपारो प्रयोग करीजै। जिया—

(१) आप कागद वेगो दिरावसो ।

(२) राज सारा समाचार लिखायीजो ।

(३) पान लिरायीजं ।

(४२४) आदर दिरावण वास्तै मध्यमपुरुष वाची आप सवनामरै साथै कदे-कदे अन्यपुरुषरी क्रिया वापरीजै । जिया—

(१) पान लिरायीजै, सा ।

(२) अब डेरै पधारीजै ।

(३) थोडो कष्ट करावै ।

(४) सारा समचार लिखाय दिरावै ।

(३) कर्मणिप्रयोगमे कर्म और क्रियारो अन्वय

(४२५) कर्मणि-प्रयागम कम और क्रियारो अन्वय उणी भात हुवै जिण भात कर्तरि प्रयोगमे कर्ता और क्रियारो ।

(४) विशेषण और विशेष्यरो अन्वय

(४२६) ओकारान्तनै छोडनै बाकी विशेषणामे वचन, जाति अथवा पुरुषरै कारण कोई अतर नही हुवै ।

(४२७) ओकारान्त विशेषणमे विशेष्यरै अनुसार परिवर्तन हुवै ।

(४२८) विशेष्य अनेकवचन हुवै तो विशेषण भी अनेकवचन हुवै— काळा घोडा दौडिया ।

(४२९) विशेष्य नारी-जातिरो हुवै तो विशेषण भी नारी-जातिरो हुवै— काळी घोडी दौडी ।

(४३०) नारी जातिरो विशेषण दोना वचनामे समान रैवै—
काळी घोडी ।
काळी घोडिया (काळिया घोडिया नही हुवै) ।

(४३१) नर जातिरा विशेषणमे विशेष्यरी विभक्तिरै अनुसार भी

परिवर्तन हुवै । विशेष्य जिण विभक्तिमे हुवै विशेषण भी उणी विभक्ति-मे हुवै—

काळो घोडो लावो ।
काळा घोड़ानै लावो ।
काळै घोडै खाचियो ।

(४३२) अनेकवचनमे विभक्तिरै अनुसार परिवर्त्तन नही हुवै—

काळा घोडा लावो ।
काळा घोडानै लावो ।
काळा घोडा खाचियो ।

(४३३) सख्यावाचक विशेषणरै साथै कदे-कदे अेकवचन विशेष्य भी आवै—

(१) दो दिनमे कळकत्तै पूगसू ।
(२) दस कोस माथै अेक गाव मिलसी ।

(४३४) आदर वतावण वास्तै अेकवचनरा नाम-रै साथै अनेकवचन-रो विशेषण, तथा नारीजातीय नाम-रै साथै नरजातीय विशेषण, आवै—

(१) वडा राणाजी मिंदर पधारिया है ।
(२) वडा राणीजी रावळै विराजिया है ।

(५) छठी विभक्तिरो अन्वय

(४३५) छठी विभक्तिरा परसर्गमे भेद्य (सबधी सज्ञा) रै अनुसार परिवर्तन हुवै—

देसरो राजा ।
देसरा राजा ।
देसरी राणी ।
देसरी राणिया ।

(४३६) नरजाति अेकवचनरो भेद्य दूसरी अथवा तीसरी विभक्तिमे हुवै तो परसर्गरो तदनुसार रा अथवा रै हुवै—

(१) माळी-रा बेटानै बुलावो ।

(२) माळी-रै बेटै फूल तोडिया ।

(६) क्रियाविशेषणरो अन्वय

(४३७) कईअेक विशेषण क्रियाविशेषणरो काम करै । उणामे साधारण विशेषणारी जिया विशेष्यरै अनुसार वचन-जातिरो भेद हुवै—

विद्यार्थी मोडो आयो ।
विद्यार्थी मोडा आया ।
बैन मोडी आयी ।
बैना मोडी आयी ।

(४३८) वेगो, ऊचो, नीचो, आडो, अवळो, धीमो, धीरो, उतावळो, थोडो, घणो इणी तरारा शब्द है—

(१) घोडो धीरो चालै ।
(२) बाळक धीमा चालै ।
(३) अनार कदेई आडी आसी ।
(४) तू वेगी जा ।
(५) वो अबै आवै थोडो ही है ।
(६) वा अबै जीमै थोडी ही है ।
(७) शारदा भाईनै मोडो लायी ।
(८) शारदा बैननै मोडी लायी ।
(९) शारदा भायानै मोडा लायी ।

पाठ ५५

राजस्थानी शब्द-समूह

(४३९) राजस्थानी शब्द-समूहमें च्यार भातरा शब्द है—

(१) तत्सम,

(२) तद्भव,

(३) देसी, और

(४) परदेसी।

(४४०) तत्समरो अर्थ है सस्कृतरै समान। जका शब्दारा रूप सस्कृतरै समान है वै शब्द तत्सम कहीजै। तत्सम शब्दामे घणकरा प्रातिपदिक रूप मे आया है, पण कई-अेक प्रथमा विभक्तिरा अेकवचनरा रूपमे भी आया है।

उदा०—(१) नर, विद्या, नारी, पति, धन, धर्म, चक्र, पत्रिका, नापित, भगिनी, धवल, चद्र, सूर्य, सत्य, मिष्ट।

(२) पिता, माता, भ्राता, राजा, वर्म, मन, गुणी, स्वामी, ज्ञानी।

(४४१) तदभवरो अर्थ है सस्कृत शब्दासू उत्पन्न हुयोडा। तद्भव शब्द वै है जका सस्कृत शब्दासू परिवर्तित होयनै वणिया है।

उदा०—धरम, चाक, पाती, नाई, बहन, भाई, चाँद, सूरज, काळो, धोळो, आतमा, मूरख, ग्यानी, साचो, मीठो।

(४४२) देसी शब्द वै है जिणारो सस्कृतसू सवध नहीं। इसा शब्द

(१) माळी-रा बेटानैं बुलावो ।
(२) माळी-रैं बेटैं फूल तोडिया ।

(६) क्रियाविशेषणरो अन्वय

(४३७) कईअेक विशेषण क्रियाविशेषणरो काम करै । उणामें साधारण विशेषणारी जिया विशेष्यरैं अनुसार वचन-जातिरो भेद हुवैं—

विद्यार्थी मोडो आयो ।
विद्यार्थी मोडा आया ।
बैंन मोडी आयी ।
बैंना मोडी आयी ।

(४३८) वेगो, ऊंचो, नीचो, आडो, अवळो, धीमो, धीरो, उतावळो, थोडो, घणो इणी तरारा शब्द है—

(१) घोडो धीरो चालै ।
(२) बाळक धीमा चालै ।
(३) अनार कदेई आडो आसी ।
(४) तू वेगी जा ।
(५) वो अबै आवै थोडो ही है ।
(६) वा अबै जीमैं थोडी ही है ।
(७) शारदा भाईनैं मोडो लायी ।
(८) शारदा बैंननैं मोडी लायी ।
(९) शारदा भायानैं मोडा लायी ।

पाठ ५५

राजस्थानी शब्द-समूह

(४३९) राजस्थानी शब्द-समूहमे च्यार भातरा शब्द है—

(१) तत्सम,

(२) तद्‌भव,

(३) देसी, और

(४) परदेसी।

(४४०) तत्समरो अर्थ है सस्कृतरै समान। जका शब्दारा रूप सस्कृतरै समान है वै शब्द तत्सम कहीजै। तत्सम शब्दामे घणकरा प्रातिपदिक रूप मे आया है, पण कई-अेक प्रथमा विभक्तिरा अेकवचनरा रूपमे भी आया है।

उदा०—(१) नर, विद्या, नारी, पति, धन, धर्म, चक्र, पत्रिका, नापित, भगिनी, धवल, चद्र, सूर्य, सत्य, मिष्ट।

(२) पिता, माता, भ्राता, राजा, कर्म, मन, गुणी, स्वामी, ज्ञानी।

(४४१) तदभवरो अर्थ है सस्कृत शब्दासू उत्पन्न हुयोडा। तद्‌भव शब्द वै है जका सस्कृत शब्दासू परिवर्तित होयनै बणिया है।

उदा०—धरम, चाक, पाती, नाई, बहन, भाई, चाँद, सूरज, काळो, धोळो, आतमा, मूरख, ग्यानी, साचो, मीठो।

(४४२) देसी शब्द बै है जिणारो सस्कृतसू सबध नही। इसा शब्द

प्राय कर देसरी सस्कृतेतर पुराणी भाषावासू आया है। अनुकरणात्मक शब्द भी देसी शब्दामें गिणीजै।

उदा०—(१) पेट, खिडकी, कोडी।

(२) खडखड, सरसर, चर्र-चर्र, तडातड, फटाफट, फिर-मिर, सर्राटो, फटफटियो, गडगडाट, फटार-देसी।

(४४३) परदेसी शब्द वै है जका फारसी, अरबी, तुरकी, अग्रेजी, पुर्तगाली, वगैरा देसरै बाहररी भाषावासू आया है।

उदा०—(१) तुर्की—गलीचो, चकमक, चक्कू, तोप, दरोगो, वेगम, मुचलको, सौगात, उड्दू।

(२) अरबी—इमारत, तसवीर, खबर, अखबार, इमत्यान ऊमर, किताब, दवाई, दवात, रकम, सनद, मलूब, साबण।

(३) फारसी—अचार, कागद, चसमो, तराजू, तकियो, खुराक, जिनावर (जानवर), दरकार, नमूनो, नरम, नहर, बदोबस्त, हजार, दस्तकारी, खुद, खुदा, सबजी, सामान।

(४) पुर्तगाली—अलमारी, कमीज, कपतान, कमरो, गोभी, गोदाम, चाबी, तमाखू, लीलाम, बालटी, बिसकुट, बुताम, बोतल, मिस्त्री।

(५) अग्रेजी—इजन, अफसर, असपताळ, कपनी, कोट, कमेटी, कापी, गिलास, चिमनी, टिगट, ठेसण, दरजण, नबर, नोट, पप, पारटी, पास, फीस, फोटू, बूट, मशीन, माचिस, मोटर, रबड़, रपोट, रेल, लप, लालटेण, लाट, होल्डर।

पाठ ५६

विराम

(४४४) आपा कोई बात कैंवा जद बीच बीचमे थोडो घणो ठैरणा पडै । इसा ठैरणानै विराम कैवै । विराम तीन हुवै—

(१) अल्पविराम, (२) अर्धविराम और (३) पूर्णविराम ।

(४४५) वाक्यरा अंतमे सदा पूर्णविराम हुवै, वाक्यरा बीचमे पूर्णविराम नही हुवै ।

(४४६) विराम बतावण वास्तै कितराक चिह्न वापरीजै जिणानै विराम *अथवा विराम चिह्न* कैवै । *मुख्य विराम-चिह्न तीन है—*

(१) अल्पविराम या कामो – ओ अल्प विराम बतावै ।

(२) अर्धविराम या सेमीकोलन (,)—ओ अर्ध विराम बतावै ।

(३) पूर्णविराम ( ) (।)—ओ पूर्ण विराम बतावै ।

(४४७) ऊपर बताया विराम चिह्नारै अलावै कितराक चिह्न और वापरणामे आवै है । जिया—

(१) प्रश्नचिह्न (?)—प्रश्नार्थक वाक्यरा अंतमे लिखीजै । उदाहरण—तू जोधपुर-सू कद आवैला ?

(२) उद्गारचिह्न (!)—उद्गारार्थक और इच्छार्थक वाक्यरा अंतमे तथा सबोधन शब्दरै आगै लिखीजै। उदाहरण—

रामू गाव गयो !

राजा जुग-जुग जीवै !

हाय ! ओ काई हुयो !

राधा ! पोथी ला ।

(३) योजक (-)—ओ चिह्न दो शब्दानै जोड़ै ।

उदाहरण—राजा-राणी, आवणो-जावणो, राज-पुरुष ।

(४) संक्षेपक (०) अथवा (.)—ओ चिह्न शब्दरो संक्षेप करै, शब्दरो पैलड़ो आखर लिखनै आगै ओ चिह्न लिखणैसूं पूरो शब्द समझीज ज्यावै—

उदाहरण— प० = पंडित
से० = सेर
सा०र० = साहित्यरत्न

(५) पूरक (°)—शब्दरै आगै अथवा लारै ऊपरलै पासी लिखीजै—

उदाहरण— °भूषण = साहित्यभूषण
साहित्य° = साहित्यभूषण

(६) आवर्तक (")—ऊपरी पंक्तिमें लिखियोड़ा शब्द या शब्दारी आवृत्ति नीचैंरी पंक्तिमें करणी हुवै जद ओ चिह्न वापरीजै—

उदाहरण

(क) पानो १४ लकीर ८ रामदास रामचंद्र
" ३० " २२ " "

(ख) राजस्थानरो इतिहास भाग १, पानो २०
" " २, " २५

(७) काकपद (‸) (‸)—लिखती वेळा कोई आखर छूट ज्यावै तो ओ चिह्न लिखनै ऊपर अथवा हासियामें छूटियोड़ो आखर लिख देवै—

उदाहरण—प० मदनमो‸न जी मालवीय ।   (ऊपर: ह)
मोहनदास क‸मचंद गांधी ।   र

(८) रिक्त-चिह्न (...)—जद किणी शब्द अथवा शब्दानै छोड देणा हुवै तो इणरो प्रयोग करीजै—

(१) माधो आवतो हो पण ···

(९) लोपक (')—लिखती वेळा शब्दरो कोई आखर लुप्त हुवै तो उणरी जागा ओ चिह्न लिखीजै—

ना'र = नाहर

सा'ब = साहब

(१०) अवतारव (' ') (" ")—अवतरण या उद्धरण देणो हुवै जद अै चिह्न वापरीजै।

(११) निर्देशक या डस (—)—जद किणीनै निर्देश करणो हुवै अथवा उण कानी संकेत करणो हुवै जद ओ चिह्न वापरीजै—

(१) गोदावरी, कृष्णा, कावेरी—अै दक्षिण-भारतरी नदियां हैं।

(२) क्रियारा दो प्रकार हुवै—(१) सकर्मक (२) अकर्मक।

(३) सेठ कयो—काल आप कद आसो ?

(१२) कोठा—अै दोय भातरा हुवै—

(१) गोळ ( )

(२) चोखूटा [ ]

परिशिष्ट १

राजस्थानी शब्दांरी जोड़नी

१ तत्सम शब्द

१ संस्कृत तत्सम शब्दांरी जोडणी मूळ मुजब करणी—

उदा०—पति, गुरु, कृपा, दृष्टि, शेष, रोष, यश, अक्षर, ॐकार, ज्ञान।

२ संस्कृतरा तत्सम शब्द प्रथमा अेकवचनरा रूप मे लेणा, आगै विसर्ग हुवै तो उणनै छोड देणो—

उदा०—पिता, माता, दाता, आत्मा, राजा, धनी, स्वामी, लक्ष्मी, श्री, मन, यश।

३ संस्कृतरा व्यंजनांत शब्द स्वरांत करनै लेणा—

उदा०—विद्वान्, धनवान, जगत, परिषद, सम्राट, अर्थात, पश्चात, किंचित।

विशेष—इसा शब्द समासमे पूर्वपद होयनै आवै तो मूळ संस्कृत मुजब लिखणा—

उदा०—पश्चातपद, किंचित्कर, जगत्पति, विद्वद्वर।

४ संस्कृत तत्सम शब्दामे दो स्वरारै बीचमे आवो ड, ल और व आवै उणनै ड, ळ और व लिखणो—

उदा०—पीडा, व्रीडा, क्रीडा, क्रोड, जळ, वळ, काळ, माळा, बाळक निष्फळ, निर्मळ, पाताळ, पवन, भवन, प्रवर, कवि, देवी, देवेन्द्र, तरुवर, सरोवर।

तद्भव शब्द

५ भाषामे तद्भव और तत्सम दोनू रूप चालता हुवै तो दोनू स्वीकार करणा—

उदा०—भाग्य—भाग, रात्रि—रात, वार्ता—वारता, यश—जस।

६ तद्‌भव शब्दाम ऋ ङ ञ श ष क्ष ज्ञ इता आखरारो प्रयोग नही करणो।

अपवाद—राजस्थानीरी कई बोलियामे श आखररो प्रयोग देखीजै है, उण बोलियारा अवतरण आवै जठै श आखररो प्रयोग करणो।

उदा०—जाईश।

७ राजस्थानी तद्‌भव शब्दारा अन्तमे आवै जिका ई और ऊ दीर्घ लिखणा—

उदा०—पाणी, दही, घी, छोरी, नारी, मणी, हरी, लाडू, लागू, बाधू, राबू, जसू, साबू, साधू, गरू।

विशेष—मणि, कान्ति, हरि, साधु, गुरु, इत्यादि तत्सम शब्द हुवै जद छोटी इ और छोटा उ सू लिखणा।

पुराणी भाषामे राम नू (राम नै), जू (जो), सू (सो), किसू (क्या) वगैरा आवै, उणानै राम-नु, जु, सु, किसु नहीं लिखणा।

८ राजस्थानमे कठैई कठैई आ रो उच्चारण औ या ऑ या ओ जिसो हुवै, लिखणमे इसो उच्चारण नही दरसावणो, आ हीज लिखणो—

उदा०—कौम कॉम कोम नही लिखणो,
काम लिखणो।

९ राजस्थानमे कठैईकठैई शब्दरा अन्तमे य श्रुति सुणीजै, लिखणमे उणनै नही दरसावणी—

उदा०—आख्य, लाव्य, द्यो, ल्यो, ल्यावणो नही लिखणा।
आख, लाव, दो, लो, लावणो लिखणा।

१० तद्‌भव शब्दामे अनुप्राणित ह ध्वनि (=ह श्रुति) नै लिखणमे नही बतावणी, बतावणी हुवै तो लोपक-चिह्नरो प्रयोग करणो—

उदा०—न्हार, प्हीर, म्होर, क्हाणी, स्हाब, स्हारो, प्होरो, वाल्हो, व्हैन, साम्हो, म्हाराज नही लिखणा ।

नार (ना'र), पीर (पी'र), मोर (मो'र), काणी (का'णी), साब, सारा (सा'रो), पोर, वालो, वैन, सामो, माराज (मा'राज) लिखणा ।

तत्सम महाराज शब्दनै मूळ-रूपमे-हीज लिखणो ।

विशेष—न्हावणो, म्हारो, म्हाटो, इण शब्दामे ह श्रुति नही पण पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणानै नावणो, मारो, माटो नही लिखणा ।

११ तद्भव शब्दरा अन्तमे अनुप्राणित ह ध्वनि आवै और उणरो पूर्व स्वर दीर्घ हुवै तो ह ध्वनिनै नही लिखणी, उणरो लोप कर देणो, अथवा उणरी जाग्या सज्ञा हुवै तो य, और क्रिया हुवै तो व कर देणो—

उदा०—ठा, रा, सा, मी, मू, खे, मे', खो, जो, पो, मो, लो ।
चा चाय, मा माय, रा राय, सा साय ।
ढा ढावणो, वा वावणो, दू दूवणो, लू लूवणो, भे भेवणो, ढो ढोवणो, पी पीवणो, मो मोवणो, सो सोवणो ।

विशेष—नाह, कोह, इण शब्दामे ह श्रुति नही, पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणानै ना, को, नही लिखणा ।

१२ तद्भव शब्दामे ह श्रुतिसू पूर्व अकार हुवै तो दोनातै मिलायनै अै कर देणा—

उदा०—गहणो	गैणो	गहरो	गैरो	चहरो	चैरो
जहर	जैर	कहर	कैर	सहर	सैर
लहर	लैर	महर	मैर	नहर	नैर

वहन	वैंन	वहम	वैंम	रहम	रैंम
सहणो	सैंणो	कहणो	कैंणो	वहणो	वैंणो
महणो	मैंणो	रहणो	रैंणो	लहणो	लैंणो
महल	मैंल, मौल	पहर	पैंर, पौर		

१३ तद्भव शब्दामे अळपप्राण और महाप्राणरो सयोग हुवै जद महाप्राणनै दोलडो लिखणो—

उदा०—अख्खर, पख्ख, जख्ख, सख्ख, भख्ख, लख्ख, बघ्घ, पघ्घड, जुझ्झ, बुझ्झ, तुझ्झ, सुझ्झ, मुझ्झ, पथ्थर, मथ्थ, कथ्थ, सथ्थ, बफ्फ, सभ्भ, लभ्भ, अभ्भ, दभ्भ ।

अपवाद—च-छ रो, ट-ठ रो, अथवा ड-ढ रो सयोग हुवै जद दोलडा नही लिखणा—

उदा०—अच्छर, मच्छर, सच्छ, गच्छ, भच्छ, रच्छ, चिट्ठ, दिट्ठ, मिट्ठ, कड्ढ, बड्ढ, दड्ढ ।

१४ बोलचालमे अळपप्राण और महाप्राण दोनू उच्चारण पावीजै जद व्युत्पत्तिरै मुजब अळपप्राण अथवा महाप्राण लिखणो—

वरसात, वरस, वरात, बराणो, वही, बहू, वसैरो, वस,
वाको, वास, वाट, वात, वागो, वाजो, वाजणो,
वार, वास, वावडी, विकणो, विकरी, विगडनो, विछडनो,
वीच, वीकानेर, बीजळी, वीधणो, वीस (=२०),
वेचणो, वेभ, वेल, बेसी, वेस, वैरणो, वैरा, वेत, वैद ।

१६ सस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें-ई व लिखणो —
उदा०—वाळक, बाण, बळ, बूझणो, बुद्धि ।

१७ सस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें द्व हुवै जठै राजस्थानीमें व लिखणो—
उदा०—द्वार—वार, द्वितीया—वीज, द्वितीयक —वीजो ।

१८ प्राकृतमें व्व (संस्कृतमें र्व, व्य) हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो—
उदा०—सर्व सव्व सव, सरव
पर्व पव्व परव
खर्व खव्व खडव
गर्व गव्व गरव
द्रव्य दव्व दरव

१९ दो स्वरारै वीचमें जको व हुवै उणनै व लिखणो—
उदा०—सावरो, भवरो, गवार, गाव, नाव, धूवो, चाव, राव, नाव,
सोवणो, मोवन, कूवो, गावणो, आवणो, जावणो, दूवणो,
सीवणो, पीवणो, देवणो, सेवणो ।*

---

* व, व और व रा नियम सक्षेपमें—
(१) सस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
सस्कृतमें द्व, र्व, व्य हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो।
सस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें व नहीं लिखणो ।
(२) शब्दरा आरभमें आवै जद व लिखणो ।
शब्दरा मध्य अथवा अतमें आवै जद व लिखणो ।

वहन	वँन	वहम	वँम	रहम	रँम
सहणो	सैंणो	कहणो	कँणो	वहणो	वैंणो
महणो	मँणो	रहणो	रैंणो	लहणो	लँणो
महल	मैंल, मौल	पहर	पँर, पौर		

१३ तद्भव शब्दामे अल्पप्राण और महाप्राणरो सयोग हुवै जद महाप्राणनैं दोलडो लिखणो—

उदा०—अक्खर, पक्ख, जक्ख, सक्ख, भक्ख, लक्ख, बग्घ, पग्घड, जुज्झ, बुज्झ, तुज्झ, सुज्झ, मुज्झ, पत्थर, मत्थ, कत्थ, सत्थ, बप्फ, सब्भ, लब्भ, अब्भ, दब्भ ।

अपवाद—च छ री, ट-ठ री, अथवा ड-ढ री सयोग हुवैं जद दोलडा नहीं लिखणा—

उदा०—अच्छर, मच्छर, सच्छ, गच्छ, भच्छ, रच्छ, चिट्ठ, दिट्ठ, मिट्ठ, कड्ढ, वड्ढ, दड्ढ ।

१४ बोलचालमे अळपप्राण और महाप्राण दोनू उच्चारण पावीजैं जद व्युत्पत्तिरैं मुजब अळपप्राण अथवा महाप्राण लिखणो—

उदा०—समझणो (समज्झ), बाम (वज्झा), साम (सज्झा), जूझणो (जुज्झ), बूझणो (बुज्झ), सूझणो (सुज्झ), सीझणो (सिज्झ), वेझ (विज्झ), सेज (सेज्जा), तीज (तइज्जा), भीजणो (भिज्ज) ।

१५ संस्कृतमे शब्दरा आरम्भमे जको व हुवैं उणनैं राजस्थानी मे व हीज लिखणो, हिंदीआळी दाई ब नही लिखणो -

उदा०—वखाणनो, वचणो, वधावणो, वछडो, वटवो वटाऊ, वडा, वणनो, वणजारो, वडाई, वडनो, वड, वतरणो, वधणो, वधावणो, वधाई, वधोतरी, वनात, वनो, वरतणो, वरसो,

वरसात, वरस, वरात, वसणो, वही, वहू, वसेरो, वस, वाको, वास, वाट, वात, वागो, वाजो, वाजणो, वार, वास, वावडी, विकणो, विखरी, विगडनो, विछडनो, वीच, वीकानेर, वीजळी, वीधणो, वीस (=२०), वेचणो, वेभ, वेल, वेसी, वेस, वैरणो, वैरा, वँत, वैद ।

१६ संस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमे-ई व लिखणो—
उदा०—बाळक, बाण, बळ, बूझणो, बुद्धि ।

१७ संस्कृतमे शब्दरा आरम्भमे द्व हुवै जठै राजस्थानीमे व लिखणो—
उदा०—द्वार—वार, द्वितीया—वीज, द्वितीयक —बीजो ।

१८ प्राकृतमे व्व (संस्कृतमे र्व, व्य) हुवै जठै राजस्थानीमें व लिखणो—

उदा०—सर्व	सव्व	सव, सरव
पर्व	पव्व	परव
खर्व	खव्व	खडव
गर्व	गव्व	गरब
द्रव्य	दव्व	दरव

१६ दो स्वरारै वीचमे जको व हुवै उणने व लिखणो—
उदा०—सावरो, भवरो, गवार, गाव, नांव, धूवो, चाव, राव, नाव, सोवणो, मोवन, चूवो, गावणो, आवणो, जावणो, दूवणो, सीवणो, पीवणो, देवणो, लेवणो ।*

---

* व, व और व रा नियम संक्षेपमे—
(१) संस्कृतमे व हुवै जठै राजस्थानीमे व लिखणो ।
संस्कृतमे द्व, र्व, व्य हुवै जठै राजस्थानीमे व लिखणो।
संस्कृतमे व हुवै जठै राजस्थानीमे व नहीं लिखणो ।
(२) शब्दरा आरभमे आवै जद व लिखणो ।
शब्दरा मध्य अथवा अंतमे आवै जद व लिखणो ।

२० शब्दारा मध्यम प्राकृतम ल्ल (सस्कृतम ल्य, ल्व, ल्ल) हुवै जठै राजस्थानी ल लिखणो तथा प्राकृतम ल (सस्कृतम ल) हुव जठै राजस्थानीमे ळ लिखणो—

उदा०—कल्य	कल्ल	काल	काल	काळ
गल्ल	गल्ल	गाल	गालि	गाळ
मल्ल	मल्ल	माल	माला	माळ
शल्य	सल्ल	साल	शाला	साळ
	पल्ल	पाल	पाल	पाळ
	झल्ल	झाल	ज्वाला	झाळ
भद्रक	भल्लउ	भलो	भाल	भाळ
भल्लक	भल्लउ	भालो	सकलक	सगळो
मूल्य	मोल्ल	माल	शृगाल	स्याळ
पल्ली	पल्ली	पाली	मालिक	माळी
बिल्व	बिल्ल	बील, बेल	जालिक	जाळियो
चल्	चल्ल	चालणो	क्लेश	कळेश
आर्द्रक	अल्लउ	आलो	कलश	कळस
कल्याण	कल्लाण	कल्याण	कालुष्य	काळख
		किल्याण	पलाश	पळास

विशेष—विशाल विलास लालसा इत्यादि शब्द तत्सम है, तद्भव नही।

२१ शब्दारा मध्यमे प्राकृतम ण्ण (सस्कृतमे ण्य र्ण त्ण न्य न्व ज्ञ) हुवै जठै राजस्थानीमे न लिखणो तथा प्राकृतम ण (सस्कृतम ण, न) हुवै जठै राजस्थानीमे ण लिखणो—

उदा०—पुण्य	पुण्ण	पुन	क्षण	खण	खण
वर्ण	वण्ण	वान	कण	कण	कण
पर्ण	पण्ण	पान	जन	जण	जण

कर्ण	कण्ण	कान	घनक	घणउ	घणो
चूर्ण	चुण्ण	चून	भुवन	भुवण	भुवण
जीर्णक	जुण्णउ	जूनो	खनि	खणि	खाण
अन्य	अण्ण	आन	पुनि	पुणि	पुण
धन्य	धण्ण	धन	वन	वण	वण
शून्यक	सुण्णउ	सूनो	कनक	कणक	कणक
भिन्नक	भिण्णउ	भीनो	भानु	भाणू	भाण
अन्न	अण्ण	अन	रजनी	रयणी	रैण
कृष्ण	कण्ह	कान	हानि	हाणि	हाण
	कसण	किसन	नयन	णयण	नैण

अपवाद—धुन (ध्वनि), पून (पवन), मून (मौन), रण।

विशेष—धन, मन, जन, वन, दान, मान, भवन, पवन, मुनि इत्यादि तत्सम शब्द है, तद्भव नही।

२२ सब्दरा मध्यमे प्राकृतमे ड्ड या ण्ड हुवै जठै राजस्थानीमे ड लिखणो तथा प्राकृतमे ड (संस्कृत मे ट या ड) हुवै जठै राजस्थानीमे ड लिखणो—

उदा०—वड्डउ	वडो	पीडा	पीडा	पीड
कोड्ड	कोड	भट	भड	भड
खड्ड	खाड	तट	तड	तड
गड्डिआ	गाडी	प्रति	पड	पड
हड्ड	हाड	पत्	पड	पड
अड्ड	आड	कोटि	कोडि	कोड
गड्ड	गाडणो	घोटक	घोडउ	घोडो
अडउ	ईंडो	साटिका	साडिआ	साडी
कुडिआ	कूडी	वाटिका	वाडिआ	वाडी
सुड	सूड	मुकुट	मउड	मोड
मुड	मूडणो	कपाट	कवाड	किवाड़

२३ तद्भव शब्दामे ड अथवा ळ रै आगै ण आवै उणनै सुविधानुसार न अथवा ण लिखणो —

उदा० — घडनो, जडनो, पडनो, बळनो, गळनो, तळनो, जोडना, मीडनो, जोडनी, माळनी, माळन ।

२४ प्रत्यय मूळ शब्दारै साथै मिलायनै लिखणा, न्यारा नही लिखणा — उदा० — उदारता, टाबरपणो, गाडीआळो, बागवान ।

२५ परसर्ग अथवा विभक्ति प्रत्यय मूळ शब्दारै साथै मिलायनै लिखणा —

उदा० — रामनै, पोथीमे, घरसू, मिनखरो ।

२६ संयुक्त-क्रियारा दोनू अशानै न्यारा-न्यारा लिखणा —

उदा० — ले जावणो, जाया करणो, कर देणो, आयो चावै, देख लेसी, कर नाखैला, जीमता जासी, लिया फिरतो हो, आवै है, करतो हो, पढती हुवैला, देखतो हुवै, उठियो हो, जावा हा ।

२७ समासरा शब्दानै मिलायनै लिखणा अथवा बीचमे योजकचिह्न (-) लिखणो —

उदा० — सीताराम, गुणदोष, राजपुत्र, चन्द्रशेखर, आवजाव, सीता-राम, गुण-दोष, हिम-गिरि, आवणो-जावणो, आवै-जावै, अठै-उठै, दरसण-परसण ।

२८ अव्यय शब्द दोय मात्रा देयनै लिखणा —

उदा० — आगै, लारै, पछै, साथै, सागै, वास्तै, नीचै, सटै, खनै, चौडै, जुमलै, पाखै, नेडै, वगै ।

२९ नै, रै, सै आदि परसर्ग दोय मात्रा देयनै लिखणा —
दा० — रामनै, मोहनरै, घरसै ।

३० साधित शब्दामे धातु अथवा मूळ शब्दरा आदि स्वरनैं प्रायःकर ह्रस्व लिखणो—

उदा०—मीठो मिठास, मिठाई
खाटो खटास, खटाई
खारो खरास
खारास
पूजा पुजारी
चीकणो चिकणास
ऊजळो उजळास
तोडनों तोडाई ।

अपवाद—ऊचाई, ऊचाण, नीचाण, मोजीलो, इत्यादि ।

३१ कई-थेक स्वरांत धातुवारा वर्तमान-कृदतमे धातुरो अंतिम स्वर सानुनासिक लिखीजै—

उदा०—आवतो, जावतो, खावतो, सीवतो, जीवतो, सूवतो, पावतो (=पियावतो), छावतो, वावतो, मावतो, भावतो, लावतो, पीवतो, लूवतो, वैंवतो, कैंवतो, रैंवतो, सैंवतो ।

३२ ई और ईजै प्रत्यय जोडता वखत स्वरान्त धातुरै आगै यकाररो आगम करणो—

उदा०—आ+ई=आयी आ+ईजै=आयीजै
जा+ई=गयी जा+ईजै=जायीजै
खा+ई=खायी खा+ईजै=खायीजै
दू +ई=दूयी दू +ईजै=दूयीजै
पो+ई=पोयी पो+ईजै=पोयीजै
वै +ई=वैयी वै +ईजै=वैयीजै

अप०—पी+ई=पी, जी+ई=जी, सी+ई=सी ।

४ लिपि

३३ अ ण मराठीरा लिखणा, हिंदीरा अ ण नही लिखणा ।

३४ ऋ छ ल हिंदीरा लिखणा, मराठीरा नही लिखणा ।

३५ ह श्रुति दरसावणी हुवै तो लोपक-चिह्न (') वापरणो ।
उदा०—ना'र, सा'ब, का'णी ।

३६ तद्‌भव शब्दामे अै-औ रो सस्कृत जिसो उच्चारण हुवै जद अइ-अउ लिखणा ।
उदा०—गइया, कनइयो, भइयो—इणानै गैया, कनैयो, भैयो नही लिखणा ।

३७ अै-औ रो देशी उच्चारण हुवै जद अै-औ लिखणा ।
उदा०—वैन, रैवैला, औरं ।

३८ अै-रो देशी उच्चारण हुवै जद उणनै अ-सू नही दरसावणो—
उदा०—कवै है इणानै कव ह नही लिखणो ।

३९ र्‌+य रै पूर्व आखर पर जोर पडै जद र्य लिखणो और जोर नही पडै जद रय लिखणो—
उदा०—चर्य वर्य वार्य भार्या ।
वरयो वरयो वकारयो भारयो ।

४० अनुस्वारनै वडी मीडीसू और अनुनासिकनै छोटी मीडीसू दरसावणो—
उदा०—हँस (पक्षी) दाँत (दमन करयोडो) ।
हसणो दात ।

४१ तद्‌भव शब्दामे अनुस्वाररी जाग्या पचम अक्षर नही लिखणो—
उदा०—डंडो, चचळ, चगो, फदो, सको, तग, पखो इणानै डण्डो, चञ्चळ, चङ्गो, फन्दो, सङ्को, तङ्ग, पङ्खो नही लिखणा ।

५ विदेशी शब्द

४२ अरबी, फारसी, अंग्रेजी वगैरा विदेशी भाषावारा शब्द तद्भव रूपमें स्वीकार करणा—

उदा०—कागद, मालक, जमी, भालम, दसक्त, मसीत, मजूर, सीसी, सामल; अगस्त, सितंबर, चक, करट, रपट, रपोट, दरजण, लालटेण, कुनैण, टिगट, लाट, गिलास।

४३ विदेशी भाषावारा शब्द वापरता उण भाषावांरा विशिष्ट उच्चारण दरसावण वासतै चिह्न नहीं वापरणा—

उदा०—			
अगस्त	लिखणो	ऑगस्ट	नही लिखणो
कालेज	लिखणो	कॉलिज	,, ,,
नजर	लिखणो	नज़र	,, ,
दफ्तर	,,	दफ़्तर	,, ,,
मुगल	,,	मुग़ल	,, ,,
खबर	,,	ख़बर	,, ,,
फरक	,,	फ़र्क	,, ,,
मालम	,,	मअ़लूम	,, ,,
इलम	,,	इ़ल्म, अिल्म	,, ,,

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	वर्णारी	वर्णांरा
३	१६,२०	वाकी	वाकी
३	१७	अनुस्वार	अनुस्वार
३	१७	स्वर	स्वर
४	६	नीचे	नीचै
५	४ (उ-रै नीचै मात्रा)	×	
५	१२	चिन्ह	चिह्न
६	४	व और व	ब, व और व
११	१५	अथवा	अथवा
१७ नीचैंसू	७	वु वू	ऊ ऊ
२५ ,,	३	तू	तू
२७ ,,	१	अढाई	पढाई
३२ ,,	८	वद	बळद
३३	६	देस	नैंण
३५ नीचैंसू	४	वाकी	बाकी
४१ ,,	८	आ	आ, सेवा
४२	६	पायी जै	पायीजै
४५	१६	वो	बो
४८ नीचैंसू	४	करण,	कर्ता, करण
५२	१४	बैन्ने	बैन्नै
६३ नीचैंसू	७	(३)	(२)
६६ ,,	८	कर्तृ वाक्य	कर्तृ वाच्य
७२ ,,	१०	हुयो हो	पूरो हुयो हो
७३	२	बताव	बतावै

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७६ नीचैंसू	१०	वताया	वताया
७६	,, ७	१६	१०
७७	,, ५-६	नियम (२३०)	निकाळ दिरीजैं
७६	७	व-रो	व-रो
८०	११	सूवतो सूतो	निकाळ दिरीजैं
८६	७	जोडिचा	जोडिया
८६	१८	भावाच्यरा	भाववाच्यरा
६०	मामान्यभविष्य (२) रा रूप	करीजैंला करीजैंला करीजूला	करीजैंला करीजोला करीजाला
६०	सा० वर्तमानरा रूप	करीजैं है करीजैं है करीजू हू	करीजैं है करीजो हो करीजा हा
६३	१३	नात	वात
६४	३	अध्याहत	अध्याहृत
६५ नीचैंसू	२	भावनैं	किणी भावनैं
६६	,, ५	समूंची	समूची
६८	,, ४	त्यो	त्यों
१०३	१०	वयू, कैं	क्यूंकैं
११०	८	जमणो जामणो	निकाळ दिरीजैं
११७	७	ऊ	आऊ
१२४	१५	घाट=कम	घाट (=कम)
१२४	१८	अक तारक	निकाळ दिरीजैं
१२४ नीचैंसू	४	इयो	अणियो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२५	१५	दियो	निकाळ दिरोजे
१२५	२०	देख-अरा	देख-अर
१२५	२३	इया	इया, या
१२७	७	पूर्वकालिक	पूर्वकाळिक
१२७ नीचेंसू	४	जो डदेवै	जोड देवै
१३० ,,	६	— ही	ही
१३३	१	आणी	आणी, अवाणी
	२	आणो	आणो, अवाणो
१३६	२	माणीगर	निकाळ दिरोजे
१३८	८	म्हाळ्-ळो	म्हाळ्-ळो
१४३ नीचेंसू	८	जिणरी	जिणरो
१४७ ,,	४	सेरा दो	सेरारो
१४८	५	वडा-वडा	वडा-वडा
१४६ नीचेंसू	१	वात-चीत	वात-चीत
१५० ,,	१	बीडो	बोडो
१५७ ,,	३	पूरकरो	विधेयरो
१५८ ,,	८	करँ	करैं

विशेष—इण अशुद्धियारैं अलावैं कई-ऐक जागा—

(१) मात्रावां, अनुस्वार और रेफ वगैरा टूट ग्या है, अथवा

(२) विराम-चिह्न छूट ग्या है, अथवा

(३) व आखर रैं नीचैंरी मींढी छपणसू रैंय गी है, अथवा

(४) विभक्ति-प्रत्यय मूळ शब्दासू अलायदा छप ग्या है।